कानपुर में बढ़ सकता 400 करोड़ का निर्यात कारोबार - 12

शाह ने सहकारिता आंदोलन को मजबूत करने के लिए नई राष्ट्रीय नीति पेश की - 9

अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए नए ऊष्मा स्रोत ईंधन का परीक्षण- 13

ऋषभ पंत के पैर के अंगूठे में फ्रैक्चर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे- 14

आज का मौसम

36.0⁰ अधिकतम तापमान

27.2⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 05.27

सूर्यास्त 06.59

अमृत विचार

लखनऊ

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 11:23 तक उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

शुक्रवार, 25 जुलाई 2025, वर्ष 35, अंक 179, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

कोतवाल को हटाने के लिए धरने पर बैठीं राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला

कानपुर देहात : प्रदेश सरकार में महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला गुरुवार को अकबरपुर थाने में अपने समर्थकों के साथ दरी बिछाकर धरने पर बैठ गईं। राज्यमंत्री ने ऐलान कर दिया समर्थकों पर दर्ज मुकदमे वापस होने और अकबरपुर कोतवाल सतीश कुमार को हटाने के बाद ही धरना खत्म होगा। राज्यमंत्री ने आरोप लगाया कि अकबरपुर थाने की पुलिस मनमानी पर उतारू है। मामला बढ़ता देख एसपी अरविंद मिश्रा कोतवाली पहुंच गए। उन्होंने वार्ता के लिए राज्यमंत्री को कमरे में आमंत्रित किया लेकिन वह उन्होंने कहा कि वार्ता खुले में ही होगी।

संबंधित खबर पेज-8

95 लाख के ईनामी 26 नक्सलियों का सरेंडर

कांकेर। छत्तीसगढ़ के तीन जिलों कांकेर, नारायणपुर और सुकमा में गुरुवार को सुरक्षा बलों तथा पुलिस को तब बड़ी सफलता हाथ लगी जब 95 लाख के ईनामी कंपनी कमांडर सहित 26 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। समर्पण करने वालों में नौ महिला नक्सली भी शामिल हैं। आत्मसमर्पण करने में उत्तर बस्तर में सक्रिय 62 लाख के ईनामी 13 नक्सली शामिल हैं जिसमें पांच महिला भी हैं। सरेंडर करने वाले नक्सलियों में कंपनी कमांडर मंगलू उर्फ रूपेश कोमरा और उत्तर बस्तर डिविजन का कमांडर इन चीफ मैनू नेगी भी है। मंगलू पर 10 लाख जबकि मैनू पर आठ लाख का ईनाम घोषित है। सरेंडर करने वालों में 10 लाख का एक, आठ-आठ लाख के चार, 5-5 लाख के तीन और एक-एक लाख के पांच नक्सली हैं।

तीन छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर का विकास

नई दिल्ली। भारत तीन प्रकार के छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) विकसित कर रहा है, जिनमें से एक रिएक्टर विशेष रूप से हाइड्रोजन उत्पादन के लिए होगा। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने गुरुवार को राज्यसभा को एक लिखित उत्तर में बताया कि ये रिएक्टर मुख्यत: ऊर्जा-गहन उद्योगों के लिए कैप्टिव प्लांट्स के रूप में इस्तेमाल किए जाएंगे। सिंह ने बताया कि स्वदेशी रूप से विकसित किए जा रहे तीन रिएक्टरों में 200 मेगावाट विद्युत क्षमता वाला भारत स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर, 55 मेगावाट क्षमता वाला एसएमआर, और पांच मेगावाट थर्मल गैस कूल्ड रिएक्टर शामिल हैं।

अंदर देखें ... यूरेका

ब्रिटेन से मुक्त व्यापार समझौता

प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटिश पीएम स्टार्मर की मौजूदगी में हुए हस्ताक्षर

ऐतिहासिक समझौते से दोनों देशों में बढ़ेगा 34 अरब डॉलर का व्यापार

- समझौते से 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात को शुल्क से राहत
- ब्रिटेन से कारों और अन्य उत्पादों का निर्यात भी आसान होगा

लंदन, एजेंसी

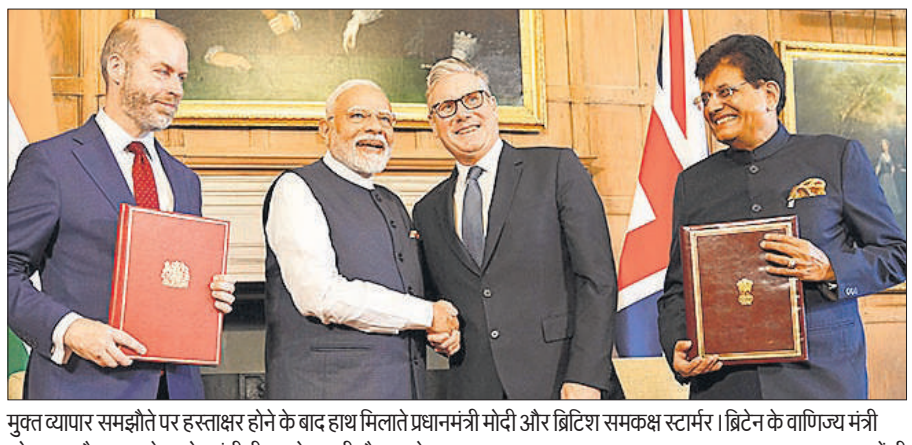

मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद हाथ मिलाते प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटिश समकक्ष स्टार्मर। ब्रिटेन के वाणिज्य मंत्री जोनाथन और भारत के उद्योग मंत्री पीयूष गोयल भी मौजूद रहे। ● एजेंसी

भारत और ब्रिटेन ने गुरुवार को एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर किए जिससे सालाना द्विपक्षीय व्यापार में करीब 34 अरब डॉलर का इजाफा होने की उम्मीद है। इस समझौते से 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर शुल्क समाप्त होने के साथ ब्रिटिश व्हिस्की, कारों एवं कई अन्य वस्तुओं पर लगने वाले शुल्क में भी कटौती होगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और ब्रिटिश प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर की उपस्थिति में इस समझौते पर भारत के वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और उनके ब्रिटिश समकक्ष जोनाथन रेनॉल्ड ने हस्ताक्षर किए। भारतीय अधिकारियों ने कहा कि इस एफटीए के लागू होने से 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात को शुल्क से राहत मिलने की उम्मीद है। यह ब्रिटिश कंपनियों के लिए व्हिस्की, कारों और अन्य उत्पादों का भारत में निर्यात भी आसान करेगा। इस तरह दोनों देशों के बीच कुल व्यापार में बढ़ोतरी होगी। दोनों देशों के बीच तीन साल की बातचीत के बाद इस व्यापार समझौते को अंतिम रूप दिया गया है। इससे भारतीय वस्तुओं को सभी क्षेत्रों में व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित होने की उम्मीद है। अधिकारियों ने बताया कि भारत को लगभग 99 प्रतिशत उत्पाद श्रेणियों के पूरी तरह शुल्क-मुक्त होने से फायदा होगा। यह छूट लगभग 100 % व्यापार मूल्य को समाहित करती है। ब्रिटेन ने कहा कि समझौते के बाद भारतीय उपभोक्ताओं को सॉफ्ट ड्रिंक, सौंदर्य प्रसाधन, कार एवं चिकित्सा उपकरण जैसे ब्रिटिश उत्पादों तक आसान पहुंच मिलेगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- भारत-ब्रिटेन संबंधों के लिए ऐतिहासिक दिन

समझौते के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज भारत-ब्रिटेन संबंधों में ऐतिहासिक दिन है। उन्होंने कहा कि कई वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद भारत और ब्रिटेन के बीच एक व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। इससे पहले, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर ने गुरुवार वार को प्रधानमंत्री मोदी की अपने आधिकारिक आवास चेकर्स में मेजबानी की।

आतंकवाद पर दोहरे मापदंड बर्दाश्त नहीं

लंदन/नई दिल्ली। भारत और ब्रिटेन कहा है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मापदंडों की कोई जगह नहीं है और उग्रवादी विचारधारा वाली शक्तियों को लोकतांत्रिक आजादी का दुरूपयोग नहीं करने दिया जाएगा। ब्रिटेन की आधिकारिक यात्रा पर आए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को लंदन में अपने समकक्ष कीर स्टार्मर के साथ द्विपक्षीय वार्ता के बाद प्रेस वक्तव्य में कहा कि लोकतांत्रिक आजादी का दुरूपयोग कर लोकतंत्र को ही कमजोर करने वालों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। मोदी ने पहलगाम आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए ब्रिटेन के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मापदंडों का कोई स्थान नहीं है। हम इस बात पर भी सहमत हैं कि उग्रवादी विचारधारा वाली शक्तियों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करने दिया जा सकता।

रूस में विमान क्रैश 48 लोगों की मौत

मॉस्को, एजेंसी

- ब्लागोवेशचेंस्क से तिंडा जाते समय चीन सीमा पर हुआ क्रैश
- लैंडिंग करने के प्रयास में पहाड़ी से टकराया, लगी भीषण आग

रूस के सुदूर पूर्वी क्षेत्र में हुई विमान दुर्घटना में 48 लोगों की मौत हो गई है। अमूर क्षेत्र के प्रमुख ने गुरुवार को यह जानकारी दी। बताया कि एएन-24 यात्री विमान रूस-चीन सीमा पर स्थित ब्लागोवेशचेंस्क शहर से तिंडा शहर की ओर उड़ान भरते समय रडार से गायब हो गया था। बाद में बचावकर्मियों को घने जंगलों से घिरी एक पहाड़ी पर विमान का जलता हुआ मलबा मिला। क्षेत्र के गवर्नर वैसिली ओर्लोव ने कहा कि विमान में सवार सभी यात्री और चालक दल के सदस्य दुर्घटना में मारे गए। उन्होंने तीन दिन के शोक की भी घोषणा की।

मीडिया में आईं खबरों में बताया गया कि एंटोनोव एएन-24 टर्बोप्रॉप विमान पूर्वी साइबेरिया के तिंडा हवाई अड्डे पर उतरने का दूसरा प्रयास करते समय एक पहाड़ी से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। चीनी सीमा के निकट अमूर क्षेत्र के गवर्नर ने टेलीग्राम चैनल पर बताया कि विमान में 43 यात्री और चालक दल के छह सदस्य सवार थे। गवर्नर ने कहा कि तिंडा हवाई अड्डे के निदेशक के अनुसार टक्कर के बाद, विमान में आग लग गई और उस क्षेत्र के ऊपर उड़ान भर रहे एमआई-8 हेलीकॉप्टर के चालक दल ने किसी के भी जीवित बचे होने की सूचना नहीं दी। क्षेत्रीय अंगारा एयरलाइंस का 50 साल पुराना विमान खाबरोवस्क-तिंडा-ब्लागोवेशेंस्क मार्ग पर उड़ान भर रहा था। रेडियो बीएफएम ने कुछ विशेषज्ञों के हवाले से बताया कि खराब मौसम के दौरान मानवीय चूक दुर्घटना का संभावित कारण है। दूसरी ओर इंजन की समस्या को भी दुर्घटना के लिए जिम्मेदार बताया जा रहा है।

क्रैश हुए रूसी विमान का मलबा।

संसद में लगातार चौथे दिन भी कायम रहा गतिरोध

संसद परिसर में एसआईआर के विरोध में प्रदर्शन करते विपक्षी दलों के सांसद।

नई दिल्ली, एजेंसी

- नहीं हो सका कामकाज, रास में छह सदस्यों को दी गई विदाई
- एसआईआर के विरोध में विपक्ष के सदस्यों ने किया हंगामा

संसद में गुरुवार को लगातार चौथे दिन बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर गतिरोध कायम रहा जबकि राज्यसभा में सेवानिवृत्त होने जा रहे छह सदस्यों को विदाई दी गई। हंगामे के कारण लोकसभा और राज्यसभा एक-एक बार के स्थगन के बाद पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। दोनों सदनों में एसआईआर के विरोध में विपक्ष के कई सदस्य आसन के समक्ष आकर नारेबाजी करते रहे।

लोकसभा में कार्यवाही आरंभ होते ही विपक्षी दलों ने आसन के निकट पहुंचकर नारेबाजी की और तख्तियां लहराईं, जिन पर एसआईआर विरोधी नारे लिखे हुए थे। उन्होंने बिहार में एसआईआर की कवायद पर तत्काल चर्चा की मांग करते हुए हंगामा किया। हालांकि, सदन में शोर-शराबे के बीच ही पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी ने प्रश्नकाल के दौरान कुछ पूरक प्रश्नों के उत्तर दिए। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने आसन के समीप शोर-शराबा कर रहे विपक्षी सदस्यों से प्रश्नकाल में भाग लेने की अपील की।

एक बार के स्थगन के बाद दोपहर दो बजे जब निचले सदन की बैठक फिर शुरू हुई तो विधि और न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने विपक्षी सदस्यों से गोवा राज्य विधानसभा के निर्वाचन क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों के प्रतिनिधित्व का समायोजन विधेयक, 2024 पर चर्चा में भाग लेने की अपील की।

न्यायाधीशों की नियुक्ति में देरी पर सुप्रीम कोर्ट करेगा विचार

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायाधीशों की नियुक्ति में देरी पर सवाल उठाने वाली याचिकाओं पर विचार करने के लिए गुरुवार को सहमति व्यक्त की। कोर्ट ने कहा कि वह इस मामले पर दो सप्ताह बाद सुनवाई होगी। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा कि हम प्रशासनिक पक्ष पर भी विचार कर रहे हैं और कई नामों को मंजूरी दे दी गई है। याचिकाओं में कहा गया है कि कॉलेजियम की ओर से न्यायाधीशों के नामों की बार-बार सिफारिश के बाद भी उनकी नियुक्ति के करने में केंद्र की ओर से काफी देरी की जा रही है।

पांच लोगों के हत्यारे को मौत की सजा

कार्यालय संवाददाता, चित्रकूट

- प्रेमी की पत्नी को उम्रकैद, कोर्ट ने दोनों पर 2,20,000 रुपये जुर्माना भी लगाया
- प्रेमिका बच्चों के साथ रहने का दबाव डाल रही थी तो सबको मार डाला

अमृत विचार : प्रेमिका और उसके चार मासूम बच्चों की हत्या करने के दोषी प्रेमी को अपर सत्र न्यायाधीश अनुराग कुरील ने गुरुवार को फांसी की सजा सुनाई है। कोर्ट ने उसकी पत्नी को भी आजीवन कारावास की सजा दी। दोनों पर 2,20,000 रुपये अर्थदंड भी लगा है।

जिला शासकीय अधिवक्ता श्यामसुंदर मिश्रा ने बताया कि राजापुर थाना क्षेत्र अंतर्गत अमान गांव के बाहर 25 अप्रैल 2017 को महिला सहित 5 बच्चों के शव मिले थे। महिला की पहचान बिहार के पटना जिले की माधवपुर निवासी लालमुनी देवी उर्फ रीना पत्नी सत्यानंद के रूप में हुई थी। शव उसके बच्चों रीता, संगीता, गीता व किशुन के थे। लालमुनी देवी का पति सत्यानंद मानसिक बीमार था और घटना से दो साल पहले घर छोड़कर कहीं चला गया था। इस दौरान लालमुनी देवी चित्रकूट के राजापुर थाना क्षेत्र के अमवा गांव निवासी

अवधेश यादव और मंटू देवी।

अवधेश यादव के संपर्क में आ गई। कुछ समय बाद लालमुनी ने अवधेश पर बच्चों के साथ गांव चलकर रहने का दबाव बनाया और ऐसा न करने पर पुलिस में जाने की बात कही थी। अवधेश ने पत्नी मंटू देवी उर्फ कुसुमकली के साथ उसे रास्ते से हटाने का निर्णय लिया। बचाव और अभियोजन पक्ष की दलीलें सुनने के बाद गुरुवार को अपर सत्र न्यायाधीश अनुराग कुरील ने निर्णय सुनाया।

फतेहपुर में तैनात एसडीएम अर्चना अग्निहोत्री निलंबित

अमृत विचार, लखनऊ: शासन ने सरकारी कामकाज में लापरवाही बरतने के मामले में फतेहपुर में तैनात एसडीएम अर्चना अग्निहोत्री को निलंबित कर दिया है। यह कार्रवाई नियम विरुद्ध तरीके से दाखिल खारिज में गड़बड़ी, स्थलीय निरीक्षण न करने और शासकीय जिम्मेदारियों का ठीक से निर्वहन न करने के चलते की गई है। प्रमुख सचिव कार्मिक एम. देवराज ने उनके खिलाफ विभागीय जांच के भी आदेश दिए हैं। प्रकरण मलवां थाना क्षेत्र के बरमतपुर गांव का है। निलंबन की अवधि में अर्चना राजस्व परिषद लखनऊ कार्यालय से सम्बद्ध रहेंगी।

आरोपियों को बरी करने के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

नई दिल्ली, एजेंसी

मुंबई ट्रेन विस्फोट मामला

सुप्रीम कोर्ट ने 2006 के मुंबई ट्रेन बम विस्फोट मामले में सभी 12 आरोपियों को बरी करने के बंबई उच्च न्यायालय के फैसले पर गुरुवार को रोक लगा दी, लेकिन कहा कि उन्हें फिलहाल जेल लौटने की जरूरत नहीं है।

न्यायालय ने निर्देश दिया कि बंबई उच्च न्यायालय के फैसले को नजीर न माना जाए। न्यायमूर्ति एम एम सुंदरेश और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने मामले के सभी आरोपियों को नोटिस जारी किया और राज्य सरकार की अपील पर उनसे जवाब मांगा। पीठ ने कहा कि हमें सूचित किया गया है कि सभी प्रतिवादियों को रिहा कर दिया गया है और उन्हें वापस जेल भेजने का कोई सवाल ही नहीं उठता।

अनिल अंबानी समूह पर ईडी का छापा

मुंबई, एजेंसी

- 3000 करोड़ रुपये के ऋण घोटाले में एजेंसी ने की कार्रवाई

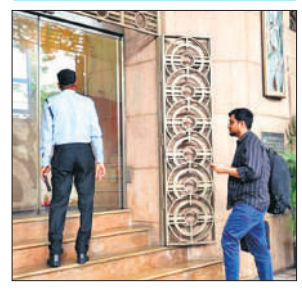

प्रवर्तन निदेशालय ने रिलायंस समूह के अध्यक्ष अनिल अंबानी की कंपनियों के खिलाफ 3,000 करोड़ रुपये के कथित ऋण घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले की जांच के सिलसिले में गुरुवार को कई जगह छापे मारे।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इन कंपनियों द्वारा लिए गए बैंक ऋणों के अलावा कुछ अघोषित विदेशी संपत्तियां भी एजेंसी की जांच के दायरे में हैं। सूत्रों ने बताया कि धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत मुंबई में 35 से अधिक परिसरों में छापेमारी की जा रही है। ये परिसर 50 कंपनियों और करीब 25 लोगों से जुड़े हैं। यह कार्रवाई ईडी की दिल्ली स्थित जांच इकाई द्वारा की जा रही है। ईडी सूत्रों ने बताया कि 2017 से 2019 के बीच यस बैंक से लिए लगभग 3,000 करोड़ रुपये के ऋण के गलत इस्तेमाल के आरोपों में ये छापेमारी की जा रही है। समूह की दो कंपनी 'रिलायंस पावर' और 'रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर' ने शेयर बाजार को दी अलग-अलग सूचना में कहा कि ईडी की कार्रवाई का उनके व्यवसाय संचालन, वित्तीय प्रदर्शन, शेयरधारकों, कर्मचारियों या किसी अन्य हितधारक पर कोई असर नहीं पड़ा है।

सीतापुर में स्कूलों का विलय रुका

विधि संवाददाता, लखनऊ

- हाईकोर्ट ने दिया यथास्थिति बनाए रखने का अंतरिम आदेश

अमृत विचार : हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने राज्य सरकार को बड़ा झटका देते हुए सीतापुर जनपद में स्कूलों के विलय/ पेयरिंग संबंधित कार्यवाही पर यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया है।

कोर्ट ने कहा कि सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से हलफनामे के साथ दाखिल रिकॉर्ड में स्पष्ट तौर पर कुछ विसंगतियां पाई गई हैं। लिहाजा अग्रिम सुनवाई तक सीतापुर जनपद के संबंध में चल रही कार्यवाही पर यथास्थिति बनाए रखी जाए। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 21 अगस्त की तिथि नियत करते हुए अपीलार्थियों को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है।

यह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली व न्यायमूर्ति जसप्रीत सिंह की खंडपीठ ने सीतापुर के स्कूली बच्चों की ओर से उनके अभिभावकों द्वारा दाखिल दो विशेष अपीलों पर एक साथ सुनवाई करते हुए पारित किया। अपीलों में एकल पीठ के सात जुलाई के उस आदेश को चुनौती दी गई है। जिसमें स्कूलों का विलय करने के विरुद्ध दाखिल याचिकाओं को खारिज कर दिया गया था। अपीलों पर तीन दिनों से चल रही सुनवाई के दौरान राज्य की ओर से हलफनामा दाखिल किया गया जिसमें सीतापुर में स्कूलों के विलय/पेयरिंग के संबंध में कुछ डाटा प्रस्तुत किए गए जिन्हें देखने के बाद अपीलार्थियों के अधिवक्ता एलपी मिश्रा व गौरव मेहरोत्रा ने दलील दी कि स्वयं सरकार की ओर से दाखिल उक्त हलफनामे से पता चलता है कि कई ऐसे भी स्कूल हैं, जहां बच्चों की संख्या 100 या अधिक है। फिर भी उक्त स्कूलों का विलय/पेयरिंग किया जा रहा है। कोर्ट ने राज्य सरकार से स्थिति स्पष्ट करने के साथ ही सीतापुर में यथास्थिति रखने का आदेश पारित किया।

अच्छी पहल | योगी सरकार ने कृषि श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी में की बढ़ोत्तरी

अब कृषि श्रमिकों को मिलेगी प्रतिमाह 6552 न्यूनतम मजदूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- नकद, उपज और डिजिटल भुगतान के तीन विकल्प लागू

अमृत विचार : योगी सरकार ने कृषि मजदूरों के हित में अभूतपूर्व कदम उठाते हुए न्यूनतम मजदूरी की दरों में व्यापक संशोधन किया है। अब राज्य के सभी जिलों में कृषि कार्यों से जुड़े वयस्क श्रमिकों को 252 रुपये प्रतिदिन या 6552 रुपये प्रति माह न्यूनतम मजदूरी मिलेगी। पहले 240 रुपये प्रति दिन और 6240 रुपये प्रतिमाह मिलती थी।

इस निर्णय से लाखों खेतिहर मजदूरों, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन जैसे कृषि आधारित उद्योगों से जुड़े लोगों को वित्तीय सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन का आधार मिलेगा। श्रम एवं सेवायोजन विभाग के प्रमुख सचिव ने कहा कि यह दरें राज्य में हर प्रकार की खेती पर लागू होगी।

सरकार ने ई-श्रम पोर्टल के माध्यम से असंगठित क्षेत्र के करोड़ों मजदूरों का पंजीकरण कर उन्हें सरकारी योजनाओं से जोड़ा था। न्यूनतम मजदूरी की यह नई अधिसूचना उसी श्रंखला में एक और मजबूत कड़ी है। यह फैसला न केवल श्रमिक कल्याण, बल्कि कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की स्थायित्व और उत्पादन क्षमता को बढ़ावा देगा। साथ ही डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देकर आधुनिक और पारदर्शी प्रणाली की नींव भी रखेगा। श्रम एवं सेवायोजन विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. एमके शनमुगा सुन्दरम् ने बताया कि यह दरें राज्य के हर प्रकार की खेती पर लागू होंगी, चाहे वह परंपरागत कृषि हो, मशरूम उत्पादन हो या मंडी तक फसल पहुंचाने का श्रम। मजदूरी का भुगतान अब नकद, आंशिक नकद, कृषि उपज या डिजिटल माध्यमों से किया जा सकता है, लेकिन किसी भी स्थिति में मजदूरी की कुल राशि विहित दर से कम नहीं होनी चाहिए। शासनादेश में कहा गया है कि न्यूनतम मजदूरी की प्रति घंटे दर भी दैनिक मजदूरी का 1/6 भाग से कम नहीं हो सकेगी।

श्रमिक नीति में मूलभूत बदलाव का संकेत

योगी सरकार का यह फैसला सिर्फ मजदूरी तय करने का नहीं, बल्कि यह यूपी की श्रमिक नीति में मूलभूत बदलाव का संकेत है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर रहे लाखों श्रमिकों को सीधा लाभ मिलेगा और कृषि कार्यों में श्रम की गुणवत्ता व निरंतरता सुनिश्चित होगी। यह निर्णय योगी सरकार की सबका साथ, सबका विकास नीति का एक और उदाहरण है, जिसमें खेतिहर मजदूरों को आत्मनिर्भर और सुरक्षित बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं।

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

स्टेट ब्रीफ

बिना फार्मर रजिस्ट्री बीमित नहीं होंगी गैरऋणी फसलें

अमृत विचार, लखनऊ : अब बिना फार्मर रजिस्ट्री के गैरऋणी किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ नहीं मिलेगा। किसानों को फसलों का स्वयं से बीमा कराने के लिए पहले फार्मर रजिस्ट्री कराना होगा। तभी फसलें बीमित की जाएंगी। केंद्र ने गैरऋणी किसानों के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की गाइडलाइन में बदलाव किया है। सरकार ने पारदर्शिता के लिए यह व्यवस्था की है। इससे फर्जीवाड़ा या फिर दोहरा लाभ नहीं उठा पाएंगे। खरीफ फसलों का बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है। सरकार ने केसीसी धारकों की प्रक्रिया में बदलाव नहीं किया है। जिला कृषि अधिकारी तेग बहादुर सिंह ने यह जानकारी दी।

125 नई एंबुलेंस के लिए बजट जारी

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश में गंभीर मरीजों के लिए संचालित हो रही नि:शुल्क एएलएस (एडवांस लाइफ सपोर्ट) एंबुलेंस सेवा के काफिले में 125 और नयी एंबुलेंस शामिल होंगी। जिसके बाद एएलएस एंबुलेंस की संख्या 500 हो जाएगी। इन नयी एंबुलेंस में चिकित्सकीय उपकरण एवं अन्य संसाधन जुटाने के लिए राज्य सरकार ने सात करोड़ 48 लाख का बजट स्वीकृत किया है।

आरटीई के तहत 1,38,331 बच्चों का निजी स्कूलों में प्रवेश

अमृत विचार, लखनऊ : राज्य में नि:शुल्क शिक्षा के अधिकार (आरटीई) के तहत निजी स्कूलों में अब तक 1,38,331 बच्चों को ही दाखिला मिल चुका है, जो कुल सीटों का लगभग 75 प्रतिशत है, अभी भी 47 हजार से अधिक सीटें खाली हैं। रिक्त सीटों पर अधिक से अधिक प्रवेश के निर्देश दिए गए हैं। वर्ष 2025-26 के लिए आरटीई के अंतर्गत प्रदेश में 1,85,675 सीटों का आवंटन हुआ था। यह जानकारी गुरुवार को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलों की समीक्षा बैठक में मिली। उप शिक्षा निदेशक मुकेश सिंह ने बताया कि आरटीई में सबसे बेहतर प्रदर्शन श्रावस्ती जिले का रहा है, जहां 99 प्रतिशत सीटों पर बच्चों को दाखिला मिल चुका है। हालांकि राजधानी लखनऊ में भी स्थिति बेहतर नहीं है।

चार देशों में पांच कंपनियां खोलीं, मिले 11 बैंक खाते

गाजियाबाद के कविनगर में एक मकान में फर्जी दूतावास संचालन का मामला, दस्तावेजों की जांच में कई राज आए सामने

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- हर्षवर्धन जैन के यूके में दो, यूएई मॉरिशस व कैमरून में है एक-एक कंपनी
- चंद्रास्वामी ने लंदन में कराई थी आर्म्स डीलर अदनान खशोगी और एहसान अली से मुलाकात

गाजियाबाद में इसी मकान से आरोपी हर्षवर्धन चलाता था फर्जी दूतावास। ● अमृत विचार

अमृत विचार : गाजियाबाद के कविनगर में घर के अंदर फर्जी दूतावास चलाने के आरोपी हर्षवर्धन जैन को मंगलवार देर रात को एसटीएफ ने गिरफ्तार किया था। आरोपी के पास से मिले दस्तावेजों की जांच की गई तो कई राज सामने आए। हर्षवर्धन चचिंत चंद्रास्वामी का काफी करीबी था। चंद्रास्वामी ने हर्षवर्धन की सउदी निवासी आर्म्स डीलर अदनान खशोगी और एहसान अली सैयद से लंदन में मुलाकात कराई थी। हर्षवर्धन के नाम से यूके में दो, यूएई, मॉरिशस और कैमरून में है एक-एक कंपनी हैं। जांच में दुबई (यूएई) में 6, मारिशस में 1, यूके में 3 तथा भारत में 1 बैंक खाते की जानकारी मिली है। एसटीएफ बैंकों में हुए लेन-देन के बारे में जानकारी हासिल करने में जुटी है।

एसटीएफ के अधिकारी के मुताबिक जांच में सामने आया कि हर्षवर्धन जैन ने एहसान अली सैयद के साथ मिलकर विदेशों में कई कंपनियों का रजिस्ट्रेशन कराया है। इसमें यूके में स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन लि., ईस्ट इंडिया कंपनी यूके लि., यूएई में आईसलैंड जनरल ट्रेडिंग कोआपरेशन लि., मारिशस में इंदिरा ओवरसीज लि.अफ्रीका के कैमरून में कैमरून इस्पात एसएआरएल शामिल हैं। जांच में सामने आया कि एहसान अली सैयद हैदराबाद का रहने वाला है। उसने तर्किश की नागरिकता ले ली है। चंद्रास्वामी ने हर्षवर्धन को इसी के पास लंदन में भेजा था। हर्षवर्धन के साथ मिलकर कई शेल कंपनी बनाई। इसी तरीके से बड़ी कमाई की थी।

अहसान और हर्षवर्धन ने दलाली से बनाए थे 3 अरब रुपये

जांच में सामने आया कि अहसान की स्विट्जरलैंड और बहरीन वेस्ड कंपनी वेस्टर्न एडवाइजरी ग्रुप थी। अहसान और हर्षवर्धन ने स्विस बेस्ड कई कंपनियों को वर्ष 2008 से 2011 के बीच में करीब 70 मिलियन पाउंड (भारतीय मुद्रा में आठ अरब, 19 करोड़, 37 लाख 31 हजार रुपये) लोन दिलाया था। इसके बदले में उसने 25 मिलियन पाउंड (2 अरब 92 करोड़ 64 लाख 60 हजार रुपये) दलाली ली थी। इसके बाद वहां से भाग गया। 22 नवंबर 2022 को स्विस सरकार की सिफारिश पर लंदन पुलिस ने हर्षवर्धन को गिरफ्तार किया था। जुलाई 2023 में वेस्ट मिनिस्टर कोर्ट लंदन ने जालसाजी करने के मामले में स्विट्जरलैंड को प्रत्यर्पण की मंजूरी दे दी है। जांच में सामने आया कि ज्यूरिख कोर्ट ने 16 कंपनियों को लोन दिलाने के नाम पर दलाली के रुपये लेकर ठगी करने और भाग जाने के मामले में अहसान को साढ़े छह साल की सजा सुनाई है। एहसान अली के साथ हर्षवर्धन की भी भूमिका की जांच की जा रही है। एसटीएफ को हर्षवर्धन के दो पैन कार्ड की भी जानकारी मिली है। जिनके आधार पर उसने कई बैंकों में खाते खोले हैं। उसके भारत समेत चार देशों में खोले गये बैंक खातों में हुए लेनदेन की डिटेल जुटाई जा रही है।

वेस्ट आर्कटिका, सबोरगा, पॉल्विया और लोडोनिया से जुड़े तार

एसटीएफ नोएडा के इंस्पेक्टर सचिन कुमार के मुताबिक गिरफ्तार किया गया हर्षवर्धन जैन खुद को कई देशों का काउंसिल एंबेस्डर बताता है। इसके तार खुद को देश घोषित करने वाले वेस्ट आर्कटिका, सबोरगा, पॉल्विया और लोडोनिया से जुड़े हैं। वह चार लग्जरी गाड़ियों पर राजनयिक नंबर प्लेट लगाकर चलता था। कविनगर में संचालित दूतावास का कोई पंजीकरण नहीं मिला। विदेशी कंपनियों में नौकरी दिलाने के नाम पर लोगों से ठगी करने की भी शिकायतें की हैं।

लंदन से किया एमबीए, सैटेलाइट फोन का करता था प्रयोग

एसटीएफ टीम के मुताबिक, हर्षवर्धन जैन ने गाजियाबाद से बीबीए और लंदन से एमबीए किया। इसके पिता जेडी जैन प्रतिष्ठित उद्योगपति रहे हैं। गाजियाबाद में इनकी जैन रोलिंग मिल और राजस्थान के बांसवाड़ा और काकरोली में इंदिरा मार्बल्स व जेडी मार्बल्स नाम से खदानें थीं। जहां आरोपी हर्षवर्धन ने भी काम किया था। खदानों से मार्बल लंदन भी भेजा जाता था। हर्षवर्धन लंदन में मार्बल एक्सपोर्ट का काम देखता था। एसटीएफ के मुताबिक, वर्ष 2011 में हर्षवर्धन साउथ अफ्रीका में कारोबार करता था। इस दौरान अवैध तरीके से वह साउथ अफ्रीका से गाजियाबाद में सेटेलाइट फोन ले आया। कुछ दिन उसने सेटेलाइट फोन को ऑन किया तो केंद्रीय एजेंसी ने लोकेशन ट्रेस कर ली। एसटीएफ हर्षवर्धन को गिरफ्तार कर पूछताछ के लिए दिल्ली ले गई। जांच में देशविरोधी गतिविधियां न मिलने पर उसे छोड़ दिया गया।

मुख्य सचिव को सेवा विस्तार का मामला केंद्र के पाले में

अमृत विचार, लखनऊ : मात्र छह दिन का समय बचा है, राज्य की नौकरशाही की सर्वोच्च कुर्सी पर कौन बैठेगा? इस सवाल की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। राज्य सरकार की निगाह केंद्र के निर्णय पर है। सरकार को उस चिठ्ठी (मेल) का इंतजार है, जिसमें वर्तमान मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह को सेवा विस्तार दिए जाने का संदेश हो। दरअसल, मौजूदा मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह 31 जुलाई को रिटायर हो जाएंगे। अगर केंद्र से एक्सटेंशन की मंजूरी नहीं मिली तो तीन सीनियर अफसर इस दावेदारी में हैं। इनमें पहला नाम 1989 बैच के आईएएस अधिकारी एसपी गोयल हैं। एसपी गोयल मौजूदा समय में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव हैं। अनुभवी हैं और क्षमतावान भी। 1989 बैच के ही देवेश चतुर्वेदी भी इसी प्रोफाइल के हैं। वहीं तीसरे नंबर पर हैं 1990 बैच के दीपक कुमार जो वर्तमान में एपीसी, वित्त, माध्यमिक और बेसिक शिक्षा जैसे अहम विभागों की बागडोर संभाले हुए हैं।

आपदा राहत निधि से बना सकते हैं बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सड़क

- मुख्यमंत्री का अहम फैसला जनप्रतिनिधियों के प्रस्तावों पर तेजी से सड़क बनाने के निर्देश
- योगी ने नगरीय क्षेत्र की सड़कों का विकास सीएम ग्रिड से करने के दिए निर्देश

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को एक अहम फैसला लेते हुए निर्देश दिए कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में आपदा राहत निधि से भी सड़क बना सकते हैं। इसी के साथ उन्होंने नगरीय क्षेत्र की सड़कों का विकास सीएम ग्रिड से करने के निर्देश दिए।

गोरखपुर के एनेक्सी भवन सभागार में बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने सबसे पहले गोरखपुर-बस्ती मंडल के सभी विधानसभा क्षेत्रों में आगामी सड़क निर्माण परियोजनाओं और प्रस्तावों का डिजिटल प्रेजेंटेशन देखा। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से विधानसभावार उनके क्षेत्र की सड़क आवश्यकताओं को लेकर चर्चा की। कुछ जनप्रतिनिधियों ने बाढ़ के समय कुछ सड़कों के क्षतिग्रस्त होने का मुद्दा उठाया। इस पर योगी ने लोक निर्माण विभाग के अफसरों से कहा कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सड़कों के सुदृढ़ीकरण के लिए विशेष कार्ययोजना तैयार की जाए। उन्होंने इसके लिए जरूरत पड़ने पर आपदा राहत निधि का भी इस्तेमाल करने के निर्देश दिए।

धर्मस्थलों को रोड कनेक्टिविटी से जोड़ें

मुख्यमंत्री ने कहा कि जितने भी मंदिरों, धार्मिक स्थलों का पर्यटन विकास हुआ है और हो रहा है, उन्हें प्रमुख मार्गों से जोड़ने के लिए लोक निर्माण विभाग तत्परता से कार्य करें। इसके लिए कोई जनप्रतिनिधि प्रस्ताव दे तो उसका एस्टीमेट शीघ्रता से बनाकर कार्य शुरू कराया जाए।

विकास के ब्रांड एंबेसडर हैं जनप्रतिनिधि

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्र में होने वाले विकास के ब्रांड एंबेसडर हैं। इनकी जिम्मेदारी है कि वे जनता के बीच रहकर विकास कार्यों की चर्चा करें, विकास को लेकर उनकी और आकांक्षाओं को जाने तथा उसके अनुरूप प्रस्ताव शासन को उपलब्ध कराएं। जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्र में संचालित विकास परियोजनाओं का निरीक्षण करते रहें।

दंगा और गुंडामुक्त यूपी बना उत्सव प्रदेश : योगी

गोरखपुर के पीएसी परिसर में 11 मंजिला बैरक टॉवर और हॉस्पिटल का किया लोकार्पण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

गोरखपुर के 26वीं वाहिनी पीएसी परिसर में लगाई गई प्रदर्शनी देखते मुख्यमंत्री योगी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जो उत्तर प्रदेश आठ वर्ष पहले तक दंगा प्रदेश के रूप में बदनाम था, गुंडों-माफिया से तबाह था, वही आज कानून व्यवस्था का मानक पेश कर रहा है। दंगामुक्त और गुंडामुक्त उत्तर प्रदेश आज अनुशासित और उत्सव प्रदेश की पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है।

योगी गुरुवार को 26वीं वाहिनी पीएसी परिसर में 11 मंजिला बैरक टॉवर और 30 बेड के हॉस्पिटल के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज कोई भी बाहरी व्यक्ति कानून व्यवस्था के मामले में यूपी पर हंस नहीं सकता, न ही अंगुली नहीं उठा सकता है। यूपी का नौजवान आज कहीं भी जाता है तो सम्मान पाता है जबकि आठ वर्ष पहले यहां के नौजवान को यूपी के नाम पर एक कमरा तक नहीं मिलता था। मुख्यमंत्री ने कहा कि आठ साल पहले यहां शांति की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी, यह सपना था। तब पुलिस के लाखों पद खाली थे लेकिन नियत सही न होने से तत्कालीन सरकारें पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया पूरी नहीं कर पाती थीं।

मुख्यमंत्री ने लोकनायक की प्रतिमा का किया अनावरण

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को गोरखपुर के असुरन चौराहे के सुंदरीकरण कार्य का लोकार्पण व लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि कांग्रेस के तानाशाही के कारण जब एक बार लगा था कि भारत का लोकतंत्र दम तोड़ देगा, तब लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने उसे पुनर्जीवित करके नया जीवन दिया। योगी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी जयप्रकाश नारायण ने अपना जीवन भारत-भारतीयता और जीवन मूल्यों के लिए आगे बढ़ाया था, जिस पर भारत की मजबूत नींव टिकी हुई है।

इंटीग्रल विवि सबसे महंगा, एमबीबीएस की फीस 22 लाख 60 हजार रुपये

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश में अल्पसंख्यक मेडिकल कॉलेजों में इंटीग्रल विश्वविद्यालय सबसे महंगा है। यहां एमबीबीएस में दाखिले के दौरान शिक्षण शुल्क 18 लाख समेत में कुल 22 लाख 60 रुपये जमा करने पड़ेंगे। इसी प्रकार शासन द्वारा शुल्क निर्धारण कमेटी की संस्तुति के बाद, अल्पसंख्यक कोटे के पांच मेडिकल कॉलेजों ने एमबीबीएस व बीडीएस में निर्धारित प्रवेश शुल्क की प्रति चिकित्सा शिक्षा निदेशक कार्यालय को भेज दी है, जिसे चिकित्सा शिक्षा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर जारी कर सार्वजनिक कर दिया है।

डीजीएमई किंजल सिंह ने गुरुवार को बताया कि एमबीबीएस व बीडीएस में दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। दाखिले के पूर्व ही निजी मेडिकल कॉलेजों को निर्धारित प्रवेश शुल्क की घोषणा करनी होती है। उक्त क्रम में ही राजधानी के एरा मेडिकल कॉलेज में शिक्षण शुल्क 16 लाख 60 हजार, छात्रावास शुल्क डेढ़ लाख, धरोहर राशि एक लाख और अन्य शुल्क 94000 समेत कुल 21 लाख 54 हजार रुपये निर्धारित किया गया है। कैरियर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस में शिक्षण शुल्क 16 लाख 50 हजार समेत कुल 19 लाख 50 हजार रूपए और बीडीएस में दो लाख 25 हजार रुपये लिया जाएगा।

विधानसभा के सत्र में कई विधायी कार्यों को निपटाने की तैयारी

अमृत विचार, लखनऊ : उप्र. विधानसभा के सत्र की तैयारियां तेज हो गई हैं। कई विधायी कार्यों को निपटाने की कार्यसूची लगभग तय है। इन कार्यों को निपटाने के लिए तारीखें व संबधित एजेंडे को कार्यमंत्रणा समिति में रखकर अंतिम फैसला लिया जाएगा। दरअसल, व्यवस्था यह है कि विधान सभा सत्र के लिए नियत तिथि की सूचना सदस्यों को आमतौर पर सात दिन पहले प्रमुख सचिव, विधान सभा स्तर से दी जाएगी। इस सत्र में कई विधायी कार्य निपटाए जाएंगे। वहीं, सत्र के दौरान राज्य सरकार कई अध्यादेशों को भी मंजूरी के लिए सदन में पेश कर सकती है। वहीं दूसरी ओर कैबिनेट ने विधानमंडल में सीएजी की रिपोर्ट पेश करने के लिए राज्यपाल की अनुमति लेने का वित्त विभाग का प्रस्ताव भी स्वीकृत किया है। मानसून सत्र में सीएजी की रिपोर्ट भी सदन के पटल पर रखा जाना संभव है। मौजूदा विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के रहते विधानभवन ही नहीं सदन की कार्यवाहियों में भी बदलावों का दौर है। इस सत्र में भी विधानभवन की व्यवस्था और अंदरूनी साजसज्जा में और आकर्षक परिवर्तन दिखेंगे। इस बार सदस्यों को आर्टिफिशियल इंटीलिजेंस की भी ट्रेनिंग दिए जाने की तैयारी है।

पंचायत चुनाव : मत पत्रों के मुद्रण के लिए निविदा जारी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव तय समय पर होंगे। राज्य निर्वाचन आयोग पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत पंचायत चुनाव की तैयारी में लगा है। केवल विवादित क्षेत्रों में चुनाव टाले जाने की आशंका है। इस बीच, आयोग ने मत पत्रों के मुद्रण के लिए निविदा भी जारी कर दी है।

प्रदेश में पंचायत चुनाव प्रक्रिया टलने की आशंका नगर विकास विभाग की ओर से पंचायतीराज विभाग को लिखे गये पत्र से पैदा हुई, जिसमें नगर विकास विभाग ने पंचायतीराज विभाग से पंचायत चुनाव सम्पन्न होने तक नये नगरीय निकायों के सृजन व सीमा विस्तार पर लगी रोक हटाने का अनुरोध किया है। साथ ही, पंचायतीराज विभाग की ओर से 21 मई को जारी शासनादेश को निरस्त किये जाने का अनुरोध किया है। वर्तमान में 18 जुलाई से पंचायत चुनाव के लिए ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत के वार्डों के पुनर्गठन की प्रक्रिया चल रही है। 10 अगस्त को वार्डों की अंतिम सूची जारी करने की तैयारी है। आयोग के सूत्रों का कहना है कि आयोग निर्धारित समय के अनुसार चुनाव कराने की तैयारी कर रहा है। मतदाता पुनरीक्षण का कार्य चल रहा है। मत पत्रों के मुद्रण की भी तैयारी शुरू कर दी गई है।

भ्रष्टाचार के आरोप में कानपुर के एसीएमओ समेत तीन डॉक्टर निलंबित

- लखनऊ के डफरिन अस्पताल की सीएमएस डॉ.रेनू पंत को दिया गया आरोप पत्र
- उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के निर्देश पर प्रमुख सचिव ने शुरू की कार्रवाई

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

एसीएमओ, कानपुर नगर द्वारा चीफ फार्मासिस्ट एवं वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी के साथ मिलकर वित्तीय अनियमितता किए जाने संबंधी प्रकरण में एसीएमओ को निलंबित करते हुए विभागीय कार्रवाई की संस्तुति की गई है। चीफ फार्मासिस्ट एवं वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी के विरुद्ध भी विभागीय कार्रवाई की जाएगी। -ब्रजेश पाठक, उप मुख्यमंत्री

अमृत विचार : स्वास्थ्य विभाग में लग रहे आरोपों व शिकायतों के बाद राज्य सरकार ने कठोर कार्रवाई की है। भ्रष्टाचार के आरोप में कानपुर नगर के अपर मुख्य चिकित्साधिकारी (एसीएमओ) समेत एटा के दो चिकित्सकों को निलंबित कर दिया गया है। इसके अलावा राजधानी लखनऊ में वीरांगना अवंती बाई महिला अस्पताल की प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक डॉ.रेनू पंत को आरोप पत्र देते हुए, कानपुर नगर के चीफ फार्मासिस्ट व बांदा व हमीरपुर के एक-एक डॉक्टर के खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी गयी है।

उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख सचिव ने डॉक्टर व अन्य के खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रमुख सचिव ने बताया कि कानपुर नगर में एसीएमओ के पद पर रहते हुए डॉ.सुबोध प्रकाश यादव ने अपने पद का दुरुपयोग किया है। नवंबर 2024 में डॉ. सुबोध ने चीफ फार्मासिस्ट अवनीश कुमार शुक्ला, डॉ. वंदन सिंह, वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी के साथ मिलकर सप्लायरों से साठगांठ कर वित्तीय अनियमितता बरती हैं। उन्होंने बताया कि इस संबंध में जांच के दौरान सीबीआई ने नियम विरुद्ध तरीके से 1.60 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान करने का कुचक्र रचने की पुष्टि की। जांच के बाद उप मुख्यमंत्री ने डॉ. सुबोध प्रकाश यादव को निलंबित करने के आदेश दिए।

मेडिकल परीक्षण में पास करने के लिए ली थी घूस किए गए निलंबित

प्रमुख सचिव ने बताया कि मथुरा में उप्र पुलिस आरक्षी भर्ती प्रकिया में गठित मेडिकल पैनल के डॉक्टर सदस्यों पर मेडिकल परीक्षण पास कराने के नाम पर अभ्यर्थियों से धन वसूली करने के आरोप लगे थे। प्रथमदृष्टया जांच में जिला चिकित्सालय में तैनात आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. हरि नारायण प्रभाकर व जिला चिकित्सालय एटा में तैनात डॉ. राहुल वार्ष्णेव को निलम्बित करने के साथ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

उप मुख्यमंत्री से जनता दर्शन में लोगों ने की थीं शिकायतें, जांच में आरोप सही मिले

उपमुख्यमंत्री से जनता दर्शन में लोगों ने वीरागना अवन्ती महिला चिकित्सालय (डफरिन) के खिलाफ शिकायतें की थीं। उप मुख्यमंत्री ने लखनऊ में मण्डलीय अपर निदेशक से अस्पताल का अचानक निरीक्षण कराकर जांच करायी। प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक डॉ. रेनू पंत को आरोप पत्र देकर विभागीय कार्रवाई किये जाने के निर्देश प्रमुख सचिव को दिये गये हैं। इसके अलावा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने बताया कि बदायूं जिला चिकित्सालय में तैनात डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव के खिलाफ विभागीय कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। हमीरपुर जिला चिकित्सालय में नेत्र सर्जन डॉ. अनिल कुमार सिंह को कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति उदासीनता बरतने के आरोपों का स्पष्टीकरण न देने पर विभागीय कार्रवाई संस्तुति की गयी है। इसके अलावा सीतापुर में फर्श पर प्रसूता व नवजात शिशु के लेटे जाने का वायरल वीडियो को लेकर उप मुख्यमंत्री ने जिम्मेदारों पर कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

नई प्रणाली | योजना के क्रियान्वयन से संबंधित किसी राजपत्रित अधिकारी को अधिकृत करने की हुई व्यवस्था

राष्ट्रीय योजनाओं में नौकरशाहों के लिए बदला गया मानक

धीरेंद्र सिंह, लखनऊ

- सभी बिलों की स्वीकृति व प्रतिहस्ताक्षर में आ रही थी व्यावहारिक कठिनाई

अमृत विचार : केंद्रीय योजना में भारत सरकार की ओर विभागीय प्रमुख को बिल प्रस्तुत करने बाद ही धनावंटन की अनिवार्यता संबंधी आदेश को नौकरशाहों ने अपने लिए खास इंतजाम कर लिया है। प्रमुख सचिव व सचिवों को सभी बिलों की स्वीकृति व प्रतिहस्ताक्षर में व्यावहारिक कठिनाई का हवाला देते हुए वित्त विभाग ने 10 जुलाई को जारी शासनादेश में संशोधन करते हुए इस तरह की सभी योजनाओं के क्रियान्वयन से संबंधित किसी राजपत्रित अधिकारी को अधिकृत करने की व्यवस्था दे दी है।

दरअसल भारत सरकार के वित्त मंत्रालय ने सभी राज्यों को निर्देश दिए हैं कि केंद्र प्रायोजित योजनाओं में बजट आवंटन और भुगतान को लेकर एसएनए-एसपीएआरएसएच (स्पर्श) प्रणाली पूरी तरह लागू होगी। इसके लिए संबंधित विभाग अपने स्तर पर सुनिश्चित करेंगे कि लाभार्थी या वेंडर को परियोजनाओं की गाइडलाइन के अनुसार अनुमन्यता व देयता होने पर ही भुगतान किया जा रहा है। नई प्रणाली से योजनाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की गई है। इसे लेकर यहां 30 जून को कार्यशाला में भारत सरकार के अधिकारियों ने बजट आवंटन की इस नई व्यवस्था के बारे में विभागीय अधिकारियों को प्रशिक्षित भी किया। साथ ही, केंद्र की 67 योजनाओं नई व्यवस्था लागू की अनिवार्यता को लेकर 10 जुलाई को वित्त विभाग के सचिव मिनिस्ती एस. ने सरकार की ओर सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव और सचिव समेत विभागाध्यक्ष व प्रमुख कार्यालयाध्यक्षों को इसे लागू करने का शासनादेश जारी किया।

सूत्रों कहना है कि वरिष्ठ नौकरशाहों (प्रमुख सचिव और सचिव) की ओर से इसे लेकर आपत्ति जताई गई। दरअसल, जिन योजनाओं में उनकी भूमिका प्रमुख की है, वहां बिल पर हस्ताक्षर और प्रतिहस्ताक्षर में तमाम व्यावहारिक कठिनाई गिनाई गईं। इसके बाद सरकार को शासनादेश का संशोधन करना पड़ा है।

सचिव मिनिस्ती एस की ओर से जारी नए शासनादेश में कहा गया है कि जिनके एसएनए शासन में तैनात प्रमुख सचिव व सचिव हैं, ऐसे मामलों में बिल प्रस्तुतीकरण हेतु प्रत्येक बिल के लिए एसएनए द्वारा भुगतान स्वीकृति आदेश निर्गत करने और प्रत्येक बिल को प्रतिहस्ताक्षर करने में व्यवहारिक कठिनाइयां स्वाभाविक हैं। इसे संशोधित करते हुए नए आदेश में कहा गया है कि इन बिलों पर प्रतिहस्ताक्षर करने और समेकित धनराशि के भुगतान के स्वीकृति आदेश पर हस्ताक्षर करने हेतु योजना के क्रियान्वयन से संबंधित किसी राजपत्रित अधिकारी को अधिकृत किया जा सकता है। इसके लिए संबंधित प्रमुख सचिव और सचिव को सुस्पष्ट आदेश निर्गत किया जाएगा। जिसका पृष्ठांकन महालेखाकार, उत्तर प्रदेश एवं मुख्य/वरिष्ठ कोषाधिकारी, साईबर ट्रेजरी और भारत सरकार के संबंधित मंत्रालय के प्रोग्राम डिवीजन को किया जाएगा।

19 आईएएस बने ज्वाइंट मजिस्ट्रेट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- अलीगढ़ से साहिल कुमार लखनऊ और लखनऊ से गुंजिता अग्रवाल बाराबंकी भेजे गए

अमृत विचार: शासन ने 19 आईएएस अधिकारियों को ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के पद पर तैनाती दी है। सभी अधिकारी वर्तमान में सहायक कलेक्टर थे, जिन्हें गुरुवार को नई तैनाती दिए जाने का आदेश जारी किया गया। इस क्रम में जौनपुर की सहायक कलेक्टर इशिता किशोर को ज्वाइंट मजिस्ट्रेट बरेली बनाया गया है, जबकि कन्नौज की सहायक कलेक्टर स्मृति मिश्रा को ज्वाइंट कमिश्नर के पद पर बिजनौर भेजा गया है।

सहायक कलेक्टर लखनऊ गुंजिता अग्रवाल को बाराबंकी, सहायक कलेक्टर अयोध्या स्वाति शर्मा को ज्वाइंट मजिस्ट्रेट आगरा, सहायक कलेक्टर गोरखपुर शिशिर कुमार सिंह को अलीगढ़, सहायक कलेक्टर सुल्तानपुर वैशाली को कन्नौज, सहायक कलेक्टर सीतापुर नितिन सिंह को वाराणसी, सहायक कलेक्टर प्रयागराज अनुभव सिंह को कानपुर नगर भेजा गया है।

इसी कड़ी में अलीगढ़ के साहिल कुमार को लखनऊ, बाराबंकी की सहायक कलेक्ट काव्या सी को इटावा, वाराणसी के सहायक कलेक्टर साई आश्रित शाखमुरी को बदायूं, सहायक कलेक्टर मेरठ नारायणी भाटिया को हरदोई, सहायक कलेक्टर फर्रूखाबाद महेन्द्र सिंह को मिर्जापुर मुजफ्फरनगर के सहायक कलेक्टर चलुवराजु आर को लखीमपुर खीरी के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी सौंपी गई है। झांसी के दीपक सिंघनवाल को गाजियाबाद, भेजा गया है।

इसके अतिरिक्त मथुरा के रिंकू सिंह राही को शाहजहांपुर, प्रयागराज की भारती मीणा को प्रयागराज में ही ज्वाइंट मजिस्ट्रेट बनाया गया है। मेरठ में तैनात प्रतीक्षा सिंह को अंबेडकरनगर और मुजफ्फरनगर में तैनात सुश्री धामिनी एम. दास को सीतापुर में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के पद पर तैनाती मिली है।

सिटी ब्रीफ

एक्सप्रेस ट्रेन में पांच अवैध वेंडर पकड़े

अमृत विचार, लखनऊ : न्यू जलपाईगुड़ी नई दिल्ली एक्सप्रेस से पांच अवैध वेंडर को चारबाग रेलवे स्टेशन से पकड़ा गया है। उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के सीनियर डीसीएम कुलदीप तिवारी ने बताया कि वाणिज्य विभाग की कैटरिंग टीम ने आरपीएफ के सहयोग से विशेष जांच अभियान चलाया। इसमें प्लेटफॉर्म नंबर छह-सात पर गाड़ी संख्या 12523 न्यू जलपाईगुड़ी नई दिल्ली एक्सप्रेस में पांच अनाधिकृत वेंडरों को पकड़ा गया, जिनके पास बिक्री से संबंधित कोई प्राधिकारपत्र नहीं था।

आरपीएफ को मिले लावारिस बच्चे

अमृत विचार, लखनऊ : पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल की आरपीएफ टीम ने स्टेशन पर मिले लावारिस मिले बच्चे को चाइल्ड लाइन के सुपुर्द कर दिया। जहां से बच्चे को परिजनों को सौंप दिया जाएगा। मामला सीतापुर रेलवे स्टेशन का है। आरपीएफ पोस्ट सीतापुर को निगरानी के दौरान स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक से दस वर्षीय बच्चा लावारिस हाल में मिला। उसे चाइल्ड लाइन को सौंप दिया गया। आरपीएफ पोस्ट छपरा को गाड़ी संख्या 05298 बलिया पाटलिपुत्र ट्रेन में नौ वर्ष की बच्ची मिली, जिसे उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

चेन्नई एक्सप्रेस में नहीं लगेंगे एलएचबी रैक

अमृत विचार, लखनऊ : रेलवे ने 16093/16094 लखनऊ जंक्शन-पुरट्टिच तलैवर एम. जी. रामचंद्रन चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस में लिंक हाफमैन बुश (एलएचबी) रेक लगाने के आदेश को स्थगित कर दिया है। अब यह ट्रेन पूर्व की तरह इंटीग्रेटेड कोच फैक्ट्री से तैयार पुरानी बोगियों से ही दौड़ेगी। इस ट्रेन में 28 जुलाई से एलएचबी रेक लगाने के आदेश रेलवे ने पूर्व में जारी किए थे।

बिना अनुमति खोद डाली सड़क

अमृत विचार, लखनऊ : नगर निगम जोन 7 के इन्दिरा नगर सेक्टर 11 के अंतर्गत इस्माइलगंज प्रथम व बाबू जगजीवन राम वार्ड में कुछ दिनों पहले बनी सड़क को बिना अनुमति खोद दिया गया है। एक हफ्ते पहले सीवर का कनेक्शन करने के लिए लोगों ने सड़क काट दी। इसे लेकर क्षेत्रीय निवासी एवं प्रदेश अध्यक्ष उप्र स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ शशि कुमार मिश्र ने जोन 7 के अधिशासी अभियंता नगर निगम और जलकल से शिकायत की है। उन्होंने बताया कि सेक्टर 11 में लाजवंती नगर से शंकरपुरी कालोनी मॉडल पब्लिक स्कूल तक बनी सड़क को अवैध तरीके से लोगों ने काट कर एक सप्ताह से चैम्बर व कनेक्शन किया गया है। शशि कुमार मिश्रा ने तत्काल निरीक्षण करके सड़क ठीक कराने व रोड कटिंग, सीवर कनेक्शन चार्ज आदि जमा कराने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा यदि सड़क समय से ठीक नही कराई गई तो पूरी सड़क खराब हो सकती है।

हजरतगंज में बदलाव के डिजाइन हो गए फाइनल

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- हजरतगंज व्यापार मंडल के प्रतिनिधियों के साथ मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने की बैठक

अमृत विचार : शहर के हृदयस्थल हजरतगंज का कायाकल्प करने पर प्रशासन तेजी से काम कर रहा है। गुरुवार को मंडलायुक्त ने हजरतगंज व्यापार मंडल के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की।

इसमें व्यापारियों को रेलिंग, लाइट्स, बेंच, साइनेज बोर्ड आदि के लाइव सैम्पल दिखाए गए। इसके बाद फसाड कंट्रोल गाइड लाइन के तहत भवनों, साइनेज, स्ट्रीट लाइट्स एवं फर्नीचर व बोलार्ड आदि के रंग व डिजाइन फाइनल कर दिए।

बैठक में व्यापारियों ने सीवर व पानी के कनेक्शन की समस्या भी उठाई। जिस पर मंडलायुक्त ने नगर आयुक्त व जलकल के अधिकारियों को परीक्षण करके समाधान कराने के निर्देश दिए।

चरक चौराहे को किया जाएगा री-डिजाइन

चौक स्थित चरक चौराहे को री-डिजाइन करके जाम की समस्या को दूर किया जाएगा। मंडलायुक्त ने इस सम्बंध में नगर निगम व पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों को कंसल्टेंट के साथ ज्वाइंट सर्वे करके रिपोर्ट मांगी है। कहा कि चरक चौराहे पर रोटरी बीच में न होकर किनारे है, जिससे यातायात में अवरोध उत्पन्न होता है। लिहाजा रोटरी को बीच में शिफ्ट करते हुए सड़क चौड़ी करें। इसी तरह नींबू पार्क से चरक चौराहे की ओर आने वाली सड़क चौड़ीकरण की जाए।

लेसा के अधिकारियों को पैनल व अंडरग्राउंड केबल लाइन के संबंध में दिशा-निर्देश दिए गए।

मोतीझील के पास सात करोड़ से बनाया जाएगा मोती पार्क

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : लखनऊ विकास प्राधिकरण ऐशबाग में 11 हेक्टेयर में फैली मोतीझील के पास सात करोड़ की लागत से 'मोती पार्क' बनाएगा। पार्क में कियॉस्क, वॉक-वे, पार्किंग व आगंतुकों के बैठने के लिए स्थान विकसित किए जाएंगे। गुरुवार को अध्यक्ष/मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने पारिजात सभागार में बैठक करके विभिन्न परियोजनाओं को मंजूरी दी है।

एलडीए उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने अवगत कराया कि जमुना झील व मोतीझील से कब्जा हटाकर फेन्सिंग व पिलर लगाने का कार्य कराया जा रहा है। जमुना झील के पास अटल पार्क का निर्माण पूर्ण हो चुका है। अब इसी तर्ज पर मोतीझील के पास मोती पार्क का प्रस्ताव तैयार किया है। इसमें जमुना झील व मोतीझील के पास कंस्ट्रक्टेड वेट लैंड का प्रावधान किया है।

अधिकारियों के साथ बैठक करतीं मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब। अमृत विचार

इससे सीवेज वॉटर को ट्रीट करके झील में साफ पानी छोड़ा जाएगा। मंडलायुक्त ने निर्देश दिये कि ऐशबाग रोड की तरफ से पार्क में जाने के लिए मार्ग तैयार कराया जाए।

कुकरैल नदी के सौंदर्यीकरण की समीक्षा

मंडलायुक्त ने कुकरैल नदी के सौंदर्यीकरण प्रोजेक्ट की भी समीक्षा की। कहा कि भीखमपुर में अतिक्रमण मुक्त भूमि पर एलडीए सौमित्र वन की तरह इकोलॉजिकल डेवलपमेंट का कार्य कराए। वन विभाग सहयोग करे। नगर निगम को शक्ति वन का कार्य शीघ्र शुरू कराने के निर्देश दिए।

नो पार्किंग में खड़े वाहन जब्त करेगा नगर निगम

जुर्माना देकर ही छूटेगा वाहन, अगले महीने लागू होगी व्यवस्था

कार्यालय संवाददाता लखनऊ

- चयनित कंपनी प्रत्येक जोन में एक छोटी, एक बड़ी क्रेन लगाएगी
- नगर निगम व कंपनी में 50-50 प्रतिशत बंटेगी जुर्माने की राशि

शहर में अव्यवस्थित यातायात व्यवस्था में सुधार के लिए नगर निगम अगस्त के पहले हफ्ते से सख्ती शुरू करने जा रहा है। नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों को जब्त कर जुर्माना वसूला जाएगा। जुर्माने की राशि तय कर दी गई है। वाहनों को उठाने यानी जब्त करने के लिए एक कंपनी को ठेका दिया गया है। कंपनी नो पार्किंग में खड़े वाहनों को उठाने के लिए 16 क्रेन लगाएगी।

नगर निगम की अपर नगर आयुक्त नम्रता सिंह ने बताया कि सभी आठ जोन में नो पार्किंग एरिया से वाहन उठाने के लिए टेंडर के माध्यम से आगरा की कंपनी का चयन कर लिया गया है। कंपनी नो पार्किंग में खड़े वाहनों को उठाने के लिए प्रत्येक जोन में एक बड़ी और एक छोटी क्रेन लगाएगी।

जुर्माने की धनराशि नगर निगम और कंपनी के बीच 50-50 प्रतिशत बंटेगी। लोगों को नो पार्किंग में वाहन न खड़ा करने के लिए जागरूक किया जाएगा। गौरतलब है कि लगभग दो वर्ष पहले नगर निगम नो पार्किंग से वाहन टोचन करता था। विवाद के बाद यह जिम्मेदारी पुलिस विभाग को दे दी गई। वाहन उठाने में मनमानी की शिकायतों के बाद पिछले एक वर्ष से नो पार्किंग एरिया से वाहन उठाने का काम बंद था।

नगर निगम की आय बढ़ाने के लिए पार्षदों और महापौर की मांग पर शासन ने यह जिम्मेदारी फिर नगर निगम को सौंप दी है।

सड़क पर खड़े वाहन। अमृत विचार

इस तरह वसूला जाएगा जुर्माना

चार पहिया हैवी वाहन	2,000 रुपये
कार, जीप जैसे वाहन	1500
ई रिक्शा	400
दो पहिया वाहन	300 रुपये

सड़क से हटाए अतिक्रमण

नगर निगम ने गुरुवार को जोन एक के कैसरबाग क्षेत्र में अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया। जोनल अधिकारी ओपी सिंह के नेतृत्व में जयहिंद मार्केट में फुटपाथ और सड़क पर किये गए दुकानदारों के अतिक्रमण हटाए। नो पार्किंग में खड़ी गाड़ियों का चालान कर 1100 रुपये जुर्माना वसूला।

मालदा टाउन के लिए आज रवाना होगी अमृत भारत एक्सप्रेस

अमृत विचार,लखनऊ : गोमतीनगर से मालदा टाउन के लिए अमृत भारत एक्सप्रेस का संचालन शुक्रवार से शुरू हो जाएगा। ट्रेन में 458 सीटें खाली हैं, जिन पर टिकट बुक हो रहे हैं। पहली यात्रा के दौरान 200 तक सीटें खाली रहने की आशंका अधिकारी जता रहे हैं। गाड़ी संख्या 13436 अमृत भारत एक्सप्रेस गोमतीनगर से शुक्रवार शाम 6:40 बजे चलकर मालदाटाउन अगली शाम 4:40 बजे पहुंचेगी। ट्रेन में स्लीपर और जनरल की 22 बोगियां हैं। ट्रेन न्यू फरक्का, बरहरवा, साहिबगंज, कहलगांव, भागलपुर, सुलतानगंज, जमालपुर, अभयपुर, कुईल, शेखपुर, नवादा, तिलैया, गया, देहरी आन सोन, सासाराम, भबुआ रोड, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, वाराणसी, जौनपुर, शाहगंज, अयोध्या धाम, अयोध्या कैंट स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में अभी स्लीपर की 458 सीटें खाली हैं। इसमें रवानगी तक दो सौ सीटें खाली रहने की आशंका जताई जा रही है।

चारबाग की जगह ट्रांसपोर्टनगर व ऐशबाग होकर चलाई जाएंगी 6 ट्रेनें

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: चारबाग रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर दो व तीन पर कॉन्कोर्स निर्माण के चलते पावर ब्लॉक लिया गया है। इस रूट की ट्रेनों को चारबाग की जगह ट्रांसपोर्टनगर व ऐशबाग के रास्ते चलाया जाएगा।

चारबाग स्टेशन का अपग्रेडेशन कार्य कराया जा रहा है। इसके चलते प्लेटफॉर्म नंबर चार व पांच पर नींव का काम कराया गया है, जिसके चलते करीब एक महीने का ब्लॉक लिया गया था। वहीं अब प्लेटफॉर्म नंबर दो व तीन पर निर्माण कार्य होना है, जिसके लिए इंजीनियरिंग विभाग की ओर से दो महीने का ब्लॉक मांगा गया है। अभी मंथन चल रहा है। निर्माण कार्य जुलाई के अंतिम सप्ताह में शुरू होगा। इसे देखते हुए चारबाग आने वाली छह ट्रेनों का बदले रूट से चलाने का निर्णय लिया है।

ट्रांसपोर्टनगर के रास्ते चलेंगी ये गाड़ियां

- देहरादून से 31 जुलाई से 24 सितम्बर तक चलने वाली 15120 देहरादून-बनारस एक्सप्रेस चारबाग की जगह ट्रांसपोर्टनगर से जाएगी।
- नई दिल्ली से पहली अगस्त से 25 सितम्बर तक चलने वाली 15128 नई दिल्ली बनारस एक्सप्रेस चारबाग की जगह ट्रांसपोर्टनगर के रास्ते चलेगी।

ऐशबाग के रास्ते चलेंगी ये गाड़ियां

- बान्द्रा टर्मिनस से तीन, 10, 17, 24 एवं 31 अगस्त, 7, 14 व 21 सितंबर को चलने वाली 22921 बान्द्रा टर्मिनस-गोरखपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग मानकनगर-ऐशबाग-मल्हौर के रास्ते चलाई जाएगी।
- ग्वालियर से 31 जुलाई से 24 सितम्बर तक चलने वाली 11123 ग्वालियर बरौनी एक्सप्रेस मल्हौर की जगह ऐशबाग कके रास्ते चलेगी।
- गोरखपुर से पहली अगस्त से 25 सितम्बर तक चलने वाली 12555 गोरखपुर बठिण्डा एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग मल्हौर-ऐशबाग-मानक नगर के रास्ते चलाई जाएगी।
- पुणे से दो, नौ, 16, 23 एवं 30 अगस्त तथा छह, 13 एवं 20 सितम्बर को चलने वाली 15030 पुणे-गोरखपुर एक्सप्रेस चारबाग की जगह ऐशबाग में रुकेगी।

लखनऊ से तीन नई अमृत भारत चलाने की तैयारी

अमृत विचार, लखनऊ : रेलवे लखनऊ से तीन शहरों के लिए अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें चलाने की तैयारी कर रहा है। लखनऊ से जम्मूतवी के लिए साप्ताहिक, देहरादून के लिए सप्ताह में दो दिन और चंडीगढ़ के लिए सप्ताह में तीन दिन ट्रेन चलाने का प्रस्ताव बनाया जा रहा है। इसके लिए मौजूदा ट्रेनों की वेटिंग लिस्ट और रास्ते में पड़ने वाले मुरादाबाद, अंबाला, फिरोजपुर और जम्मू रेल मंडलों के साथ फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार की जाएगी। रेलवे की आपरेटिंग यूनिट के अधिकारियों ने हाल ही में बैठक कर इस पर मंथन भी किया है।

प्रकाश कुल्फी के ठिकानों पर सीजीएसटी टीम की दबिश

कार्यालय संवाददाता,लखनऊ

अमृत विचार: केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (सीजीएसटी) की टीम ने गुरुवार को राजधानी की मशहूर प्रकाश कुल्फी के अमीनाबाद व चौक स्थित दुकानों के अलावा गोमतीनगर, आलमबाग और फर्म के मुख्य कार्यालय पर एक साथ दबिश दी। टीम ने दुग्ध उत्पाद के टैक्स स्लैब में शिकायत के बाद खाद्य उत्पादों से संबंधित दस्तावेजों की पूरे दिन जांच की। सीजीएसटी टीम ने आवश्यक दस्तावेज जब्त कर लिए हैं।

टीम द्वारा छानबीन का कारण प्रकाश कुल्फी फर्म द्वारा बेचे जा रहे दुग्ध उत्पाद, कुल्फी, आइसक्रीम जैसे उत्पादों पर लगने वाले टैक्स स्लैब में आई शिकायत है। नियमानुसार उत्पादों पर अलग-अलग जीएसटी दरें तय हैं। लेकिन, प्रकाश कुल्फी फर्म द्वारा इन्हें एक ही श्रेणी में टैक्स अदा करने की सूचना मिलने पर सीजीएसटी टीम सक्रिय हुई। सूत्रों के अनुसार टीम दस्तावेजों का मिलान कर आवश्यक कार्रवाई की तैयारी कर रही है, क्योंकि फर्म का करीब दो करोड़ रुपये टैक्स का हिसाब नहीं मिल रहा है। वहीं, प्रतिष्ठान के एक कर्मचारी ने बताया कि सामान्य रुटीन चेकअप था। सीजीएसटी टीम आई थी, हम लोगों से जो पूछा गया उसे बताया गया, टीम का पूरा सहयोग किया गया।

307 को लॉटरी से मिले आवास

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विकास प्राधिकरण ने बसंतकुंज योजना के सेक्टर-आई में 307 प्रधानमंत्री शहरी आवासों का आवंटन लॉटरी के माध्यम से किया गया। लाभार्थियों ने अपने हाथ से लॉटरी निकाली और आवास की पर्ची खुलते ही खुशी का ठिकाना नहीं लगा। अपर सचिव सीपी त्रिपाठी ने बताया कि प्राधिकरण ने हरदोई रोड स्थित बसंतकुंज योजना में फ्लैट बनाए थे। इनमें सेक्टर-आई में बुक फ्लैटों की गुरुवार को लॉटरी इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के मकरी हॉल में कराई गई। पहले दिन अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग के दिव्यांगजन, वरिष्ठ नागरिक एवं सामान्य वर्ग के दिव्यांगजन की लॉटरी सम्पन्न हुई। इस दौरान 307 लाभार्थियों को भवन आवंटित किए गए। इन्हें आवंटन पत्र और चाभी दी गई। इसी तरह अन्य वर्गों की 26 जुलाई तक प्रक्रिया की जाएगी।

The Ano-Rectal Clinic

अत्याधुनिक विधि द्वारा गुदाद्वार में होने वाली बीमारियों का परीक्षण

Dr. Sanjay Kumar Yadav

M.S. (Ano-Rectal Surgeon)

लेज़र विधि एवं DGHAL विधि द्वारा बवासीर (Piles) भगन्दर (Fistula) एवं गुदाद्वार में होने वाली अन्य बीमारियों का उचित* इलाज

क्लीनिक का पता

एस-80, गोल चौराहा, महानगर कोतवाली के सामने, महानगर, लखनऊ

www.anorectalclinic.com | 7388913338, 8005423919

"न्यूरो फिजियोथेरेपी से जीवन बदले अब दर्द और कमजोरी से छुटकारा पाएं!"

क्या आप स्ट्रोक, लकवा (पैरालिसिस), रीढ़ की हड्डी की चोट, पार्किंसन, सेरेब्रल पाल्सी या किसी अन्य न्यूरोलॉजिकल समस्या से परेशान हैं? अब चिंता की कोई बात नहीं!

हमारे विशेषज्ञ न्यूरो फिजियोथेरेपिस्ट की देखरेख में उन्नत तकनीकों और अन्तर्राष्ट्रीय प्रमाणित उपचार के माध्यम से पाएँ –

- शरीर की कमजोरी और जकड़न से राहत
- चलने-फिरने और संतुलन में सुधार
- हाथ-पैरों की कार्यक्षमता को बढ़ाना
- दर्द प्रबंधन और रिकवरी में तेजी

न्यूरो फिजियोथेरेपी-फिर से सामान्य जीवन की ओर पहला कदम!

Youtube Channel Extra Care Physiotherapy

अधिक जानकारी व फीडबैक हेतु देखें

DR. SANTOSH K. UPADHYAY
Neuro Physiotherapist, Ph.D. in Physiotherapy
MPT Neuro, DNP (S.Africa) DIERS Posture & Motion Analyst, DIERS Academy Germany
Vestibular Rehabilitation from University College London
London Shoulder Clinic Certified Practitioner
Certified in ABC Posturo Logical Method Evaluation & Treatment Protocol, Chiropractic & Oesteopathic Technique
Level 1 Pelvic Floor Rehab Therapist (Non Invasive)

DR. AKANSHA UPADHYAY (P.T)
Managing Director, Ph.D. (Scholar in Physiotherapy)
MPT Neuro, DNP (S.Africa)
DIERS Posture & Motion Analyst, DIERS Academy Germany
Vestibular Rehabilitation from University College London
London Shoulder Clinic Certified Practitioner
Certified in ABC Posturo Logical Method Evaluation & Treatment Protocol, Chiropractic & Oesteopathic Technique
Certified Pelvic Floor Rehab Therapist

CENTRE TIMINGS: 09:00 AM to 01:00 PM and 04:00 PM to 08:00 PM (SUNDAY CLOSED)

EXTRA CARE Physiotherapy Centre
Specializes in Spine & Neuro Rehab

पता: बेसमेन्ट 1, ईश्वरपुरी कालोनी, सेक्टर-12, निकट स्पेंसर्स, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016.
वेबसाइट: www.spinephysiotherapy.com
अपॉइंटमेंट के लिए सम्पर्क करें:
9335843581, 0522-4960007

मधुमेह से किडनी खराब होने की अब पहले ही हो जाएगी जानकारी

संवाददाता, लखनऊ (पीजीआई)

अमृत विचार : डायबिटीज (मधुमेह) के मरीजों के लिए एक राहत भरी खबर है। संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआई) के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा बायोमार्कर खोजा है, जिससे किडनी की बीमारी (सीकेडी) का पता बीमारी शुरू होने से पहले ही चल जाएगा।

यह खोज पेशाब (यूरिन) की जांच के माध्यम से बिना किसी सर्जरी या रक्त जांच के संभव है। यह शोध आईसीएमआर के सेंटर ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड एक्सीलेंस (केयर) प्रोजेक्ट के तहत मोलिक्यूलर मेडिसिन एंड बायोटेक्नोलॉजी विभाग में किया गया। प्रो. स्वस्ति तिवारी के नेतृत्व में हुए शोध में पीजीआई के डा. धर्मेंद्र के चौधरी, डॉ. सुखान्शी कांडपाल, डॉ. दीनदयाल मिश्रा व डॉ. विश्वजीत साहू के साथ पुडुचेरी के सामुदायिक चिकित्सा विशेषज्ञ भी शामिल थे। विशेषज्ञों का कहना है कि यह खोज डायबिटीज के मरीजों के लिए उम्मीद की एक नई किरण है। इससे बीमारी समय रहते पकड़ में आएगी और मरीज गंभीर किडनी फेल्योर या दिल की समस्याओं से बच पाएंगे।

- संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों ने खोजा नया बायोमार्कर
- सिर्फ यूरिन की जांच से होगा शुरुआती निदान

पांच वर्ष में एक हजार मरीजों पर किया गया अध्ययन

प्रो. स्वस्ति तिवारी ने बताया शोध की शुरुआत वर्ष 2019 में हुई। जिसमें लखनऊ और पुडुचेरी के करीब 1000 मधुमेह रोगियों को शामिल किया गया। इन रोगियों को करीब पांच साल तक फॉलोअप किया गया। बायोमार्कर को मानव मूत्र में मौजूद नैनो आकार की पुटिकाओं (एक्सोसोम) में पहचाना गया है, जो कि मानव सिर के बाल से भी हजारों गुना छोटे होते हैं।

पेटेंट की प्रक्रिया और राष्ट्रीय पहचान

इस तकनीक को मार्च 2024 में पेटेंट के लिए भारतीय पेटेंट कार्यालय में दर्ज किया गया है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए आईसीएमआर ने इसे अपनी 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल किया है।

देश में पहली बार मूत्र एक्सोसोम से किडनी का निदान

प्रो. स्वस्ति तिवारी ने बताया कि भारत में यह पहली प्रयोगशाला है। जिसने किडनी रोग के लिए मूत्र एक्सोसोम की उपयोगिता साबित की है। इसके अलावा, विभाग ने राष्ट्रीय स्तर पर दो प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित कर अन्य डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को भी इस तकनीक से प्रशिक्षित किया।

सिर्फ 6 घंटे में हो जाएगी गंभीर रोगियों की जांच

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- केजीएमयू में मॉलीक्यूलर टेस्ट फॉर बैक्टीरियल आईडेंटिफिकेशन एंड रजिस्टेंट जांच शुरू

अमृत विचार : केजीएमयू के क्रिटिकल केयर मेडिसिन (सीसीएम) विभाग में वेंटिलेटर पर भर्ती मरीजों की जान बचाना आसान हो गया है। मरीजों को किस बैक्टीरिया ने जकड़ा है। कौन सी एंटीबायोटिक के खिलाफ मरीज में रजिस्टेंट है? इसका पता महज छह घंटे में चल सकेगा। विभाग में मॉलीक्यूलर टेस्ट फॉर बैक्टीरियल आईडेंटिफिकेशन एंड रजिस्टेंट जांच शुरू हो गई है। अभी तक कल्चर तकनीक से जांच होती थी। इसमें 72 से अधिक घंटे लगते थे। यह जानकारी गुरुवार को सीसीएम के विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश अग्रवाल ने पत्रकार वार्ता में दी।

डॉ. अग्रवाल ने बताया कि आईसीयू व वेंटिलेटर पर भर्ती के दौरान मरीज पर बैक्टीरिया आसानी से हमला बोल देते हैं। तमाम तरह की एंटीबायोटिक रजिस्टेंट हो जाती हैं। ऐसे में मरीज को सटीक इलाज मुहैया कराने के लिए बैक्टीरिया की प्रजाति का पता लगाना जरूरी होता है। साथ ही एंटीबायोटिक रजिस्टेंट का।

कार्यशाला आज से

केजीएमयू में सोसाइटी ऑफ प्रीसीजन मेडिसिन एंड इंटेंसिव केयर भारत की ओर से कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें दुनिया भर से 800 से ज्यादा डॉक्टर शिरकत करेंगे। 25 को कार्यशाला होगी।

सिटी ब्रीफ

पार्षदों ने किया महापौर को सम्मानित

अमृत विचार, लखनऊ : स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 में लखनऊ को देश में तीसरा स्थान प्राप्त होने की उपलब्धि पर जोन 5 में गुरुवार को स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इसमें महापौर सुषमा खर्कवाल को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पार्षद पीयूष दीवान, राम नरेश रावत, नरेंद्र शर्मा, गीता देवी, पूर्व पार्षद गिरीश मिश्रा, श्रवण नायक, पार्षद प्रतिनिधि आदर्श मिश्रा, सुधीर मिश्रा 'बबलू' आदि उपस्थित रहे।

सिख समाज ने किया महापौर का सम्मान

अमृत विचार, लखनऊ : सिख समाज द्वारा महापौर सुषमा खर्कवाल को कैंप कार्यालय में जाकर उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भाजपा अवध क्षेत्र पूर्व सह मीडिया प्रभारी सतबीर सिंह राजू, गुरजीत छाबड़ा, अध्यक्ष, उप्र सिख विचार मंच, हरसदीप सिंह रासु महासचिव, सिख विचार मंच एसोसिएशन, कपिल अरोड़ा, उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह राजू सहित अन्य लोग मौजूद थे।

वर्षगांठ पर डाक टिकट डिजाइन प्रतियोगिता

अमृत विचार, लखनऊ : संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में डाक विभाग राष्ट्रीय स्तर की डाक टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। जीपीओ चीफ पोस्ट मास्टर राजेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में कक्षा 9वीं से 12वीं और मान्यता प्राप्त कला महाविद्यालयों के विद्यार्थी प्रतिभाग कर रहे हैं। प्रत्येक विद्यालय या महाविद्यालय अधिकतम पांच चयनित प्रविष्टियां ही भेज सकता है। प्रविष्टियां संबंधित संस्थान की ओर से 15 अगस्त शाम 5 बजे तक MyGov पोर्टल पर अपलोड की जा सकती हैं।

व्यापारियों का जीएसटी कार्यालय पर प्रदर्शन

अपर आयुक्त प्रशासन को सौंपा आठ सूत्री मांग पत्र, सर्विस प्रदाता एजेंसी को छूट की सीमा हो 40 लाख

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : उप्र. उद्योग व्यापार मंडल लखनऊ इकाई के अध्यक्ष अमरनाथ अग्रवाल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में व्यापारियों ने गुरुवार को राज्य जीएसटी कार्यालय विभूति खंड पहुंचकर जीएसटी में व्याप्त खामियों एवं सचल दल द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न के विरोध में प्रदर्शन किया। 8 सूत्री मांग पत्र राज्यकर अपर आयुक्त प्रशासन सुनील कुमार वर्मा को सौंपा।

अपर आयुक्त प्रशासन को मांग पत्र देते व्यापारी। ● अमृत विचार

कोषाध्यक्ष धर्मपाल अग्रवाल ने बताया कि ईमेल से भेजी जाने वाली जीएसटी की नोटिस व्यापारी समय पर नहीं देख पाते हैं, इससे व्यापारियों के खाते सीज करने के साथ खातों से धनराशि निकाली जा रही है। व्यापारी ग्रेड-1 के यहां अपील भी नहीं कर पाते हैं। व्यापारियों ने इनकम टैक्स की तरह जीएसटी में रिवाइज्ड रिटर्न के प्रावधान की मांग की। जीएसटी कंपोजिशन स्कीम को 40 लाख से बढ़कर 80 लाख करने और सर्विस प्रदाता एजेंसी को जीएसटी में दी गई 20 लाख तक के कारोबार में छूट की सीमा बढ़ाकर 40 लाख करने की मांग की। जीएसटी अपील में व्यापारियों को 10 प्रतिशत शुल्क की जगह 5 प्रतिशत जमा करके अपील का प्रावधान किया जाए। रोजमर्रा की वस्तुएं जैसे मंजन, खाद्य तेल, साबुन इत्यादि वस्तुओं को जीएसटी से मुक्त किया जाए। ई-वे बिल की मानवीय त्रुटि पर गाड़ियों को रोककर पेनाल्टी लगाई जाती है। विरोध करने पर अपील करके रिफंड लिए जाने की बात कही जाती है, जो न्यायसंगत नही है। व्यापारियों ने अपर आयुक्त से कहा कि विभाग समय-समय पर कार्यशाला का आयोजन करके व्यापारियों को अपग्रेड करें। जिस पर उन्होंने शीघ्र मांगों का निस्तारण करने और कार्यशाला का आयोजन करने का आश्वासन दिया।

धरना प्रदर्शन में महामंत्री योगेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष धर्मपाल अग्रवाल, युवा अध्यक्ष संजय जायसवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंद अग्रवाल, प्रमिला जायसवाल, श्याम मिश्रा, अभय उपाध्याय, सनी सिंह, विवेक अग्रवाल, मंगलेश मिश्रा, प्रदीप सोनकर, सुशील जायसवाल, राहुल सिंह, प्रवीन खंडेलवाल, रमेश अग्रवाल सहित काफी संख्या में व्यापारी शामिल रहे।

स्वामी प्रसाद मौर्य का आवास घेरा

अमृत विचार, लखनऊ : स्वामी प्रसाद मौर्य के विवादित बयान के विरोध में विश्व हिंदू रक्षा परिषद से जुड़े कार्यकर्ताओं ने उनके घर के बाहर प्रदर्शन किया। संगठन के लोग उनके आवास को गंगाजल से शुद्ध करने पहुंचे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें रास्ते में ही रोक लिया और सभी को हिरासत में लेकर इको गार्डन धरना स्थल भेज दिया। ज्ञात हो कि स्वामी प्रसाद मौर्य ने कांवड़ियों पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि कांवड़ियों के वेश में गुंडे और माफिया उपद्रव कर रहे हैं और ये लोग सत्ता से संरक्षित हैं। इस बयान के बाद हिंदू संगठनों में आक्रोश फैल गया। प्रदेश अध्यक्ष रिंकी गुप्ता ने कहा कि मौर्य ने भगवान शिव के भक्तों का अपमान किया है, उन्हें शर्म आनी चाहिए। वहीं मौर्य ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि प्रदर्शनकारियों का दिमाग अशुद्ध है, वे उनके घर को क्या ही शुद्ध करेंगे। प्रदर्शन के दौरान पुलिस-प्रशासन के खिलाफ भी जमकर नारेबाजी हुई।

दो दिन में 10,250 पशुओं का टीकाकरण

अमृत विचार, लखनऊ : जिले में खुरपका-मुंहपका रोग से पशुओं को बचाने के लिए चिकित्सकों की टीम नगर व ग्रामीण इलाकों में सक्रिय हो गई। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ. सुरेश कुमार ने बुधवार को शुरू हुए एफएमडी टीकाकरण की मॉनीटरिंग की। उन्होंने बताया कि दो दिन में 10,250 पशुओं को चिकित्सकों ने टीका लगाया है। यह अभियान नगर व ग्रामीण इलाकों में 45 दिन तक चलेगा। 4,50,900 पशुओं का टीकाकरण करने का लक्ष्य है।

स्व. डा. सिद्धिनाथ शुक्ल (एडवोकेट) की चौथी पुण्य तिथि पर

शत शत नमन।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे"

आत्मा का न तो जन्म होता है और न ही मृत्यु। इसका कोई अस्तित्व नहीं है, इसलिए मैं कभी नहीं मिटता। आत्मा शाश्वत, अमर और अजर है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह नष्ट नहीं होती। (भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 20)

आपने अपने कर्मों, सद्गुणों और स्नेह से न सिर्फ परिवार बल्कि अनगिनत लोगों के जीवन को जीवंत किया। आपकी आत्मीयता और मार्गदर्शन की कमी हमें हर क्षण अनुभव होती है, पर आपकी स्मृतियां हमें संबल देती हैं। आपके विचारों की ऊर्जा हमारे पथ को आलोकित करती रहेंगी। आपका आशीर्वाद हमारे साथ सदा बना रहे, यही प्रार्थना करते हैं।

शुक्ल परिवार
ग्राम- शेखपुर (अठगवां), पो० गजरिया, जिला- प्रतापगढ़

राकेश शुक्ल (अनुज पुत्र)
राजीव शुक्ल (अनुज पुत्र)
राहुल शुक्ल (अनुज पुत्र)
संजय शुक्ल (अनुज पुत्र)

राजेश कुमार शुक्ल (पुत्र)
श्रीमती वीना शुक्ला (पुत्र वधू)
रावी शुक्ला (पौत्री)
प्रतीक्षा शुक्ला (पौत्री)
रुद्र कुमार शुक्ल (पौत्र)
श्रीमती आशा ओझा (पुत्री)
अभिषेक कुमार ओझा (नाती)

त्रिभुवननाथ शुक्ल (अनुज)
ऋद्धिनाथशुक्ल (अनुज)

मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : भारतीय मूल निवासी संयुक्त मोर्चा के अध्यक्ष रमाशंकर एडवोकेट के नेतृत्व में गुरुवार को सैकड़ों लोगों ने कलेक्ट्रेट पर जोरदार प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारियों ने कांवड़ यात्रा में शामिल होने के लिए हज और अमरनाथ यात्रा की भांति पंजीकरण व चरित्र सत्यापन अनिवार्य करने, डॉ. रजनीश गंगवार के विरुद्ध दर्ज एफआईआर को निरस्त करने तथा उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित करने की मांग की। साथ ही कम छात्रसंख्या के आधार पर सरकारी स्कूलों को विलय किए जाने के निर्णय को वापस लेने की अपील की गई। उन्होंने जिला प्रशासन के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। प्रदर्शन में रामकृपाल एडवोकेट, डॉ. मोहन लाल रावत, अंबरीश कुमार एडवोकेट, गरिमा भीम एडवोकेट, अनुराग गौतम एडवोकेट, राजकुमार सहित अनेक सामाजिक कार्यकर्ता और अधिवक्ता शामिल रहे।

लॉरी में हृदय रोगी को नहीं मिला इलाज

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : प्रयागराज के एसआरन हॉस्पिटल से गंभीर हालत में रेफर की गई महिला को लॉरी कार्डियोलॉजी में मुकम्मल इलाज तक नहीं मिला। इमरजेंसी में प्राथमिक इलाज के बाद उसे आधी रात को बाहर कर दिया गया। परेशान परिजन मरीज को लॉरी के सामने बने रैन बसेरे में जमीन पर लिटा रखे हैं। परिजनों का आरोप है कि मरीज की बाईपास सर्जरी होनी है। डॉक्टर इलाज के लिए भर्ती तक नहीं किए।

> महिला मरीज की हालत गंभीर है तो उसे भर्ती कराया जाएगा। लॉरी के स्टाफ को भर्ती कराने को कहा गया है।
> – डॉ. केके सिंह, प्रवक्ता, केजीएमयू

प्रतापगढ़ की रहने वाली महिला विद्यावती 45 दिल की गंभीर से बीमारी पीड़ित हैं। उनके दिल की तीन नस ब्लॉक हैं। परिजनों ने इलाज के लिए पहले इलाहाबाद के एसआरन हॉस्पिटल में भर्ती कराया था। बुधवार रात गंभीर हालत में उन्हें इलाज के लिए लॉरी कार्डियोलॉजी रेफर किया गया। रात करीब 12 बजे परिजन मरीज को लॉरी इमरजेंसी ले गए। वहां डॉक्टर ने प्राथमिक इलाज बाद उन्हें बाहर कर दिया। तीमारदार पूरी रात मरीज को लॉरी सामने बने रैन बसेरे में जमीन में पड़े रहे। पति जीतलाल पाल का कहना है कि डॉक्टरों से कई दफा भर्ती के लिए कहा, मगर सुनवाई न हुई। मरीज के दिल की तीन नस में ब्लॉकेज हैं। ऐसे में डॉक्टर ने बाईपास सर्जरी की सलाह देकर लखनऊ रेफर किया था।

बाईपास सर्जरी करने की नहीं पड़ेगी जरूरत

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- लेजर तकनीक से एंजियोप्लास्टी कर खून के थक्के व कैल्शियम को हटाया जा सकेगा
- लोहिया संस्थान में चार मरीजों की हुई एंजियोप्लास्टी

अमृत विचार : दिल को खून पहुंचाने वाली नसों में 100 फीसदी ब्लॉकेज व जमा कैल्शियम को हटाने के लिए अब बाईपास सर्जरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। पहले की गई एंजियोप्लास्टी के दौरान स्टंट में सिकुड़न और कैल्शियम का जमाव के लिए भी बड़ा ऑपरेशन नहीं करना होगा। लोहिया संस्थान के कॉर्डियोलॉजी विभाग में लेजर तकनीक से एंजियोप्लास्टी कर खून के थक्के व कैल्शियम को हटाया जा सकेगा। लोहिया के कॉर्डियोलॉजी विभाग में चार मरीजों का लेजर तकनीक से कोरोनरी एंजियोप्लास्टी की गई।

विभाग के डॉ. सुदर्शन विजय ने बताया कि लेजर एंजियोप्लास्टी से मरीजों की लंबे समय से 100 फीसदी बंद नसों को खोला गया। उन्होंने बताया कि सबसे ज्यादा दिक्कत कैल्शियम को हटाने में आती है, क्योंकि मर्ज पुराना होने से कैल्शियम काफी सख्त हो जाता है। ऐसे में तार व दूसरी तकनीक से कैल्शियम को तोड़ना कठिन होता है। ऐसे मरीजों को बाईपास की सलाह दी जाती है। लेजर नसों में जमे कोलेस्ट्राल को हार्ट अटैक के मरीजों में नसों में बने खून के थक्कों को गला देती है। कैल्शियम को तोड़कर बाहर निकाल देती है। खून का प्रवाह ठीक करती है।

डॉ. सुदर्शन ने बताया कि लोहिया उत्तर भारत व यूपी का पहला सरकारी संस्थान है, जिसमें लेजर से एंजियोप्लास्टी की गई है।

दो रुपये की निडिल से की ग्लूकोमा सर्जरी

संवाददाता, पीजीआई

- बैंग तकनीक से सर्जरी कर प्रदेश का पहला सरकारी संस्थान बना पीजीआई

अमृत विचार : ग्लूकोमा जैसी जटिल बीमारी के इलाज में संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ ने बड़ी सफलता हासिल की है। संस्थान के नेत्र रोग विभाग में बैंग तकनीक (बेंट एब इंटरनों नीडल गोनिएक्टोमी) से 60 वर्ष से अधिक उम्र के 10 मरीजों की सफल सर्जरी की गई है। ये सभी मरीज मोतियाबिंद और ग्लूकोमा से ग्रसित थे। सर्जरी में मरीजों से कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया गया।

डॉ. वैभव जैन

यह तकनीक एम्स दिल्ली और पीजीआई चंडीगढ़ जैसे चुनिंदा संस्थानों में ही उपलब्ध थी। डॉक्टरों का दावा है कि एसजीपीजीआई प्रदेश का पहला सरकारी संस्थान बन गया है, जहां इस सर्जरी को सफलतापूर्वक किया गया। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. वैभव जैन ने बताया कि बैंग तकनीक में सिर्फ दो रुपये की 26 नंबर की सुई से आंख की अंदरूनी जाली (ट्रैबेक्युलर जाल) को काटकर द्रव का निकास सुगम बनाया जाता है। इससे आंखों का दबाव नियंत्रित हो जाता है। इस सर्जरी को मिनिमल इनवेसिव ग्लूकोमा सर्जरी कहते हैं। डॉ जैन ने बताया कि कुछ निजी और विदेशी केंद्र इसी प्रक्रिया के लिए विदेशी ब्लेड का इस्तेमाल करते हैं, जिसकी कीमत लगभग 40 हज़ार रुपये होती है।

नई व्यवस्था | केंद्र ने अन्य उर्वरकों की तरह बनाई बायोस्टिमुलेंट की नियमावली

जैव उत्प्रेरक बेचने के लिए लाइसेंस अनिवार्य

प्रशांत सक्सेना, लखनऊ

- नमूने लेकर किया जाएगा परीक्षण और कार्रवाई

अमृत विचार : फसलों में प्रयोग होने वाली जैव उत्प्रेरक (बायोस्टिमुलेंट) अब लाइसेंस पर बिकेगी। केंद्र सरकार ने इसे यूरिया, डीएपी समेत अन्य उर्वरकों की तरह उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 में अधिसूचित किया है। लाइसेंस की अनिवार्यता करते हुए उत्पादन, बिक्री, सैंपलिंग और गड़बड़ी पर कार्रवाई की नियमावली बनाकर लागू की है।

प्रदेश में नई व्यवस्था के तहत जैव उत्प्रेरक बनाने और बेचने के लिए लाइसेंस लेना होगा। लाइसेंस अन्य उर्वरकों की तरह सक्षम अधिकारी जारी करेंगे। अब तक जैव उत्प्रेरक का उत्पादन और बिक्री सरकार के जी-2 और जी-3 प्रारूप पर स्वीकृति लेकर होती थी। इसमें बदलाव करके अन्य उर्वरकों की तरह नियमावली बनाकर लागू की है। नई व्यवस्था में जैव उत्प्रेरक की इकाइयों पर टेस्टिंग होगी। कृषि विभाग छापेमारी करके सैंपल लेगा और गुणवत्ता का परीक्षण करेगा। इससे मिलावट पर अंकुश लगेगा और गड़बड़ी मिलने पर सम्बंधित पर कार्रवाई की जाएगी। गुणवत्तायुक्त जैव उत्प्रेरक मिलने से किसानों को फायदा होगा।

> केंद्र ने जैव उत्प्रेरक की नियमावली बनाकर लागू की है। उत्पादन और बिक्री बिना लाइसेंस के नहीं होगी। सैंपल लेकर जांच की जाएगी और गड़बड़ी मिलने पर कार्रवाई होगी। इससे गुणवत्ता का पता चलेगा और पारदर्शिता आएगी।
> – तेग बहादुर सिंह, जिला कृषि अधिकारी, लखनऊ

पौधों की इम्यूनिटी बढ़ाने में सहायक जैव उत्प्रेरक

जैव उत्प्रेरक एक कार्बनिक उर्वरक है। इसका खेतों पर प्रयोग करने से पौधों की इम्यूनिटी बढ़ती है। तरह-तरह के जैव उत्प्रेरक इकाइयों पर यूरिया, डीएपी व अन्य उर्वरकों की तर्ज पर बनते हैं। लेकिन, इसे बनाने और बेचने की कोई ठोस नियमावली नहीं बनी थी। इसका केंद्र सरकार ने संज्ञान लेकर नियमावली बनाकर लाइसेंस की अनिवार्यता की है।

उत्तर रेलवे

ई–ऑक्शन सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/पी0एस0 उत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई– ऑक्शन से संबंधित सूचना।

एडमिन यूनिट/जोन	लखनऊ–उ0रे0–मण्डल–वाणिज्य/उ0रे0
नीलामी सूची सं0/लॉट सं0	PARKING-LKO-SLN-TW-163-25-1 (Parking Two Wheeler)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	23.07.2025
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	08.05.2025 समय 10:00 बजे
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	08.08.2025 समय 10:30 बजे
नीलामी सूची सं0/लॉट सं0	PARKING-LKO-PFM-MX-157-25-1 (Parking Mixed)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	23.07.2025
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	08.05.2025 समय 10:00 बजे
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	08.08.2025 समय 10:40 बजे
नीलामी का प्रकार	Close Ended
वेबसाइट विवरण जहाँ पंजीकृत बोलीदाताओं द्वारा नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता है	E-Auction Module of www.ireps.gov.in

2241/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

ई–निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/टीआरडी/हजरतगंज, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय लखनऊ द्वारा निर्धारित प्रारूप पर निम्नलिखित कार्यों के लिए मुहरबंद खुली ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

ई–निविदा सूचना संख्या	टीआरडी–07–सीनि0डी0ई0ई0–लखनऊ–25–2कॉल
कार्य का नाम	लखनऊ मंडल के लखनऊ गुड्स यार्ड में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग के प्रावधान के संबंध में ओएचई संशोधन कार्य।
अनुमानित लागत	रु. 89,29,421.82
बयाना राशि	रु.1,78,600.00
कार्य पूर्ण करने की अवधि	06 माह
निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तिथि व समय तथा खोलने की तिथि	दिनांक 18.08.2025 को 15.00 बजे तक तथा खुलने का समय उसी दिन 15.00 बजे के बाद
प्रस्ताव की वैधता	निविदा खुलने की तिथि से 60 दिन।
उत्तर रेलवे की वेबसाइट	अतिरिक्त सूचना उत्तर रेलवे की वेबसाईट www.ireps.gov.in पर चैक की जा सकती है।
पत्रता मापदण्ड	निविदाकर्ता तब तक निविदा डालने योग्य नही है, जब तक कि वह निम्नलिखित पात्रता मापदंड पूरा नही करता: 1. निविदाकर्ता का न्यूनतम औसत वार्षिक संविदात्मक कारोबार वी/एन या 'वी' जो भी कम हो होना चाहिए: जहां वी = निविदा का विज्ञापित मूल्य करोड़ रुपये में एन = कार्य पूरा करने के लिए निर्धारित वर्षों की संख्या जिसके लिए बोलियां आमंत्रित की गई हैं। निविदाकर्ता पिछले सात वित्तीय वर्ष (निविदा के आमंत्रित करने के एक महिने पहले के अंतिम दिन तक): "कम से कम एक समान प्रत्येक तीन कार्य का 30 प्रतिशत न्यूनतम विज्ञापित राशि का कार्य किया हो" या "कम से कम एक समान प्रत्येक दो कार्य का 40 प्रतिशत न्यूनतम विज्ञापित राशि का कार्य किया हो" या "कम से कम एक समान एक कार्य का 60 प्रतिशत न्यूनतम विज्ञापित राशि का कार्य किया हो"। एक समान कार्य की परिभाषा होगी: Similar work means design, supply, erection, testing & commissioning of 50 Hz. Single Phase 25 KV AC OHE. 3. निविदाकर्ता अपने आफर के साथ बिजली के ठेकेदारों के वैध लाइसेंस की प्रमाणित छायाप्रति अवश्य जमा करें।

नोटः इस निविदा के लिए किसी भी तरह के मैनुअल प्रस्तावों की अनुमति नहीं है और किसी भी तरह के प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव नजरअंदाज/खारिज कर दिया जाएगा। पूर्ण विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखा जा सकता है।

सं. –टीआरडी–07–सीनि0डी0ई0ई0–लखनऊ–25–2 कॉल दिनांकः 24.07.2025

2255/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

अमृत विचार एक सशक्त अखबार

क्लासीफाइड

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

सूचित करता हूँ कि मेरा नाम शफीक था, जिसे बदलकर मैंने रफीक कर लिया है। अतः भविष्य में मुझे रफीक के नाम से जाना व पहचाना जाये। **रफीक पुत्र रसीद, निवासी– ग्राम दरगाह मकनपुर जिला बाराबंकी, मो0– 7526006482**

सूचना

मैने अपना नाम KAMLESH KUMAR PANDEY से बदलकर KAMLESH PANDEY रख लिया अब से भविष्य मे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। **S/o- PANCHANAN PANDEY ADD- BASANT BIHAR COLONY L.R.P. GOLA ROAD, CHHAUCHH DIST - LAKHIMPUR KHIRI - 262701 (U.P)**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मुझे मीरा व मीरा यादव दोनों ही नाम से जाना व पहचाना जाता है। उपरोक्त दोनों नाम मेरे ही हैं। **मीरा पत्नी रुद्र प्रसाद निवासी ग्राम– रखौना, तहसील बीकापुर, जनपद अयोध्या।**

सूचना

सूचित हो कि मेरे पुत्र के आधार कार्ड सं0– 724556060127 पर उसका नाम वैदिक श्रीवास्तव अंकित है जबकि उसका सही नाम कृष्णा श्रीवास्तव है। आज के बाद मेरा पुत्र अपने सभी प्रकार के कार्य कृष्णा श्रीवास्तव के नाम से करेगा। अतः उसके आधार कार्ड में उसका सही नाम कृष्णा श्रीवास्तव अंकित किया जाये। **अर्चना श्रीवास्तव पत्नी शरद श्रीवास्तव निवासी– 149 ऊपरी मंडई, छोटा चौराहा, सण्डीला तहसील सण्डीला जनपद हरदोई।**

सूचना

सूचित हो कि मेरी हाई स्कूल की मार्कशीट में मेरा नाम अभिषेक सिंह नागवंशी अंकित है जबकि अन्य सभी दस्तावेजों मैं मेरा नाम अभिषेक सिंह लिखा है। अतः भविष्य में मुझे अभिषेक सिंह के नाम से ही जाना जाये। **अभिषेक सिंह पुत्र श्री बच्चन प्रसाद सिंह निवासी– एस एच 3/514 नवलपुर पश्चिम, शिवपुरी, भोजूबीर, शिवपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश – 221103**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरी यूपी बोर्ड इण्टरमीडिएट की अंकसूची जिसका अनुक्रमांक 215874972 वर्ष 2021 है। वास्तव में कहीं खो गई है। मिलने पर मो0नं0– 7985277285 पर संपर्क करें। **मनोरमा देवी पुत्री श्री शिवकुमार निवासी– ग्राम कहली, पोस्ट गौसगंज, जिला हरदोई।**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम शशि सिंह (Shashi Singh) अंकित है व पासपोर्ट में शशि कुमारी (Shashi Kumari) दर्ज है। उपरोक्त दोनों नाम मेरे ही हैं। भविष्य में मुझे शशि सिंह (Shashi Singh) के नाम से जाना व पहचाना जाए। **शशि सिंह पत्नी रत्नेश कुमार सिंह पता– 498/132, बाबूगंज फैजाबाद रोड, लखनऊ, उ0प्र0– 226020**

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उ0प्रा0वि0 बेवाना अकबरपुर अम्बेडकरनगर में यूकेलिप्टस के 42 पेड़ों की नीलामी दिनांक 26.07.2025 दिन शनिवार को होनी है। आप सादर आमंत्रित हैं।

सूचना

सूचित हो कि मेरी पुत्री के डाकखाने के खाता संख्या 4038066151 में नाम बेबी है जो कि गलत है। जबकि मेरी पुत्री का आधार कार्ड आदि सभी अभिलेखों में नाम स्नेहा (SNEHA) है। जो सही है मेरी पुत्री को स्नेहा (SNEHA) पुत्री शिवम कुमार के नाम से ही जाना पहचाना व पढा लिखा माना जाये। **शिवम कुमार पुत्र अनिल कुमार निवासी– भैसोल, थाना– फफूंद, तहसील– बिधूना, जनपद औरैया।**

सूचना

मैने अपने पुत्र प्रवीन कुमार व प्रदीप कुमार को उनके गलत आचरण से दुखी हो कर मैंने अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति से बेदखल करके संबंध समाप्त कर लिया है। इन दोनो द्वारा किए गए किसी भी कृत्यों के लिए मैं व मेरा परिवार जिम्मेदार नही होगा। अपने कृत्यों के वे स्वयं जिम्मेदार होंगे। **रामशंकर उर्फ राममिलन पत्नी मंशा देवी निवासी–ग्राम सभा खेड़ा, मजरा कल्ली पश्चिम, थाना थाना–पी.जी.आई, तह0–सरोजनी नगर जिला–लखनऊ (उ.प्र.)**

सिटी ब्रीफ

सम्मानित किए गए लोग।

प्रो. बलवंत व आलोक रावत को मिला सृजन सम्मान

अमृत विचार, लखनऊ : उत्तर प्रदेश साहित्य सभा और यूपी प्रेस क्लब की ओर से गुरुवार को सृजन सम्मान समारोह आयोजित किया गया। भ्रमर बैसवारी, हसीब सिद्दीकी, सर्वेश अस्थाना और शिवशरण सिंह ने प्रो. बलवंत सिंह को सृजन उर्दू सम्मान और आलोक रावत को सृजन हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। अनुराग मिश्र के संयोजन व संचालन तथा भ्रमर बैसवारी की अध्यक्षता में कुलदीप शुक्ल की वाणी वंदना से कार्यक्रम शुरू हुआ। सावन पर आधारित कवि सम्मेलन में डॉ. शिवभजन कमलेश, रेनू वर्मा, राजीव वत्सल, अरविंद झा, विजय तन्हा, निधि बाजपेई, प्रतिभा श्रीवास्तव, प्रमोद श्रीवास्तव, मधु पाठक, पारस श्रीवास्तव, प्रो. जहांआरा, कैलाश त्रिपाठी, योगी योगेश शुक्ल, सुभाष चंद्र रसिया, वीरेंद्र प्रहरी, सुरभि सिंह, दिव्या शुक्ला, नीलेश ज्वाला, राजेश राज, गोपाल ठहाका, रश्मि श्रीवास्तव, अमन सोनी, निर्भय निश्छल, कीर्ति वाणी आदि ने काव्य पाठ किया।

राम मंदिर में तुलसी की प्रतिमा भी लगाई जाए

डॉ. स्वामी भगवदाचार्य

अमृत विचार, लखनऊ : श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष डॉ. स्वामी भगवदाचार्य ने अयोध्या के राम मन्दिर में गोस्वामी तुलसीदास की मूर्ति स्थापित किये जाने की मांग की है। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राम जन्मभूमि निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेन्द्र मिश्र, रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष चंपत राय को पत्र भी लिखा है। डॉ. भगवदाचार्य ने गुरुवार को प्रेस क्लब में पत्रकारों को बताया कि राम मन्दिर बनने के बाद रामचरितमानस पढ़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। उन्होंने बताया कि अयोध्या में राम की पैड़ी, हरिद्वार में हरि की पैड़ी की तरह से गोंडा में तुलसी की पैड़ी निर्माणाधीन है। यह मुख्यमंत्री के प्रयास से बन रही है। उन्होंने प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर तुलसी जन्मभूमि राजापुर गोंडा में गोस्वामी तुलसीदास अंतरराष्ट्रीय केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग की है।

नगर विकास मंत्री से मिला समिति का प्रतिनिधिमंडल

अमृत विचार, लखनऊ : जल निगम संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल ने गुरुवार को नगर विकास मंत्री एके शर्मा से उनके निवास पर भेंट की। मंत्री को पांच महीने का वेतन, पेंशन न मिलने से जल निगम कर्मियों के परिवारों को आ रही समस्याओं से अवगत कराया। सदस्यों ने मंत्री से जल निगम कर्मियों व पेंशनरों की समस्याओं के निराकरण के लिए अपनी अध्यक्षता में शासन स्तर पर संघर्ष समिति के साथ बैठक आयोजित कराने का आग्रह किया। जिस पर मंत्री ने मऊ यात्रा से लौटने के बाद बैठक करके समस्या का समाधान निकालने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधिमंडल में संयोजक वाईएन उपाध्याय, राम अधार पांडेय, एसपी मिश्रा, अजय पाल सोमवंशी, वीके बाजपेयी, गिरीश कुमार वर्मा, राघवेंद्र कुमार गुप्ता आदि शामिल थे।

श्रावणी तीजोत्सव में सोलह शृंगार कर किया कैटवाक

महिलाओं ने लोकगीतों पर किया नृत्य, लड़कियों ने खेला तंबोला, तीज सुंदरी की विजेताओं को किया गया सम्मानित

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: श्री अग्रवाल सभा की ओर से गुरुवार को मोतीनगर स्थित अग्रवाल शिक्षा संस्थान के सेठ रामजस हाल में श्रावणी तीजोत्सव मनाया गया। इसमें रंग बिरंगे परिधानों में महिलाओं ने सोलह शृंगार कर कैटवाक और सावन पर आधारित लोकगीतों पर नृत्य किया।

सास-बहू और 15 वर्ष आयु से अधिक की लड़कियों के लिए डुओ डांस के अलावा स्पॉट अन्त्याक्षरी, तीज सुन्दरी, मस्ती भरे खेल, तंबोला प्रतियोगिता भी कराई गई। तीज सुंदरी प्रतियोगिता की विजयी महिलाओं को मुख्य अतिथियों ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. प्रीति वत्सल, डॉ. स्मृति अग्रवाल एवं श्री अग्रवाल सभा के अध्यक्ष डॉ. जगदीश चन्द्र अग्रवाल, कोषाध्यक्ष जितेन्द्र अग्रवाल, महामंत्री अनुपम मित्तल, संयोजक सीमा अग्रवाल और सह संयोजक अंजू अग्रवाल ने महाराजा अग्रसेन के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया। आईकॉन हॉस्पिटल की डॉ. प्रीति वत्सल मुख्य अतिथि और केजीएमयू की डॉ. स्मृति अग्रवाल विशिष्ट अतिथि रहीं। कार्यक्रम सदस्य अंजू अग्रवाल एवम प्रतिभा हवेलिया ने कहा कि ये त्योहार प्रेम, समर्पण और नारी शक्ति का प्रतीक है। विनीता अग्रवाल एवम सोनिका अग्रवाल ने बताया कि यह उत्सव शिव और पार्वती के अटूट बंधन को दर्शाता है और महिलाओं को अपने पति के प्रति प्रेम और भक्ति व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

श्री अग्रवाल सभा की ओर से आयोजित श्रावणी तीजोत्सव में नृत्य करतीं महिलाएं।

महामंत्री अनुपम मित्तल ने बताया कि प्रतियोगिताओं में महिलाओं व बच्चों ने अपने अंदर छिपी हुई प्रतिभा को उजागर किया। अग्रवाल समाज के नन्हे मुन्ने बच्चों ने गणेश वंदना प्रस्तुत कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत की। सावन की हरियाली से परिपूर्ण हरे रंग के वस्त्रों में सजी धजी महिलाओं ने जब झूला लागल कदम की डारी झूले कृष्ण मुरारी गीत पर मनभावन नृत्य प्रस्तुत किया। रेनू अग्रवाल, अनीता कंछल, बबीता अग्रवाल, विनीता अग्रवाल, प्रतिभा हवेलिया, रेनू अग्रवाल, सांची बंसल और बड़ी संख्या में अग्रवाल सभा की महिला मंडली मौजूद रही।

अग्रवाल कॉलेज में आयोजित श्रावणी तीजोत्सव में झूले का आनंद लेतीं लड़कियां।

रंगमंच को जीवन की प्रयोगशाला मानते थे रतन थियम

अमृत विचार, लखनऊ: प्रख्यात नाटककार, निर्देशक, डिज़ाइनर, संगीतकार, चित्रकार, अभिनेता और लेखक रतन थियम के निधन पर जन संस्कृति मंच ने गहरा दुःख व्यक्त किया है। मंच के कार्यकारी अध्यक्ष कौशल किशोर ने कहा कि भारत ने एक ऐसे कलाकार को खो दिया जिसने अंतरराष्ट्रीय रंगमंच जगत पर अपनी प्रभावशाली छाप छोड़ी। अपनी विशिष्ट नाट्य कला के कारण वे सुजुकी, ब्रुक और ग्रोटोव्स्की जैसी रंगमंच जगत की महान हस्तियों के समकक्ष माने जाते हैं। रतन थियम के नाटकों में एक साथ जल की गहराई, भूमि का ताप और आकाश मे घुमड़ते बादलों को देखा और महसूस किया जा सकता था।

ऐशबाग के रामलीला मैदान में शिव सेवा परिवार की ओर से आयोजित सपादलक्ष रुद्राभिषेक में पूजन करते भक्त। अमृत विचार

सवा लाख रुद्र का किया अभिषेक

रामलीला मैदान में किया गया सपादलक्ष रुद्राभिषेक का आयोजन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: शिव सेवा परिवार की ओर से गुरुवार को ऐशबाग रामलीला मैदान में 17वें सपादलक्ष रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया। इसमें 27 चौकियों पर शिव परिवार के साथ 55 सौ रुद्र विराजमान कर पूजा की। अभिषेक के लिए ऋषिकेश से 540 लीटर गंगाजल एवं 3 कुंटल गाय का दूध मंगाया गया।

आयोजक अमरनाथ मिश्र ने बताया कि प्रमुख आचार्य गिरजा शंकर दीक्षित, शिव शंकर पाण्डेय एवं डॉ. योगेश व्यास तथा पांच सहयोगी आचार्यों के साथ शिव परिवार का षोडशोपचार पूजन कराया गया। जिसमें पाद्य अर्घ्य आचमन स्नान, सुगंधित जल स्नान, वस्त्र, जनेऊ, चंदन, अक्षत मिश्रित अनाज, गुलाल, बेल पत्र, फूल, धूप दीप, नैवेद्य पान, सुपाड़ी, ऋतु फल, दक्षिणा, स्तुति आरती पुष्पांजलि तथा विसर्जन किया गया। पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए रामलीला मैदान में ही गड्ढा खोद कर मूर्तियों का विसर्जन किया गया। हरीशचन्द्र अग्रवाल, अमरनाथ मिश्रा, राजेंद्र कुमार अग्रवाल, अरविंद तिवारी, सुधीर गुप्ता, मनमोहन, लोकेश अग्रवाल, सूर्य प्रकाश शुक्ला, शिवम बंसल, विनोद अग्रवाल, उत्कर्ष त्रिपाठी, अतुल त्रिपाठी, सतीश चंद्र मिश्रा, दीपक बाजपेई, सुनील शुक्ला, नीरज मिश्रा, मयंक मनोचा, वर्षा शर्मा, उज्जवल शुक्ला, अनुज अग्रवाल, संजय सोनकर, सत्यकाम मिश्रा, अर्चना, सनी लालवानी, आशा रानी निगम, प्रीति निगम, देवेश और संजय श्रीवास्तव आदि ने पूरी श्रद्धा के साथ पूजा अर्चना की।

रुद्राभिषेक में अभिषेक करते भक्त।

अनंतम के स्टालों पर दिखा महिला उद्यमियों का हुनर

लाइफ स्टाइल होम डेकोर प्रदर्शनी में लगे स्टाल पर मौजूद महापौर और अन्य।

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- फिक्की फ्लो लखनऊ चैप्टर ने लगाई लाइफ स्टाइल और होम डेकोर प्रदर्शनी

अमृत विचार: फिक्की फ्लो लखनऊ चैप्टर ने गुरुवार को गोमती नगर स्थित होटल हयात रीजेंसी में लाइफ स्टाइल और होम डेकोर प्रदर्शनी अनंतम का आयोजन किया। इसमें प्रदर्शनी में पारंपरिक बुनाई, पश्चिमी परिधान, गृह सज्जा, सुंदर राखियां सहित 50 से अधिक डिजाइनरों की डिजाइनें प्रदर्शित की गईं। मुंबई, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, जयपुर, कोटा, लखनऊ और बनारस आदि के डिजाइनरों व बुनकरों के परिधान, आभूषण, नेल आर्ट, स्किन केयर, इत्र आदि देखने को मिले।

प्रदर्शनी का उद्घाटन महापौर सुषमा खर्कवाल और फिक्की फ्लो की राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष पूजा गर्ग ने किया। महापौर ने कहा कि प्रदर्शनी में फैशन, आभूषण, स्वास्थ्य, गृह सज्जा और जीवनशैली से जुड़े ब्रांडों के प्रदर्शन से महिला उद्यमियों को शानदार मंच मिला है। ऐसे आयोजन महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक प्रयास हैं। फिक्की फ्लो की चेयरपर्सन वंदिता अग्रवाल ने विचार रखे। चैप्टर की वरिष्ठ उपाध्यक्ष सिमरन साहनी, स्वाति मोहन, स्मृति गर्ग, वनिता यादव, पूर्व अध्यक्ष अंजू नारायण, विभा अग्रवाल, आरुषि टंडन और स्वाति वर्मा तथा फिक्की फ्लो के सदस्यों की मौजूदगी ने लखनऊ चैप्टर के लिए इसे विशेष क्षण बना दिया। प्रदर्शनी की अध्यक्षता शमा गुप्ता और मिताली ओसवाल ने की। समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुधीर हलवासिया भी मौजूद रहे।

अबकी सावन में प्रत्येक दिन लग रही शिवालयों में भीड़

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: सावन में हर ओर 'हर हर महादेव' और 'बोल बम' की गूंज सुनाई दे रही है। इस बार सोमवार को तो ही नहीं अन्य दिनों में भी शिवालयों में भक्तों की भीड़ उमड़ रही है। कई मंदिरों में सुबह 4 बजे से ही लाइनें लगनी शुरू हो जाती हैं। महिलाएं, पुरुष, बच्चे और बुजुर्ग सभी वर्गों के लोग शिव की पूजा-अर्चना में लीन नजर आ रहे हैं। श्रद्धालु बेलपत्र, धतूरा, दूध, दही और गंगाजल लेकर भोलेनाथ को अर्पित कर रहे हैं।

मंदिर प्रबंधनों के अनुसार इस बार सावन में भक्तों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा रही है। जहां सोमवार को स्वाभाविक रूप से अत्यधिक भीड़ रहती है, वहीं मंगलवार से लेकर रविवार तक भी श्रद्धालुओं की उपस्थिति में कमी नहीं आ रही। यह लगातार भीड़ प्रशासन और मंदिर ट्रस्टों के लिए एक चुनौती जरूर बन रही है, लेकिन भक्तों की आस्था के सामने सबकुछ गौण प्रतीत हो रहा है। सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी की गई है। पुलिस और स्वयंसेवकों की तैनाती से भीड़ को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। कई स्थानों पर जलपान की व्यवस्था भी की गई है। श्रद्धालुओं का मानना है कि सावन में महादेव की पूजा विशेष फलदायी होती है। भक्त व्रत, रुद्राभिषेक, और महामृत्युंजय जाप जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से भगवान शिव को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार सावन के पावन माह में श्रद्धा, भक्ति और आस्था की त्रिवेणी हर दिन शिवालयों में बह रही है, और यह सिलसिला पूरे सावन भर जारी रहने की संभावना है।

डालीगंज स्थित मनकामेश्वर महादेव मंदिर में दर्शन करते भक्त। अमृत विचार

हनुमान दरबार में शुभांशु के माता-पिता ने की पूजा

अमृत विचार, लखनऊ : बेटे की अंतरिक्ष से सकुशल वापसी के लिए शुभांशु के माता-पिता ने हनुमान जी से मन्नत मांगी थी। शुभांशु की सकुशल वापसी के बाद गुरुवार को उनके पिता पिता शंभू दयाल शुक्ला और मां आशा शुक्ला हनुमान जी के दरबार पहुंचे। वहां विधि विधान से पूजा कर संकट मोचन का आशीर्वाद लिया। उन्होंने अंजनी पुत्र से देश की प्रगति और परिवार की खुशीहाली की कामना भी की। मंदिर के पूजारी ने पूजन कराया।

हनुमतधाम में पूजा करतीं अंतरिक्ष यात्री शुभांशु की मां आशा शुक्ला और पिता शंभू दयाल शुक्ला। अमृत विचार

झूलेलाल के भजनों से गूंज उठा सिंधु नगर

कार्यक्रम में नृत्य करती महिलाएं।

अमृत विचार, लखनऊ : सिन्धु नगर कृष्णानगर स्थित सिन्धी पंचायत में चालीहा साहिब महोत्सव के अवसर पर भव्य पूजा-अर्चना और कीर्तन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान झूलेलाल की आरती और पूजा से हुई। इसके पश्चात प्रसिद्ध गायक पवन केवलानी और पिंटू सोनी ने झूलेलाल के भजन और भक्तिगीत गाकर समा बांध दिया। महिलाओं ने सुर से सुर मिलाकर जय झूलेलाल के जयकारों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर पूजा राजपाल, कंचन चंदवानी, भारती चंदवानी, लाज लालवानी, सरिता इदनानी, भारती नारंग, मधु अटवानी, कविता खत्री, लीला आहूजा, सुनीता तलरेजा, कोमल बुधवानी, मीरा वाधवानी सहित बड़ी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद वितरण किया गया। चेट्टी चंद मेला कमेटी के प्रवक्ता अशोक मोतियानी, अध्यक्ष रतन मेघानी, संरक्षक अशोक चांदवानी, महामंत्री संजय जसवानी, कोषाध्यक्ष सतेन्द्र भावनानी, श्याम कृष्णानी सहित सभी पदाधिकारियों ने समाज से अपील की कि युवा पीढ़ी को धर्मांतरण से सचेत करें, झूलेलाल की पूजा से जोड़ें और सिन्धी भाषा को बढ़ावा दें।

पुष्पांजलि

मोहम्मद फारुख चौधरी को दिया गया डॉ. दरबारी लाल अस्थाना स्मृति सम्मान

स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर बच्चों ने बनाए चित्र और किया नृत्य

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: स्वतंत्रता सेनानी डॉ. दरबारी लाल अस्थाना का 120वां जयंती समारोह गुरुवार को गोमती नगर स्थित ऑलमाइटी मोंटेसरी इंटर कॉलेज में आयोजित किया गया। इस अवसर पर सम्मान समारोह, चित्रकला प्रतियोगिता, देश रंगीला डांस शो और करें योग रहे निरोग की सतरंगी प्रस्तुतियां भी हुईं।

विद्यालय के प्रबंधक मोहम्मद फारुख चौधरी को स्वतंत्रता सेनानी डॉ. दरबारी लाल अस्थाना स्मृति सम्मान 2025 से अलंकृत किया गया। वह कई दशकों से समाज उत्थान और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। सफिया चौधरी और मोहम्मद हमजा और विद्यालय की प्रधानाचार्या शेफाली शुक्ला को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर नीशू त्यागी के संयोजन में देशभक्ति विषय पर हुई चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में सम्पन्न करवायी गई। इसमें ढाई सौ से अधिक बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इसमें कक्षा एक से 5 तक के जूनियर वर्ग में नीलिशा यादव, तनिष्का कुमारी, आयुष कुमार और 6 से 12 तक के सीनियर वर्ग में आकाश, आरिफ अंसारी, आयशा खातून को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिया गया। किसी ने डॉ. दरबारी लाल अस्थाना का पोट्रेट बनाया तो किसी ने भारत के वीर सैनिकों को कागज पर उकेरा।

स्वतंत्रता सेनानी डॉ दरबारी लाल की जयंती समारोह में संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे। अमृत विचार

शुभ्रा अस्थाना के संयोजन में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रत्ना अस्थाना के निर्देशन में देशभक्ति पर आधारित नृत्य प्रस्तुति देश रंगीला डांस शो आकर्षण का केन्द्र बना। परंपरा के अनुरूप कार्यक्रम की शुरुआत गणपति वंदना एक दंताय से की गई। इस नृत्य प्रस्तुति में अनिका सिंह, अविका सिंह, अग्रिमा चौरसिया, वीरा, एंजल और रक्षा शर्मा ने प्रभावी भाव नृत्य प्रस्तुत किया।

देशभक्ति पर आधारित केन्द्रीय प्रस्तुति जय हो में रीतिका सिंह, अनिका, अविका, अग्रिमा, वीरा, एंजल, रक्षा और आयुषी गुप्ता, अवंतिका श्रीवास्तव ने एक से बढ़कर एक नृत्य संयोजन पेश कर दर्शकों को मुग्ध किया। रीतिका सिंह ने एकल नृत्य प्रस्तुति देश रंगीला ने आयोजन को परवान चढ़ाया।

योग गुरु सुमन पवार ने नियमित योग के लिए प्रेरित किया। इसमें स्पेशल चाइल्ड देव ऋषि ने भी योगाभ्यास कर दूसरों को प्रेरित किया। इसमें संग संग चलो बढ़ते रहो, योग सभी करते रहो योग एंथम पर सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन आदि प्रेरक योग आसनों का प्रदर्शन किया गया। स्वतंत्रता सेनानी डॉ. दरबारी लाल अस्थाना के पुत्र और वरिष्ठ रंगकर्मी पुनीत अस्थाना ने पिता के जीवन पर प्रकाश डाला।

सुमन ने पहना तीज क्वीन का ताज

डालीगंज जैन महिला मंडल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल महिलाएं।

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: डालीगंज जैन महिला मंडल की ओर से गुरुवार को इंदिरा नगर स्थित एक होटल में तीज उत्सव मनाया गया। इसमें महिलाओं ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।कार्यक्रम में डालीगंज क्षेत्र की प्रतिष्ठित अंजू जैन, छाया जैन, रिया जैन, अभिलाषा जैन, मीना जैन, पल्लवी जैन सहित अन्य महिलाओं ने भाग लिया। मीनू, प्रियंका और अभिलाषा ने समूह नृत्य की प्रस्तुत किया।

मनीष के संचालन में हाउजी, रैंप वॉक तथा कैटलॉग प्रेजेंटेशन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में सुमन जैन तीज क्वीन चुनी गईं। डांस में मीनू और प्रियंका को पुरस्कार मिला। सपना जैन, सुनीता जैन, प्रियंका जैन, बीना जैन और रागिनी जैन ने भाग लिया।

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

लखनऊ

माता-पिता समेत आठ लोगों ने किया आत्मदाह का प्रयास

विधानभवन गेट नंबर-4 के पास पेट्रोल उड़ेलते ही आत्मदाह निरोधी दस्ते ने पकड़ा, हजरतगंज पुलिस ने घूंघटेर पुलिस के किया सुपुर्द

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- परिवार का आरोप बाराबंकी पुलिस ने बेटे को हत्या में गलत तरीके से फंसाकर भेजा जेल
- एसपी बाराबंकी से लेकर सभी अधिकारियों के पास गए लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई

अमृत विचार: बाराबंकी में हत्या के आरोप में बेटे की गिरफ्तारी से नाराज माता-पिता ने परिवार के आठ सदस्यों के साथ विधानभवन गेट नंबर-4 के पास आत्मदाह का प्रयास किया। उनके साथ दो छोटे बच्चे भी थे। खुद पर पेट्रोल उड़ेलता मौके पर मौजूद आत्मदाह निरोधी दस्ते ने दौड़कर सभी को पकड़ लिया। उसके बाद पुलिस सभी को लेकर हजरतगंज कोतवाली पहुंची। पूछताछ के बाद सभी को बाराबंकी में घूंघटेर पुलिस के हवाले कर दिया है।

एएसपी सिटी बाराबंकी विकास चंद्र त्रिपाठी ने बताया कि 20 जून की देर रात घूंघटेर के बजगहनी गांव में खेत पर सो रहे 50 वर्षीय अरविंद लोघ की गला घोंटकर हत्या की गयी थी। जांच के दौरान बुधवार रात संतोष कुमार और उसके साथी बृजेश कुमार को गिरफ्तार कर हत्या में प्रयुक्त तार व बाइक बरामद कर ली थी। खुलासा हुआ कि संतोष ने अरविंद को अपनी चाची के साथ आपत्तिजनक हालत में देख लिया था। इसी के चलते योजना के तहत संतोष ने साथी संग मिलकर हत्या की थी।

पुलिस जीप में बैठे पीड़ित परिवार के लोग। अमृत विचार

गुरुवार को पुलिस ने संतोष व बृजेश को जेल भेज दिया।

वहीं, गुरुवार दोपहर करीब 3 बजे पांच महिला, तीन पुरुष व दो बच्चे विधानभवन गेट नंबर-4 के पास पहुंचे। उनके पास दो बोतल थी। एक महिला ने बोतल खोलकर अपने व दो अन्य महिलाओं पर उड़ेल लिया। यह देख आत्मदाह निरोधी दस्ता ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया। इसके बाद सभी को हजरतगंज थाने लेकर आई। पूछताछ में सभी ने अपना नाम उर्मिला देवी (62), उनके पति जानकी प्रसाद, बेटा अंकित कुमार, उसकी पत्नी पूनम देवी, पुष्पा देवी, रामदुलारी निवासी बजगहनी घूंघटेर, सरिता भारती निवासी ग्राम रसूलपुर कायस्थ जानकीपुरम और पंकज निवासी धतिंगरा मड़ियांव बताया।

बुजुर्ग उर्मिला व जानकी प्रसाद ने बताया कि बाराबंकी पुलिस ने बेटे संतोष को हत्या के आरोप में गलत जेल भेज दिया। वे सभी लोग एसपी बाराबंकी से लेकर सभी अधिकारियों के पास गए लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई। इसी के चलते यहां पर आत्मदाह करने के लिए आए थे। इंस्पेक्टर हजरतगंज विक्रम सिंह ने बताया कि कार्रवाई का आश्वासन देते हुए घूंघटेर थाने की पुलिस को सुपुर्द कर दिया गया है।

सिटी ब्रीफ

मंगेतर की फोटो वायरल करने की दी धमकी

अमृत विचार, काकोरी: काकोरी इलाके में रहने वाली युवती ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि परिवारीजनों ने उनका विवाह बंथरा ग्राम शिवपुरा निवासी रोहित से तय किया था। 29 नवंबर 2024 को बरीक्षा में पीड़िता के पिता ने एक लाख नगद और करीब 4 लाख रुपये खर्च किए। पीड़िता के मुताबिक सगाई होने के बाद आरोपित मंगेतर उसके पिता राजकुमार पांच लाख रुपये और बुलेट बाइक की मांग करने लगे। आरोप है कि मांग पूरी न करने पर आरोपित मंगेतर ने पीड़िता की फोटो एडिट कर सोशल मीडिया पर वायरल करने और कहीं और शादी न होने की धमकी दी। पीड़िता ने मंगेतर, उसके पिता और सास खजाना, ननद सेजल के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

अंसल निदेशकों पर एक और रिपोर्ट दर्ज

अमृत विचार, लखनऊ: हाईटेक आवासीय योजना के नाम पर करोड़ों की ठगी करने वाले अंसल निदेशकों पर एक और रिपोर्ट दर्ज की गयी है। पीड़ित ने प्लॉट के नाम पर 29.91 लाख हड़पने का आरोप लगाया है। इंस्पेक्टर सुशांत गोल्फ सिटी उपेंद्र सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। इटावा के सिविल लाइन निवासी संजीव कुमार यादव ने बताया कि अक्टूबर 2010 में उन्होंने व उनकी परिचित रोहनी खुराना सेठी ने संयुक्त रूप से अंसल कंपनी में सुशांत गोल्फ सिटी स्थित साइट में दो प्लॉट बुक कराए थे। दोनों ने कंपनी में 29.91 लाख भुगतान भी किया था। पीड़ित का कहना है कि संपर्क करने पर अंसल निदेशक प्रणव अंसल व कर्मचारियों ने जल्द रजिस्ट्री कर कब्जे का आश्वासन दिया। पीड़ित ने बताया कि 2024 में उन्हें पता चला कि जो प्लॉट बुक कराए थे, वे विवादित स्थल पर हैं।

पेट्रोल पंप पर हंगामा करने वाली महिला पर शांतिभंग की कार्रवाई

अमृत विचार, लखनऊ: गोमतीनगर में पेट्रोल पंप पर लोगों से गाली-गलौज करने वाली महिला का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। वीडियो में एक महिला विकासखंड स्थित पंप पर ग्राहकों को चप्पल दिखा कर हंगामा करते नजर आई। गोमतीनगर पुलिस ने आरोपी महिला के खिलाफ शांतिभंग में कार्रवाई की है। इंस्पेक्टर बृजेश चंद्र तिवारी ने बताया कि विशालखंड निवासी पूजा कश्यप जनेश्वर मिश्र पार्क के पास चाय की दुकान लगाती हैं। बुधवार रात करीब 12 बजे वह पंप पर अपनी गाड़ी में पेट्रोल भराने पहुंची थी। इस बीच अन्य ग्राहक भी आ गए। ग्राहकों से पूजा का पहले अपनी गाड़ी में पेट्रोल भरवाने को लेकर विवाद हो गया था। इस पर पूजा चप्पल लोगों को दिखाते हुए गाली-गलौज और अभद्रता करने लगी। इस बीच किसी ने उसका वीडियो बना कर एक्स पर वायरल कर दिया।

वृद्धा को डिजिटल अरेस्ट कर 56 लाख ठगने वाले तीन गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- साइबर क्राइम थाने की टीम ने छह दिन में किया घटना का खुलासा

अमृत विचार: फर्जी सीबीआई अधिकारी बन 73 वर्षीया वृद्धा को डिजिटल अरेस्ट कर 56 लाख रुपये ठगने वाले गिरोह का पर्दाफाश हो गया है। इस गिरोह के तीन सदस्यों को साइबर क्राइम थाने की टीम ने बुधवार देर रात गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से दो मोबाइल, 14 डेबिट कार्ड और सात चेक बुक बरामद किया गया है।

इंस्पेक्टर साइबर क्राइम थाना बृजेश कुमार यादव के मुताबिक पकड़े गये आरोपियों में सुल्तानपुर के बल्दिराय स्थित डेंगुर तिवारी का अनुराग तिवारी, रायबरेली के मिल एरिया स्थित जवाहर विहार कालोनी का प्रखर प्रताप सिंह और अंबेडकरनगर आईटीआई का अनुपम सिंह शामिल हैं। इंस्पेक्टर के मुताबिक ऐशबाग निवासी 73 वर्षीय रीता को डिजिटल अरेस्ट कर साइबर जालसाजों ने 56 लाख रुपये ऐंठ लिए। जालसाज ने रीता को फोन कर बताया कि उनपर सीबीआई में एफआईआर दर्ज है। जेल भेजे जाने की धमकी से सहमी रीता को आरोपियों ने 22 दिन तक डिजिटल अरेस्ट रखा। आरोपियों ने धमकी दिया कि उनकी संपत्ति का 99 प्रतिशत हिस्सा सुप्रीम कोर्ट खाते में ट्रांसफर किया जाएगा। पीड़िता ने 18 जुलाई को साइबर क्राइम थाने में रिपोर्ट दर्ज कराया। इसके बाद टीम ने आरोपियों की तलाश शुरू की।

पुलिस की गिरफ्त में आरोपी।

मिक्सर की टक्कर से ट्रैक्टर पलटा, चालक की मौत

संवाददाता, निगोहां

- भागने के दौरान मिक्सर ट्रक चालक ने कार व दो युवकों को मारी टक्कर
- करीब चार किमी दूर घेरकर पकड़ा गया ट्रक, चालक व खलासी गिरफ्तार

अमृत विचार: थाना क्षेत्र में गुरुवार को मिक्सर ट्रक की टक्कर से ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसे में ट्रैक्टर के नीचे दबकर चालक की मौत हो गई। हादसे के दौरान मिक्सर ट्रक चालक सड़क किनारे खड़े दो युवकों और एक कार को टक्कर मारते हुए भाग निकला। करीब चार किमी दूर निगोहां टोल प्लाजा के पास पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लेकर चालक और खलासी को गिरफ्तार कर लिया है।

निगोहां के रत्तापुर निवासी रामप्रकाश उर्फ कल्लू (48) गुरुवार दोपहर एक मिस्त्री से ट्रैक्टर सही कराकर घर लौट रहा था। ट्रैक्टर के पीछे रोटावेटर बंधा था। दोपहर 3:30 बजे कस्बा स्थित सत्यनारायण इंटर कॉलेज के पास पीछे से एक मिक्सर ट्रक ने ट्रैक्टर में टक्कर मार दी। जिससे ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया। उसके नीचे दबने से रामप्रकाश की दर्दनाक मौत हो गयी।

टक्कर के बाद पलटा ट्रैक्टर, इनसेट में मृतक।

हादसे के बाद मिक्सर ट्रक चालक ने रफ्तार और बढ़ा दी। भागने के चक्कर में चालक ने सड़क किनारे खड़े गैस एजेंसी के कर्मचारी द्वारिका व भगवानपुर की उमरई को टक्कर मार दी दी। जिसमें दोनों लोग चोटिल हो गए। सीएचसी में उनका इलाज चल रहा है। वहीं, एक कार भी ट्रक की चपेट में आकर क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने पीछा कर टोल प्लाजा के पास से मिक्सर ट्रक को कब्जे में लेकर प्रतापगढ़ अंतू निवासी एखलाक और खलासी अरबाज को पकड़ लिया है।

ट्रैक्टर के नीचे रामप्रकाश करीब आधे घंटे तक दबे रहे। इस दौरान आसपास के लोग और राहगीर जुटे लेकिन मोबाइल पर वीडियो बनाते रहे। सूचना पर पहुंची निगोहां पुलिस ने वहां जुटे करीब 40 लोगों की मदद से ट्रैक्टर को सीधा करके रामप्रकाश को बाहर निकाल कर सीएचसी भेजवाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिवार में पत्नी गीता देवी, बेटा हिमांशु, दीपांशु यादव और एक शादीशुदा बेटी है। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मृतक के परिवार को आर्थिक सहायता व मुआवजा देने की मांग की है।

12 लाख की चेन व 10 लाख रुपये हड़पने का आरोप

अमृत विचार, लखनऊ: विकासनगर स्थित मणप्पुरम फाइनेंस के पूर्व और वर्तमान शाखा प्रबंधक व अन्य कर्मियों पर धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज की गयी है। आरोप है कि पीड़ित ने गिरवी रखी 12 लाख की आठ चेन और एकमुश्त अदायगी के 9.94 लाख रुपये हड़पे हैं। कोर्ट के निर्देश पर विकासनगर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है। एसओ विकासनगर आलोक कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। मूल रूप से गोरखपुर निवासी अमित कुमार त्रिपाठी गोमतीनगर के विकल्पखंड-3 में रहते हैं। उन्होंने बताया कि 22 जुलाई 2024 को उन्होंने विकासनगर स्थित मणप्पुरम फाइनेंस लिमिटेड की शाखा में 12 लाख की सोने की आठ चेन (173 ग्राम) गिरवी रख कर एक साल के लिए 8,58,786 रुपये का लोन लिया था। उस समय शाखा प्रबंधक अनुराग सिंह थे। जनवरी माह तक पीड़ित ने लोन की किस्त भरी थी। 11 फरवरी 2025 को अमित ने परिचित सराफ दिनेश सोनी से 9,92,486 रुपये लेकर कंपनी में जमा करके लोन खत्म कर दिया था। जब पीड़ित परिचित के साथ कंपनी में गिरवी चेन छुड़ाने पहुंचे तो उन्हें वहां शाखा प्रबंधक पंकज द्विवेदी मिले। अमित का आरोप है कि जब पंकज ने उन्हें चेन लौटाईं तो वे नकली थे। पीड़ित ने डॉयल-112 पर सूचना दी। जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिसकर्मियों की मौजूदगी में शाखा प्रबंधक पंकज द्विवेदी व अन्य कर्मचारियों ने जमा किए गए जेवर व वापस की गयी चेन में भिन्नता मिली। प्रबंधक ने कार्रवाई न करने और जल्द ही असली चेन लौटाने की बात कही। इसके बाद भी चेन वापस नहीं की गयी। अमित का आरोप है कि पूर्व शाखा प्रबंधक अनुराग सिंह, पंकज व अन्य कर्मचारियों ने उनकी सोने के चेन और 9.94 लाख रुपये हड़प लिए। पीड़ित ने थाने व पुलिस अधिकारियों के पास शिकायत की। सुनवायी न होने पर कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। निर्देश पर पुलिस ने धोखाधड़ी व आपराधिक की रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

इवांका इंफ्रा का निदेशक ठगी में गिरफ्तार

अमृत विचार, लखनऊ: प्लॉट का झांसा देकर दंत चिकित्सक से करीब साढ़े दस लाख की धोखाधड़ी करने वाले रियल एस्टेट इवांका इंफ्रा के निदेशक को गोमतीनगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मूल रूप से संतकबीरनगर निवासी आरोपी प्रद्युमन शुक्ल गोमतीनगर के विनीतखंड का रहने वाला है। इंस्पेक्टर गोमतीनगर बृजेश चंद्र तिवारी ने बताया कि 27 फरवरी को अलीगंज निवासी डाक्टर विजय विश्वकर्मा ने प्लॉट के नाम पर धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज करायी थी। आरोपी के खिलाफ गोमतीनगर, सीतापुर व संतकबीरनगर में धोखाधड़ी के चार मामले दर्ज हैं।

एचके इंफ्राविजन पर सात और रिपोर्ट दर्ज

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- मोहनलालगंज पुलिस ने शुरू की जांच

अमृत विचार: सैन्यकर्मियों को कम कीमत पर प्लॉट का झांसा देकर करोड़ों की ठगी करने वाली रियल एस्टेट कंपनी एचके इंफ्रा विजन पर सात और रिपोर्ट मोहनलालगंज कोतवाली में दर्ज की गई है। झारखंड, बिहार, राजस्थान, बलिया, गाजीपुर व कानपुर के पीड़ित मेजर, सैन्यकर्मियों ने 1.03 करोड़ की धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। पीड़ितों ने बिल्डर प्रमोद उपाध्याय व विनोद उपाध्याय के साथ ही उनके तीसरे भाई और पत्नियों को भी आरोपी बनाया है। एसीपी मोहनलालगंज रजनीश वर्मा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

गाजीपुर जिले के रहने वाले मेजर रमाकांत चौरसिया की मुलाकात 2017 में एचके इंफ्रा विजन प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक विनोद कुमार उपाध्याय और उनके भाई प्रमोद कुमार से हुई। मोहनलालगंज के मऊ स्थित साइट पर प्लॉट पसंद आने पर पीड़ित ने पत्नी के नाम से प्लॉट बुक कर 8 लाख रुपये दिए थे। इसके बाद भी न तो उन्हें प्लॉट मिला और न ही रुपये वापस हुए।

वहीं, झारखंड के रांची निवासी सैन्यकर्मी राजेश कुमार सिन्हा ने पत्नी श्वेता और अपने नाम से प्लॉट बुक कर 16 लाख रुपये जमा किए थे। उधर, बिहार के मधुबनी निवासी रिटायर्ड सैन्यकर्मी राजकुमार महतो ने 26 लाख, बलिया निवासी सैन्यकर्मी कमलेश कुमार यादव से 10 लाख, वहीं के रहने वाले एयरफोर्स में तैनात अखिलेश कुमार वर्मा से 12.64 लाख और कानपुर के गांधीग्राम निवासी शालिनी ने प्लॉट के एवज में 16.25 लाख रुपये जमा किए थे। इसके बाद प्लॉट नहीं मिला।

इसी तरह राजस्थान निवासी कन्हैया कुमार पांडेय ने 2018 में प्लॉट बुक कर 13.20 लाख रुपये दिए थे। इसके बाद भी प्लॉट नहीं मिला। पुलिस ने निदेशक प्रमोद उपाध्याय, उनकी पत्नी सीमा, भाई विनोद, उनकी पत्नी पिंकी, भाई प्रभात कुमार और अमित तिवारी के खिलाफ धोखाधड़ी समेत गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

बिना टेंडर काम कराने के मामले में कुलपति हुईं थीं बर्खास्त

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- भातखंडे संगीत विवि में 3.13 करोड़ की हेराफेरी का मामला

अमृत विचार: भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय के में 3.13 करोड़ के बिना टेंडर काम करा लिया गया। इसका भुगतान भी कर दिया गया। हेराफेरी 2017-18 सत्र में हुई थी। मामले की कुलाधिपति (राज्यपाल) ने जांच कराई थी। जांच में तत्कालीन कुलपति प्रो. श्रुति सडोलीकर को दोषी पाया गया। उनको बर्खास्त कर दिया गया था। वहीं कुलसचिव तत्कालीन कुलसचिव डॉ. लवकुश द्विवेदी ने 5 मार्च 2021 को कैसरबाग थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। जांच सीआईडी (पूर्व में सीबीसीआईडी) कर रही है। जांच अधिकारी ने जून 2025 को इस मामले में कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल कर दिया था।

इस मामले में सीआईडी की टीम ने मंगलवार देर रात को भातखंडे विश्वविद्यालय के शिक्षक ज्ञानेंद्र दत्त बाजपेई, मनोज कुमार मिश्रा के अलावा निर्माण कार्य कराने वाली फर्मों के संचालक मोहम्मद शोएब, कुंदन सिंह, सुरेश सिंह, विनोद कुमार मिश्रा और जुगल किशोर वर्मा को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, कुलपति प्रो. श्रुति ने इस मामले में कोर्ट से अरेस्ट स्टे ले रखा है।

बिहार भेजी जा रही अंग्रेजी शराब की खेप जब्त

संवाददाता, पीजीआई

अमृत विचार: बिहार विधानसभा चुनाव से पहले शराब तस्करी पर लखनऊ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। पीजीआई पुलिस ने बुधवार देर रात दो तस्करों को गिरफ्तार कर फर्जी नंबर प्लेट लगी पिकअप गाड़ी में लदी 162 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद की है। पकड़ी गई शराब की कीमत करीब 18 लाख रुपये बताई जा रही है। डीसीपी साउथ निपुण अग्रवाल ने पुलिस टीम को 10 हजार रुपये के पुरस्कार की घोषणा की है।

डीसीपी ने बताया कि सूचना मिली कि डलौना क्रॉसिंग के पास किसान पथ की सर्विस लाइन पर एक संदिग्ध पिकअप खड़ी है।

पकड़े गए शराब तस्कर।

शराब की खेप।

सर्विलांस व पुलिस की संयुक्त टीम ने घेराबंदी कर तलाशी ली तो गाड़ी में पीछे और ऊपर कैरेट लगाकर छिपाया गया केबिन मिला। उसके अंदर से पुलिस ने शराब की पेटियां बरामद की। पकड़े गए आरोपियों में राजस्थान जयपुर का रहने वाला सोनू बागरिया और सीताराम बागरिया हैं।

पिकअप की प्लेट पर यूपी का फर्जी रजिस्ट्रेशन नंबर पड़ा था। जांच में रजिस्ट्रेशन टोंग निवासी प्रधान के नाम पर निकला। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि जयपुर निवासी कमल शरण उन्हें तस्करी के लिए शराब और गाड़ी देता है। इसके लिए उन्हें कमल शरण हर चक्कर पर प्रति व्यक्ति 7000 रुपये देता है। पिछले आठ माह से वे अलग-अलग गाड़ियों में शराब की पेटियां लादकर जयपुर से आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे के रास्ते बिहार के हाजीपुर में जाकर तस्करी कर रहे हैं।

इंस्पेक्टर पीजीआई धीरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी कमल शराब पहुंचने से पहले एजेंट लालूराम से बात तय कर लेता था। तय स्थान पहुंचने पर लालूराम शराब लदा वाहन लेकर चला जाता था। फिर एक दो घंटे बाद गाड़ी खाली करके दोनों तस्करों को लौटा देता था।

बरामद शराब पर केवल राजस्थान में विक्रय हेतु मान्य लिखा था। इंस्पेक्टर ने बताया कि तस्कर एमआरपी मिटाकर इस शराब को बिहार में तीन गुना दाम पर बेचते थे। पुलिस आरोपी कमल शरण, लालूराम व अन्य आरोपियों की तलाश में जुट गयी है।

पॉकेटमार गिरोह के तीन और साथी गिरफ्तार

अमृत विचार, लखनऊ: फर्रुखाबाद से लखनऊ आकर पॉकेटमारी करने वाले गिरोह के तीन और साथियों को महानगर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों के पास से रुपये और एक बाइक बरामद हुई है। आरोपियों पर 25-25 हजार का इनाम घोषित था। वहीं, पुलिस ने बुधवार देर रात मुठभेड़ में गोली लगने से घायल बदमाश कुलदीप को गुरुवार को जेल भेज दिया है। एडीसीपी मध्य ममता रानी चौधरी ने बताया कि 19 जुलाई को गोंडा निवासी सुधीर मिश्र की जेब काटकर 47,500 रुपये चोरी हुए थे। सीसी फुटेज की मदद से आरोपियों की पहचान हुई। उसके बाद बुधवार देर रात पुलिस ने अकबरनगर सौमित्र वन के पास मुठभेड़ के दौरान कुलदीप को पकड़ा था।

ट्रेवेल्स की आड़ में कार हड़पने वाला गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: टूर एंड ट्रेवेल्स कारोबार में गाड़ी लगवाने का झांसा देकर 14 लोगों की लग्जरी गाड़ियां हड़पने वाले आरोपी को गुडंबा पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के पास से एसयूवी व नौ अन्य कार बरामद हुई हैं। इंस्पेक्टर प्रभातेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी गुडंबा के आदिल नगर स्थित वसुंधरा विहार निवासी राजेश गुप्ता है। वह मूलरूप से बलिया के भृगु आश्रम राजपूत न्योरी का रहने वाला है। 21 जुलाई को कल्याणपुर निवासी पवन तिवारी ने धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। बताया था कि 30 नवंबर 2024 राजेश से मुलाकात हुई थी। राजेश ने अपना टूर एंड ट्रेवेल्स का कारोबार बता उनकी कार भी ट्रेवेल्स में लगवाने का झांसा दिया था। पीड़ित पवन के साथ ही परिचित प्रवेश तिवारी, धीरज, शुभम, प्रवेश लोधी, दुर्गेश, आलोक प्रताप सिंह, बृजेश सिंह, सरोज सिंह, संजय यादव, भानु प्रताप सिंह, सुनील कुमार शुक्ला, इंद्रपाल सिंह व आकांक्षा शुक्ला ने अपनी कार राजेश को दी थी। इसके बाद आरोपियों ने न ही किराया दिया और न ही कार वापस की। पीड़ितों ने जब विरोध किया तो आरोपी राजेश, प्रभात, राकेश, कन्हैया, अमित व शिव प्रकाश ने उन्हें धमकाना शुरू कर दिया।

आरोपी से बरामद कारें।

जांच के दौरान गुरुवार को टेढ़ी पुलिया के पास स्थित एमडी पैलेस के पास से राजेश गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में आरोपी राजेश ने बताया कि पीड़ितों से हड़पी गई गाड़ियों को बिहार ले जाकर उन्हें कटवाने की योजना बना रहा था। आरोपी पहले एक बैंक में एजेंट की नौकरी करता था। जांच में पता चला कि दो गाड़ियां मऊ में है। पुलिस की एक टीम वहां के लिए रवाना कर दी गयी है।

दुष्कर्म के आरोपी ने घर में फंदा लगाकर की आत्महत्या

अमृत विचार, लखनऊ: इंस्पेक्टर नाका वीरेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि इंदिरानगर तकरोही निवासी रोहित यादव (35) नाका के मातादीन हाता में पत्नी ब्यूटी पार्लर संचालिका पूजा, बेटी रिया और बेटे के साथ रहता था। रोहित के खिलाफ मानकनगर थाने में दुष्कर्म का मामला दर्ज था। करीब एक वर्ष सजा काटने बाद कुछ दिनों पहले ही जमानत पर छूटकर आया था। पत्नी पूजा ने बताया कि बुधवार को दुष्कर्म पीड़िता ने कॉल कर 12 लाख रुपये की मांग की थी। पूजा ने यह बात रोहित को बताई। इस पर पति-पत्नी के बीच विवाद शुरू हो गया। बात बढ़ने पर पूजा बेटी रिया को लेकर ब्यूटी पार्लर चली गई। रात करीब 10 बजे दरवाजा नहीं खुलने पर स्थानीय लोग दीवार फांदकर घर के अंदर पहुंचे। कमरे में रोहित फंदे के सहारे लटक रहा था।

अपराध

अर्जुनगंज से गिरफ्तार 15 जालसाजों से पूछताछ में कई राज आये सामने

दुबई में बैठे सरगना के इशारे पर करते थे ठगी

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- सरगना और यूपी हेड के लिए लुकआउट नोटिस का तैयारी

अमृत विचार: ऑन लाइन सट्टा खिलाकर लोगों से करोड़ों की ठगी करने के मामले में 15 आरोपियों को बुधवार को गिरफ्तार किया गया था। इस गिरोह के सदस्यों साइबर थाने और क्राइम सेल की टीम ने पूछताछ की। आरोपियों ने कई ऐसे राज उगले जिससे टीम खुद अचंभित रह गई। गिरोह सट्टे से अधिक मुनाफे का लालच देकर लोगों से करोड़ों रुपये निवेश कराता था। इस ठगी के 80 प्रतिशत रकम को क्रिप्टो करेंसी में बदलकर चीन और दुबई भेजते थे। गिरोह का सरगना गनी उर्फ विशाल दुबई में बैठा है।

इंस्पेक्टर साइबर क्राइम बृजेश कुमार यादव के मुताबिक ठगी में गिरोह जिस एप का प्रयोग करता था वह चीन का है। गिरोह का सरगना गनी उर्फ विशाल दुबई में बैठकर देश के कई राज्यों में नेटवर्क चला रहा है। साइबर थाने की टीम अब सरगना गनी उर्फ विशाल यादव और गिरोह के यूपी हेड राजा सिंह (लखनऊ निवासी) के लिए लुकआउट नोटिस जारी कराने की तैयारी कर रही है। अधिकारियों को आशंका है कि साइबर थाने और साइबर क्राइम सेल की संयुक्त टीम की अर्जुनगंज फ्रेंड्स कॉलोनी में की गई कार्रवाई के बाद यूपी हेड भी विदेश भाग गया है। छापेमारी कर गिरोह के 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

इंस्पेक्टर साइबर थाना ब्रजेश कुमार यादव के मुताबिक गिरफ्तार कर जेल भेजे गए जालसाजों से पूछताछ में कई जानकारियां मिली हैं। उसके आधार पर गिरोह के अन्य लोगों का पता लगाया जा रहा है। सरगना विशाल उर्फ गनी मध्यप्रदेश का रहने वाला है। उसके बारे में जानकारी मिली है कि वह दुबई में है। गिरोह ठगी की 80 फीसद रकम दुबई और चाइना भेजता था। 20 फीसद अपने पास रखता था। तीन से पांच फीसद कमीशन गिरोह किराए के खातेदारों को देते थे। उन्हीं खातों में ठगी की रकम ट्रांसफर करते फिर एटीएम के जरिए निकाले अथवा क्रिप्टो से बदलकर विदेश भेज देते थे। गिरोह के लोग अन्ना रेड्डी, फेयर प्ले और 99 एक्सचेंज नाम से फर्जी लिंक बना रखा है। लिंक के जरिए यूपी के विभिन्न जनपदों समेत अन्य राज्यों के लोगों को जोड़कर उनसे ठगी करते थे।

25 करोड़ प्रतिमाह साइबर ठग भेजते थे मुंबई, हवाला से जुड़े तार

अमृत विचार, लखनऊ: स्मृति अपार्टमेंट से बुधवार को जेल भेजे गए 16 साइबर ठगों से हुई शुरुआती पूछताछ, लैपटॉप व डायरी में गुडंबा पुलिस को कई अहम जानकारियां मिली हैं। 24 घंटे की जांच से यह साफ है कि साइबर ठगों के कनेक्शन गुजरात, छत्तीसगढ़ के साथ ही मुंबई व पुणे के बड़े व्यापारियों से थे। प्रतिमाह ठगी के करीब 25 करोड़ रुपये हवाला के माध्यम से मुंबई भेजते थे। उसके बाद रकम दुबई भेज दी जाती थी। इसके साथ ही गुडंबा पुलिस यह पता कर रही है कि जिस फ्लैट में साइबर ठग रहते थे, वह किसके नाम पर आवंटित था। पुलिस सूत्रों की मानें तो बरामद लैपटॉप को साइबर टीम खंगाल रही है। कई आईपी एड्रेस को पुलिस सर्च करने में जुटी है। पुलिस जालसाजों के साथ ही उन कारोबारियों के भी बैंक खाते खंगाल रही है। पुलिस यह पता करने में जुटी है कि कितने रुपये और महीने में कब-कब भेजे गए। पुलिस को अबतक 100 करोड़ से अधिक की ठगी और इन रुपयों को हवाला में खपाने के साक्ष्य मिले हैं। गिरोह टेलीग्राम से बेटिंग एप के माध्यम से लोगों को ग्रुप में जोड़कर ठगी करता था। पहले जाल में फंसे लोगों के द्वारा छोटी रकम लगाए जाने पर उन्हें जितवाता था। बड़ी रकम लगने पर हरवा देता और रकम तत्काल किराए के खातों में ट्रांसफर कर देता था।

रिटायर्ड डाककर्मी से ऐंठे 4.97 लाख

अमृत विचार, सरोजनीनगर: व्हाट्सएप कॉल पर एंटी टेरेरिस्ट स्क्वॉयड (एटीएस) का अधिकारी बनकर साइबर जालसाज ने रिटायर्ड डाककर्मी दिवाकर प्रकाश जायसवाल को तीन घंटे तक डिजीटल अरेस्ट रखा। आतंकी संगठन से जुड़ा होने और गिरफ्तारी का डर दिखाकर बुजुर्ग से 4.97 लाख रुपये ऐंठ लिए। ठगी का एहसास होने पर पीड़ित ने साइबर सेल में शिकायत करने के बाद सरोजनीनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज करायी है।

सरोजनीनगर के एलडीए कॉलोनी सेक्टर-एफ निवासी दिवाकर प्रकाश जायसवाल ने बताया कि 13 जुलाई की दोपहर करीब 12 बजे उनके पास अनजान नंबर से व्हाट्सएप कॉल आई। फोन करने वाले ने उन्हें खुद को पुलिस अधिकारी बताया। कहा कि तुम आतंकी संगठन से जुड़े हुए हो। इसलिए पुलिस की एक स्पेशल टीम तुम्हें गिरफ्तार करने के लिए रवाना हो गयी है। तुम लगातार सर्विलांस के रडार पर हो। यह सुनते वे घबरा गए। पीड़ित ने आरोप को गलत बताया। कहा कि वे रिटायर्ड हैं। लगातार एक ही सवाल बार-बार पूछकर मानसिक दबाव बनाया। उसके बाद गिरफ्तारी से बचने के एवज में 4,97,456 रुपये ट्रांसफर करा लिए। इसके बाद जालसाज ने कॉल काट दी। हालत सामान्य होने पर पीड़ित ने परिचितों से बात की तब उन्हें ठगी की जानकारी हुई। इंस्पेक्टर सरोजनीनगर राजदेव राम प्रजापति ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर साइबर सेल की मदद से जांच की जा रही है।

सिटी ब्रीफ

लविवि में परास्नातक छात्रों को मिला हॉस्टल

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के विभिन्न छात्रावासों में आवंटन प्रक्रिया के अंतर्गत कैलाश छात्रावास में एमए, एमकॉम, एमएससी, एमपीएड, एमवीए, एमएड, बीएड, तृतीय सेमेस्टर, बीकॉम पंचम सेमेस्टर, बीपीएड तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को आवंटन किया गया। तिलक छात्रावास में बीए तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर, बीकॉम तृतीय सेमेस्टर, बीवीए तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को कक्ष आवंटित किया गया। चंद्रशेखर आज़ाद छात्रावास में बीएससी तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर की छात्राओं का आवंटन किया गया। आज आवंटित विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल फ़ीस जमा करने की अंतिम तिथि 01 अगस्त है। चीफ प्रोवोस्ट प्रो. अनूप कुमार सिंह ने बताया कि आवंटन संबंधी सूचना एवं लिस्ट विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। हॉस्टल में कक्ष आवंटन के समय माता पिता तथा स्थानीय संरक्षक को साथ लाना अनिवार्य है।

डाल्फिन संरक्षण के लिए जागरूक किया जाएगा

अमृत विचार, लखनऊ : सरकारी विद्यालयों में छात्रों को डाल्फिन संरक्षण के लिए जागरूक किया जाएगा। इस संबंध में संयुक्त शिक्षा निदेशक बेसिक गणेश कुमार ने बताया कि शिक्षा मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग इसके लिए निर्देश जारी किए गए है। इसके तहत विद्यालय के समस्त छात्रों द्वारा डाल्फिन संरक्षण की शपथ दिलाने, कक्षाकक्ष में संबंधित वीडियो दिखाने, रैली तथा नुक्कड़ नाटक आयोजित करने, छात्रों को नजदीकी डाल्फिन साईट्स का भ्रमण कराने और कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के बीच डाल्फिन संरक्षण थीम पर पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित कराने के निर्देश दिए गए हैं।

सीएएल का चुनाव कल, मैच स्थगित

अमृत विचार, लखनऊ : क्रिकेट एसोसिएशन लखनऊ (सीएएल) की देखरेख में आयोजित किये जा रहे क्रिकेट के विभिन्न टूर्नामेंट के मुकाबले गुरुवार से स्थगित कर दिये गये। अब ये मुकाबले 26 जुलाई के बाद खेले जायेंगे। सीएएल की वार्षिक आम सभा की बैठक शनिवार को होगी। इस बैठक से सीएएल की नई कार्यकारिणी गठित की जायेगी। नई कार्यकारिणी के लिए विभिन्न पदों के लिए चुनाव होने है। इन पदों के लिए कई उम्मीदवार हैं। इनमें भी सीएएल के अध्यक्ष और सचिव पद के लिए खड़े प्रत्याशियों पर सभी की निगाहें लगी हुई है। चुनाव के लिए गुरुवार को भी तमाम प्रत्याशियों ने वोट के लिए अपने सीएएल के वोटरों से संपर्क किया गया। चुनाव से जुड़े लोगों के अनुसार शहर के विभिन्न क्रिकेट अकादमियों और क्लबों से जुड़े लोग चुनाव में अपने वोट बैंक के लिए एक-दूसरे से संपर्क में व्यस्त है। ऐसे में सभी मुकाबले स्थगित किये गए हैं।

विद्यार्थी ही करेंगे भारत को विकसित : जयवीर

66 मेधावियों को महाविद्यालय के स्थापना दिवस पर किया गया सम्मानित

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

मेधावी विद्यार्थियों के साथ पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह व कॉलेज के प्राचार्य। अमृत विचार

अमृत विचार: नेशनल पीजी कॉलेज में 51वें स्थापना दिवस व समावर्तन संस्कार समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की एलुमिनाई एसोसिएशन द्वारा किया गया। समारोह का शुभारंभ पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने कहा कि सांस्कृतिक और महाविद्यालय की गतिविधियों को पर्यटन विभाग के साथ जोड़ कर कार्य किया जाए। महाविद्यालय को बदलाव के समय में आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि नेशनल पीजी कॉलेज 51वें वर्ष की यात्रा में नैक ए ग्रेड जैसी उपलब्धियां प्राप्त कर वटवृक्ष बन गया है।

कॉलेज के प्राचार्य प्रो. देवेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि स्वायत्ता प्राप्त महाविद्यालय होने के कारण समय पर कक्षाएं प्रारंभ हो चुकी हैं। महाविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने अप्रैल 2025 में पर्यटन विभाग के साथ मिलकर संगीत नाटक अकादमी में सफलतापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया। वाणिज्य विभाग की विभागाध्यक्ष और एलुमिनाई एसोसिएशन की संयोजक प्रो. ज्योति भार्गव ने कहा कि एलुमिनाई हमारे महाविद्यालय का अहम हिस्सा हैं।

समारोह में 66 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कला, वाणिज्य, प्रबन्ध, विज्ञान, बीवाक एवं बीएजेएमसी संकाय व परास्नातक संकाय में श्रेण्ठतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं शिप्रा तिवारी, भाग्यश्री, रितु तिवारी, गुरनीत कौर, माही गुप्ता, सानिया सिद्धीकी, आयशा सिद्धीकी, पाटला, वंशिता रस्तोगी, सिमरन कन्नौजिया, रौनक मौर्या, रिया यादव, बालेंन्दु मिश्रा, प्रिंसी यादव, शिवांगी मिश्रा, अनुभूति तिवारी, जैनब एहसान, आस्था मनोचा, मुदिता तिवारी, पूर्णिमा यादव, रिया गुप्ता और मनीषा सिंह को स्वर्ण पदक, प्रमाण पत्र एवं धनराशि देकर सम्मानित किया गया। पूर्व छात्रा और वर्तमान में सेंट्रल बोर्ड आफ इनडॉयरेक्ट टैक्सेज, वित्त मंत्रालय में अतिरिक्त सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत प्रिया सेठी को नेशनल गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

वार्षिक पत्रिका का हुआ विमोचन

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अभिव्यक्ति का विमोचन किया गया। वहीं, ई-जर्नल एनपीजीसी इंटेलैक्टस का शुभारंभ भी किया गया। इस अवसर पर एनएसएस के छात्र कार्तिकेय दीक्षित, अंकिता रस्तोगी, रोवर्स रेंजर्स से उदय सिंह चैहान, शालिनी वर्मा और स्पोर्टस के लिये निखिल सिंह और खुशी रहेजा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. समकृष्ण जायसवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. नेहाश्री श्रीवास्तव ने किया।

डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल पर व्याख्यानमाला शुरू

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग में डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल स्मृति व्याख्यान माला का शुभारंभ हुआ। बड़थ्वाल भारत में हिंदी के प्रथम डीलीट के नाते जाने जाते हैं। बड़थ्वाल हिंदी व आधुनिक भारतीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय में शिक्षक रहे।

24 जुलाई को उनकी पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में आयोजित इस व्याख्यान माला में 50 से अधिक शोधार्थी, विभाग के शिक्षकों प्रो. पवन अग्रवाल, प्रो. रश्मि कुमार, प्रो. अलका पांडे, प्रो. हेमांशु सेन, डॉ. ममता तिवारी, डॉ. अनुपम पटेल डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह, डॉ. सीमा यादव सहित भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आरपी गंगवार व लखनऊ के प्रतिष्ठित कॉलेज महाराजा बिजली पासी पीजी कॉलेज की डॉ. रचना भी उपस्थित थे।

बीबीएयू के आरसीए छात्रावास में हुआ पौधरोपण

अमृत विचार, लखनऊ : बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के आरसीए पुरुष छात्रावास में हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्रावास के एडमिनिस्ट्रेटिव वार्डन डॉ. गोपाल दत्त एवं वार्डन डॉ. शैलेन्द्र यादव ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस अवसर पर छात्रावास के छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर आम, जामुन, अमरूद और बेल जैसे पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर छात्रों ने न सिर्फ पौधरोपण किया बल्कि इन पौधों की देखभाल और संरक्षण का जिम्मा भी स्वयं उठाने का संकल्प लिया।

प्रदर्शनी विज्ञान में गहरी रुचि जगाती है : राकेश

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- इंस्पायर मानक जिला स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता 2024-25 का हुआ समापन

अमृत विचार: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान द्वारा आयोजित इंस्पायर मानक जिला स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता 2024-25 का गुरुवार को समापन हो गई।

प्रतियोगिता के समापन समारोह पर जिला विद्यालय निरीक्षक ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनी न केवल विज्ञान में गहरी रुचि जगाती हैं, बल्कि प्रयोगों, नवाचारों, विचारों और खोजों के माध्यम से समग्र सोच और तर्क क्षमता विकसित करने के सूक्ष्म अवसर भी प्रदान करती हैं। मण्डलीय विज्ञान प्रगति अधिकारी, लखनऊ मण्डल डॉ दिनेश कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में कुल चयनित 281 मॉडलों के सापेक्ष 161 नवाचारी मॉडलों को शो केश किया गया।

इस अवसर पर एनआईएफ की तरफ से पर्यवेक्षक के रूप में डॉ. नवनीत एवं डॉ. अभिषेक प्रतिभाग किया गया। निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. इंदु वर्मा, डॉ. दिलीप कुमार, डॉ. बलराम प्रजापति, डॉ. वंदिता, डॉ. शिवानी, डॉ. विश्वास कुमार पाण्डेय, डॉ. रातेंद्र सिंह, डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. एच. के. द्विवेदी एवं डॉ डीबी सिंह उपस्थित रहे।

स्कूल विलय के खिलाफ एनएसयूआई का प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

प्रदर्शनकारी छात्रों को रोकते पुलिसकर्मी व नारे लगाते छात्र। अमृत विचार

अमृत विचार: नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) के कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को निशातगंज स्थित बेसिक शिक्षा निदेशालय का घेराव कर स्कूल विलय नीति के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। नाराज कार्यकर्ताओं ने मुख्यालय पर ताला लगाने की कोशिश की, जिस पर उनकी पुलिस से तीखी झड़प हो गई।

प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि सरकार की विलय नीति से गरीब और ग्रामीण इलाकों के बच्चों की शिक्षा बाधित होगी। एनएसयूआई कार्यकर्ता शुभम ने कहा कि यदि सरकार ने यह निर्णय वापस नहीं लिया तो पूरे प्रदेश में बड़ा आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि यह नीति गरीब और पिछड़े बच्चों को शिक्षा से वंचित करने की साजिश है। शुभम ने कहा कि पहले बच्चे अपने गांव या मोहल्ले के पास के स्कूल में पढ़ने जाते थे, लेकिन मर्जर के बाद उन्हें कई किलोमीटर दूर जाना पड़ेगा, जिससे बहुत से बच्चे पढ़ाई छोड़ देंगे। प्रदर्शन में राष्ट्रीय संयोजक प्रिंस प्रकाश, प्रदेश महासचिव शुभम खरवार, सुधांशु शर्मा, उपाध्यक्ष हर्षित शुक्ला, शोएब अली, अमित यादव, विशाल कुमार उपस्थित रहे।

सीसीआरएच-लविवि करेंगे पौधों का मानकीकरण

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

एमओयू के अवसर पर कुलपति व सीसीआरएच के अधिकारी। अमृत विचार

- लखनऊ विश्वविद्यालय और सीसीआरएच के बीच हुआ समझौता
- पादप आधारित औषधियों के औषधि मानकीकरण में अध्ययनों को बढ़ावा मिलेगा

अमृत विचार: केंद्रीय आयुष मंत्रालय के अंतर्गत शोध के लिए समर्पित संस्था केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) और लखनऊ विश्वविद्यालय ने औषधीय पौधों के मानकीकरण के लिए समझौता ज्ञापन किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय व सीसीआरएच के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक ने आपसी समझौता ज्ञापन का औपचारिक आदान-प्रदान किया। समझौते पर सीसीआरएच के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक और विश्वविद्यालय की कुलसचिव डॉ. भावना मिश्रा द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

इस समझौते के तहत सीसीआरएच और लखनऊ विश्वविद्यालय के मध्य समझौता ज्ञापन से पादप आधारित औषधियों के औषधि मानकीकरण में अध्ययनों को बढ़ावा मिलेगा। समझौता ज्ञापन के लिए सीसीआरएच मुख्यालय से समन्वयन डॉ. दिग्विजय वर्मा वैज्ञानिक और लखनऊ विश्वविद्यालय वनस्पति विज्ञान से डॉ. गौरी सक्सेना द्वारा किया गया। केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान लखनऊ के प्रभारी अधिकारी डॉ. लिपि पुष्पा, डॉ. रोजा वाराणसी, वैज्ञानिक-IV व डॉ. अमित श्रीवास्तव, वैज्ञानिक-II, प्रो. शालिनी श्रीवास्तव, प्रो. एसएन पाण्डेय, डॉ. प्रवीन गुप्ता और डॉ. कविता अरोड़ा मौजूद रहे।

पुनर्वास विवि में अंतिम तिथि से पूर्व ही आए दो गुना से अधिक आवेदन

अमृत विचार, लखनऊ : डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु आवेदन की प्रक्रिया प्रारंभ की गई थी जिसकी अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित की गई है। लेकिन अंतिम तिथि के पूर्व ही 24 जुलाई तक गैर सीयूईटी माध्यम से दोगुने से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। पिछले वर्षों की तुलना में इस वर्ष पुनर्वास विश्वविद्यालय में आवेदनों की संख्या में लगभग दो गुना इजाफा हुआ है। इस बार स्नातक स्तर पर गैर सीयूईटी माध्यम से 935 सीटों के सापेक्ष 1850 आवेदन प्राप्त हुए हैं। डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में स्नातक के सभी पाठ्यक्रमों में सीयूईटी के माध्यम से प्रवेश हेतु आवेदन की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। सीयूईटी के माध्यम से स्नातक में प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी 31 जुलाई के पहले विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर प्रवेश लिंक के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

शिक्षकों की ऑफलाइन तबादला सूची जारी करने के निर्देश

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- विशेष सचिव ने निदेशक और अपर निदेशक को भेजा पत्र

अमृत विचार: शासन के विशेष सचिव कृष्ण कुमार गुप्त ने गुरुवार को माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक और अपर निदेशक से अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के ऑफलाइन तबादला की प्रक्रिया पूरी करने के लिए कहा। विशेष सचिव ने जारी आदेश में कहा कि शिक्षकों के तबादले की पत्रावलियां जेडी और डीआईओएस की संस्तुति के बाद निदेशालय में आ चुकी हैं।

जन प्रतिनिधियों और शिक्षक संगठनों की ओर से तबादले के संबंध में भेजे गए पत्रों का संज्ञान लेकर प्रकरणों का निस्तारण करें। अन्यथा भविष्य में न्यायिक वाद उत्पन्न होने की प्रबल सम्भावना है। उप्र. माध्यमिक शिक्षक संघ (एकजुट) के प्रदेश अध्यक्ष सोहन लाल वर्मा का कहना है कि ऑफलाइन तबादला सूची जारी करने को लेकर 17 जुलाई को पार्क रोड स्थित निदेशालय में शिक्षक अनिश्चित कालीन धरने पर बैठ गए थे। बाद में अपर निदेशक सुरेन्द्र तिवारी ने संगठन के पदाधिकारियों से वार्ता कर 31 जुलाई तक तबादला सूची करने का लिखित आश्वासन दिया था।

वन मंत्री को स्मृति चिन्ह भेंट करतीं प्रधानाचार्य नीलम सिंह। अमृत विचार

पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों की भूमिका महत्वपूर्ण

अमृत विचार, लखनऊ : सीतापुर रोड स्थित महर्षि विद्या मन्दिर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पर्यावरण मंत्री डॉ. अरुण कुमार सक्सेना मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने विद्यालय प्रांगण में नीम और आम का पेड़ लगाकर पौधरोपण की शुरुआत की। इस मौके पर पर्यावरण मंत्री ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज एक व्यापक अभियान चलाकर पर्यावरण को बचाने की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा हम सभी का दायित्व है। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा प्रकृति एवं पर्यावरण पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक अनूप श्रीवास्तव एवं प्रधानाचार्य नीलम सिंह सहित विद्यालय के अन्य शिक्षक व छात्र मौजूद रहे।

स्कूलों की निरीक्षण व्यवस्था में होगा बदलाव

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- ऑनलाइन उपस्थिति महत्वपूर्ण हिस्सा होगी

अमृत विचार: स्कूलों का निरीक्षण व्यवस्था में बड़ा बदलाव होगा। जिसमें ऑनलाइन उपस्थिति महत्वपूर्ण हिस्सा होगी। निरीक्षण की इस नई व्यवस्था में पहले की तरह सीधे कार्रवाई नहीं की जाएगी। इस संबंध में शिक्षा विभाग जल्द ही आदेश जारी करेगा।

बेसिक शिक्षा विभाग विद्यालयों में शिक्षकों और कर्मियों की ऑनलाइन उपस्थिति बढ़ाने के लिए निरीक्षण प्रक्रिया में बदलाव करने जा रह है। जिसके तहत गलती, छुट्टी, स्कूल देरी से पहुंचने जैसे अन्य मामले में मानवीय मूल्यांकन के कार्रवाई नहीं की जाएगी। इस नई निरीक्षण व्यवस्था में शिक्षकों के कार्यकाल से लेकर उसकी उपलब्धियों का आकलन कर कार्रवाई की जाएगी। उदाहरण के तौर पर किसी शिक्षक की सेवा 30 वर्षों से बेदाग रही है, उसने राज्यपाल पुरस्कार भी प्राप्त किया है। यदि वह स्कूल में किसी दिन 8 बजकर 1 मिनट पर पहुंचता हैं, और निरीक्षण करने वाला अधिकारी 8:00 बजे अनुपस्थित दर्ज कर दे, तो उस दिन की उस शिक्षक की सैलरी काट ली जाती है। अब नई व्यवस्था में ऐसा नहीं होगा। बेसिक शिक्षा के अधिकारियों का कहना है कि नई व्यवस्था लागू होने से शिक्षकों और कर्मियों का बड़ी राहत मिलेगी और उनका मनोबल भी बढ़ेगा।

निरीक्षण में इन पर होगा विशेष मूल्यांकन

छात्रों का प्रदर्शन : छात्रों की पढ़ाई में प्रगति, उनकी समझ, और उनके सीखने के परिणामों का मूल्यांकन।

शिक्षकों का प्रदर्शन : शिक्षकों की शिक्षण विधियों, उनकी विषय-वस्तु की समझ, और कक्षा में छात्रों को शामिल करने की क्षमता का आकलन।

पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन : यह सुनिश्चित करना होगा कि पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया जा रहा है और छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

शिक्षण सामग्री : निरीक्षण के दौरान इस पर ध्यान रखना होगा कि स्कूल में पर्याप्त और उपयुक्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध है।

भाषा विवि में कारगिल के शहीदों को किया गया याद

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

मुख्य वक्ता को सम्मानित करते कुलपति।

अमृत विचारः ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में पंच परिवर्तन से समाज परिवर्तन विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कारगिल विजय सप्ताह के अंतर्गत भाषा विश्वविद्यालय में पंच परिवर्तन से समाज परिवर्तन विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में विधि के छात्र अमन कुमार ने अपने भाषण में परिवर्तन पर प्रकाश डाला। कर्नल बीएस तोमर (सेवानिवृत) ने कहा कि कारगिल दिवस को मनाना हम सभी का सौभाग्य है। नायक कमलेश अग्निहोत्री ने अपने सैनिक जीवन को स्मरण करते हुए बताया कि हमें स्वयं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करना है। सूबेदार कमता सिंह ने भी सैनिक रहने के संस्मरणों को शेयर किया। डॉ. जगदीश चंद्र ने वीर अब्दुल हमीद को याद करते हुए कहा कि हमें सैनिकों से राष्ट्र सेवा सीखने की आवश्यकता है। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत प्रचारक संजय रहे।

टैगोर पुस्तकालय में संगीत का डिजिटल संरक्षण होगा

अमृत विचार, लखनऊ : लविवि के टैगोर पुस्तकालय को डिजिटली समृद्ध करने के लिए मोबाइल एप विकसित किया जा रहा है। इसके अलावा सांस्कृतिक और शैक्षिक माहौल को बढ़ाने के लिए प्रस्तावित स्वर सेतु लाइब्रेरी म्यूजिक कम डिजिटल मीडिया सेंटर का जल्द ही निर्माण कर लिया जाएगा। इसके लिए प्रस्ताव तैयार है जो लाइब्रेरी कमेटी की बैठक में मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। संगीत और डिजिटल मीडिया के संरक्षण, अध्ययन और अन्वेषण के लिए यह ऐसा स्थान होगा, जहां पारंपरिक ज्ञान प्रणाली डिजिटल टूल से मिलेगी।

तरुन, संस्कार, शिवम व नीतेश अगले दौर में

अमृत विचार लखनऊ : शहर के संस्कार यादव, तरुन शर्मा, शिवम यादव और नीतेश ठाकुर ने गुरुवार को बेहतरीन खेल दिखाते हुए यूपी स्टेट जूनियर मेजर बैडमिंटन चैंपियनशिप में अपने-अपने मुकाबले जीत कर अगले दौर में प्रवेश किया। संस्कार ने एकतरफा मुकाबले में लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज के सरल साहू को 30-9 से शिकस्त दी। वहीं तरुन ने जौनपुर के आदित्य भट्ट को 30-27 से पराजित किया। शिवम ने गाजियाबाद के देव चौधरी को 30-18 और नीतेश ने आजमगढ़ के अथर्व अग्रवाल को 30-13 से पराजित किया। लखनऊ बैडमिंटन एसोसिएशन की देखरेख में यूपी बैडमिंटन अकादमी में आज से शुरू हुई प्रतियोगिता का उद्घाटन अपर मुख्य सचिव एसपी गोयल और यूपी बैडमिंटन एसोसिएशन के चेयरमैन विराज सागर दास ने किया। इस अवसर पर एसोसिएशन सचिव डॉ. सुधर्मा सिंह, अनिल ध्यानी और डॉ. योगेश शेट्टी मुख्य रुप से मौजूद रहे।

फुटबॉल लीग

रक्षा, कृषि, लॉजिस्टिक और बुनियादी ढांचा जैसे क्षेत्रों से बढ़ती मांग मुख्य कारण

टेक्ट्रो लखनऊ रिजर्व की लगातार दूसरी जीत

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

बॉल पर कब्जे को लेकर भिड़ते खिलाड़ी। अमृत विचार

अमृत विचार: जिला फुटबॉल लीग में गुरुवार को खेले गए एकतरफा मुकाबले में टेक्ट्रो लखनऊ रिजर्व ने एलडीए (ए) क्लब को 5-0 और दूसरे मुकाबले में युवा क्लब ने लीफा क्लब को 3-0 से हराकर विजयी अंक हासिल किए। चौक स्टेडियम पर खेले गए मुकाबले में टेक्ट्रो लखनऊ रिजर्व के खिलाड़ियों ने शानदार खेल दिखाया। आक्रामक रुख में खेल रहे लखनऊ रिजर्व के खिलाड़ियों को रोकना एलडीए (ए) के खिलाड़ियों के बस की बात नहीं थी। वांगखेम ने 11वें मिनट में गोल कर टेक्ट्रो को 1-0 की बढ़त दिला दी। एक गोल से पिछड़ते ही एलडीए की टीम ने डिफेंस रुख अपनाया, लेकिन टेक्ट्रो के खिलाड़ियों ने अपने ताबड़तोड़ हमलों कर उनके डिफेंस को तितर-बितर कर दिया। 35वें मिनट में टेक्ट्रो के अथर्व ने साथी खिलाड़ी के पास को बेहतरीन तरीके से गोल में बदल कर टीम को 2-0 की बढ़त दिला दी। दूसरे हाफ में एलडीए ने वापसी के बहुत प्रयास किए, लेकिन टेक्ट्रो के डिफेंस को पार नहीं कर सके। वहीं मैच में दबदबा बना चुके टेक्ट्रो के वांगखेम ने 59वें, अथर्व ने 68वें और दिव्यांशु ने 73वें मिनट में गोल कर टीम को 5-0 से बढ़त दिला निर्णायक जीत दिला दी। वहीं दूसरे मुकाबले में युवा क्लब और लीफा क्लब के बीच जीत के लिए जोरदार मुकाबला देखने को मिला। दूसरे हाफ में युवा क्लब ने रणनीति को बदलते हुए हमला बोला और वे इसमें कामयाब रहे। युवा के अमित ने 45वें और 65वें मिनट में गोल कर टीम को 2-0 की बढ़त दिला दी। युवा के सचिन ने 53वें मिनट में गोल कर बढ़त 3-0 पहुंचा दी जो मैच के अंत तक कायम रही।

अशोक ध्यानचंद से मिलकर खिलाड़ी उत्साहित

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते ओलंपियन अशोक ध्यानचंद। अमृत विचार

- पूर्व ओलंपियन अशोक ध्यानचंद ने खिलाड़ियों को दिए हॉकी के टिप्स

अमृत विचारः कोई हॉकी के टिप्स ले रहा था तो कुछ खिलाड़ी उनके अनुभवों को जानने के लिए उत्सुक दिखे। चंद्र भान गुप्त खेल मैदान पर गुरुवार को पूर्व ओलंपियन अशोक ध्यानचंद पहुंचे तो खिलाड़ियों को उत्साह दोगुना हो गया।

यहां पर ओलंपियन सुजीत कुमार के साथ ही अन्य हॉकी खिलाड़ियों ने उनका स्वागत किया। मैदान पर ओलंपियन अशोक चंद ने खिलाड़ियों से मुलाकात की। उसके बाद खिलाड़ियों को हॉकी के टिप्स भी दिये। इसके साथ ही उन्होंने खिलाड़ियों को मेहनत कर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उत्साहित खिलाड़ियों ने भी अशोक ध्यानचंद से कई रोचक सवाल पूछे। इस दौरान पूर्व ओलंपियन अशोक ध्यानचंद ने अपने अनुभव खिलाड़ियों से साझा किये। अशोक ध्यानचंद ने बताया कि भारतीय हॉकी टीम लगातार शानदार प्रदर्शन कर रही है। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश में भी हॉकी के कई दमदार खिलाड़ी मौजूद हैं। बेहतर प्रशिक्षण के जरिए ये खिलाड़ी भारतीय टीम तक पहुंच सकते हैं।

अमृत विचार
लखनऊ, शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

सिटी ब्रीफ

जट्टी ने सचेत लोकतंत्र का किया आह्वान

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के यूजीसी मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और अंग्रेज़ी एवम् आधुनिक यूरोपियन भाषा विभाग ने संयुक्त रूप से ऑनलाइन पुनश्चर्या कार्यक्रम का आयोजन किया। बेंगलुरु के बसवा समिति के अध्यक्ष डॉ. अरविंद बी. जट्टी ने सचेत लोकतंत्र और सचेत विश्व व्यवस्था शीर्षक पर एक प्रेरणादायक भाषण दिया। कार्यक्रम संचालन डॉ. अंजू ओके ने किया। अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक विचारों से लेकर स्वामी विवेकानंद और श्रीअरबिंदो जैसे आध्यात्मिक नेताओं और एपीजे अब्दुल कलाम जैसे राजनीतिक हस्तियों तक विभिन्न विचारकों के ज्ञान से प्रेरणा लेते हुए डॉ. जट्टी ने प्राचीन ज्ञान, लोकतांत्रिक जिम्मेदारी और सामूहिक ग्रहीय चेतना की तत्काल आवश्यकता के बीच शक्तिशाली संबंध स्थापित किए।

केके मंडल अध्यक्ष राहुल बने उपाध्यक्ष

अमृत विचार, आलमबाग : लखनऊ महानगर भाजपा अध्यक्ष ने नए पदाधिकारियों की प्रथम सूची बुधवार को जारी कर दी है। इस सूची में सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र दक्षिण जोन में सक्रिय केके श्रीवास्तव को मंडल का अध्यक्ष और राहुल मिश्रा को मंडल उपाध्यक्ष बनाया गया है। नए पदाधिकारियों को पूर्व मंडल अध्यक्ष अनूप मिश्रा ने बधाइयां और शुभकामना दीं।

असामाजिक तत्वों ने खोद दिया रास्ता

अमृत विचार, गोसाईगंज : मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र के बस्तियां गांव निवासी तालता प्रसाद वर्मा ने आम रास्ता खोदने की शिकायत अधिकारियों से की है। इसमें बताया कि वर्ष 2023 में गांव में प्रेम प्रकाश के घर से राजाराम के घर तक रास्ता बनवाया गया था। कुछ असामाजिक तत्वों ने रास्ता खोद कर नष्ट कर दिया गया। रास्ता बनवाने और असामाजिक तत्वों पर कार्रवाई के लिए तहसील से लेकर मंडलायुक्त तक को प्रार्थनापत्र दिए। आरोप है कि जमीन आभारी में दर्ज होने का कारण बताकर राजस्व कर्मी पैमाइश नहीं कर रहे हैं। रास्ता बंद होने से आवागमन में दिक्कत हो रही है।

ऊर्जा मंत्री के बयान पर उठाए सवाल

अमृत विचार, लखनऊ : विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति उप्र. ने ऊर्जा मंत्री एके शर्मा के बयान पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब मंत्री बिजली विभाग को 'जनसेवा' बता रहे हैं, तो ऊर्जा निगमों का निजीकरण आखिर क्यों किया जा रहा है। इस बीच, उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद ने भी इसी बयान पर ऊर्जा मंत्री से सवाल किए। बीते दिन बिजली आपूर्ति की समीक्षा बैठक में ऊर्जा मंत्री ने विभाग के शीर्ष अधिकारियों को खूब खरी-खोटी सुनाई थी। उनका कहना था कि विभाग 'बनिया' की दुकान नहीं है। उन्होंने बकाया होने पर पूरे गांव की बिजली काटने पर नाराजगी जताई थी।

दोस्ती कर किया दुष्कर्म, बनाया धर्मांतरण का दबाव

मां ने पुलिस की मदद से बेटी को खदरा इलाके से कराया मुक्त, आरोपी ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर मांगे दो लाख

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- चिनहट कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज आरोपी गिरफ्तार

अमृत विचार: इंस्टाग्राम पर दोस्ती कर किशोरी से दोस्ती कर अरमान ने दुष्कर्म कर अश्लील वीडियो बना लिया। वायरल करने धमकी देकर 15 दिन होटल में रखा। फिर घर ले जाकर युवक व परिजन ने धर्मांतरण का दबाव बनाया। सूचना पर पुलिस ने उसे मुक्त कराया। मां की तहरीर पर चिनहट पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

चिनहट निवासी महिला ने बताया कि उसकी 14 साल की बेटी की दोस्ती इंस्टाग्राम पर मदेयगंज के खदरा चुंगी निवासी अरमान से हुई। वह शादी का झांसा देकर 15 मई को उसे ले गया। कई होटलों में दो हफ्ते तक रुकने के बाद आरोपी किशोरी को लेकर घर पहुंचा। आरोप है कि अरमान के पिता, भाई व बहन ने किशोरी को पीटा और धर्मांतरण का दबाव बनाया। जबरन नमाज पढ़वाई। किसी तरह किशोरी ने मां को सूचना दी। मां ने पुलिस को मदद से बेटी को छुड़ाया और घर लेकर आई। इसके बाद अरमान कॉल कर अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देते हुए 2 लाख रुपये की मांग करने लगा। गुरुवार को पीड़िता ने चिनहट कोतवाली में शिकायत की। पुलिस ने अरमान, उसके पिता, भाई व बहन के खिलाफ दुष्कर्म, रंगदारी, धमकी व पॉक्सो एक्ट की रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

धर्मांतरण कराने वाले काजी की राजस्थान में तलाश

अमृत विचार, लखनऊ : आगरा पुलिस की एक टीम धर्मांतरण कराने वाले काजी की तलाश में राजस्थान में डेरा डाल लिया है। आगरा धर्मांतरण गिरोह का सरगना अब्दुल रहमान इसी काजी के माध्यम से हिंदू युवतियों का धर्मांतरण कराता था। इसका खुलासा उसके दोनों बेटों ने बुधवार देर शाम को हुई पुलिस के सामने किया। अब्दुल रहमान के दो बेटे और एक अन्य आरोपी को आगरा पुलिस ने मंगलवार को दिल्ली से गिरफ्तार किया है। कलीम के जेल जाने के बाद अब्दुल रहमान ही अवैध धर्मांतरण के काम को संभाल रहा था। मामले में निकाह कराने वाले काजी का नाम भी सामने आया है, अब्दुल रहमान इसी काजी से धर्मांतरण कराया करता था। वह राजस्थान का रहने वाला है। अब उसकी भी तलाश की जा रही है। पुलिस कमिश्नर दीपक कुमार के मुताबिक आरोपी काजी की तलाश में आगरा पुलिस की एक टीम बुधवार को पहुंच गई। वहां उसकी तलाश में संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है।

छांगुर व नवीन की कास्टडी रिमांड पर सुनवाई 28 को

अमृत विचार, लखनऊ : धर्मांतरण गिरोह के सरगना छांगुर बाबा और उसके करीबी सहयोगी नवीन रोहरा की कस्टडी रिमांड पर गुरुवार को सुनवाई होनी थी। अब इस मामले में सुनवाई सोमवार 28 जुलाई को होगी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सात दिन की कस्टडी रिमांड पर देने के लिए कोर्ट से अनुरोध किया था। ईडी रिमांड पर लेने के बाद दोनों से विदेशी फंडिंग और संपत्तियों के बारे में पूछताछ की जानी है। ईडी ने छांगुर और नवीन के खिलाफ प्रोडक्शन अर्जी भी दी है। ईडी के विशेष न्यायाधीश ने इस अर्जी पर सुनवाई के लिए 28 जुलाई की तारीख तय की है। छांगुर के गिरोह ने दो सौ से ज्यादा मासूम हिंदू लड़कियों को लव जिहाद, धमकी व अन्य चालबाजियों के जरिए इस्लाम कुबूल कराया। साथ ही उनको खाड़ी देशों में भेजा। छांगुर बाबा व उसकी करीबी नवीन रोहरा की पत्नी नसरीन उर्फ नीतू रोहरा को एटीएस ने पांच जुलाई को लखनऊ से गिरफ्तार किया है। अब तक इस मामले में छह आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

सूचना

मैने अपना नाम AISHA KHATOON SIDDIQUI से बदलकर AISHA KHATOON रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। **W/o-MOHAMMAD AYAZ SIDDIQUI ADD-229/50, SOHBATIYA BAGH, RAJA BAZAR CHOWK DIST-LUCKNOW-226003 (U.P)**

सूचना

त्रुटिवश मेरे पुत्र अथर्व सिंह (ATHARV SINGH) के विद्यालय अभिलेखों में मेरा नाम देवेश सिंह (DEVESH SINGH) अंकित हो गया है, जबकि मेरा सही नाम (DEVESH SINGH BHADOURIA) देवेश सिंह भदौरिया है। मुझे इसी नाम से लिखा व पढ़ा जाये। देवेश सिंह भदौरिया पुत्र हिम्मत बहादुर सिंह, सी-307 निरालानगर, आंशिक लखनऊ, उ.प्र. 226020, वर्तमान पता-973 मानसनगर, (विजय नगर पुलिस चौकी के पीछे) लखनऊ, उ.प्र. 226023

खंड शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन देते ग्रामीण।

स्कूल विलय को लेकर खंड शिक्षा अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, माल

अमृत विचार : माल क्षेत्र के गांव विशुनपुर के प्राथमिक विद्यालय को जानकीनगर गांव के विद्यालय में विलय कर दिया गया है। अभी तक दोनों गांव के बीच सीधी दूरी दो किलोमीटर है। किंतु आसपास की 1100 एकड़ भूमि के साथ सड़क भी टेक्सटाइल पार्क में अधिग्रहण में चली गई है।

पार्क के लिए चहारदीवार बनाने का काम चल रहा है। चहारदीवारी बनने से सड़क बंद हो जाएगी। इससे दोनों गांवों की दूरी 12 किलोमीटर हो जाएगी। सड़क सुनसान इलाके से निकली है, जिस पर जंगली जानवर भी विचरण करते रहते हैं। छोटे बच्चों का इस रास्ते से जाना खतरनाक साबित हो सकता है। इन्हीं समस्याओं को लेकर गुरुवार को ग्रामीणों शीलू, अलपम, पिंकी राहुल, अमरेश सुशीला त्रिपाठी, अनूप पांडेय, राहुल किरण आदि ने खंड शिक्षा अधिकारी बंशीधर श्रीवास्तव को उनके कार्यालय में ज्ञापन दिया। अभिभावकों ने बताया कि जंगली जानवर कई बार कई बार राहगीरों पर हमला कर चुके हैं।

कब्जा मुक्त कराएं गरीबों की जमीनें : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को सख्त हिदायत दी है कि गरीबों की जमीन पर यदि किसी ने कब्जा किया है तो तत्काल कब्जा मुक्त कराने के साथ दबंगों को सबक सिखाया जाए। इलाज को लेकर आए लोगों को आश्वासन दिया कि पैसे की कमी से किसी का भी इलाज नहीं रुकेगा।योगी ने गोरखपुर प्रवास के दौरान गुरुवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में आए करीब 200 लोगों की समस्याएं सुनते हुए कहा कि जमीन का मामला यदि किसी परिवार का हो तो दोनों पक्षों के बीच संवाद कर उसका निस्तारण कराएं।

विफलताओं का रिकॉर्ड बना रही सरकार: अखिलेश

अमृत विचार, लखनऊ : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार विफलताओं का रिकॉर्ड बना रही है। स्वास्थ्य सेवाएं ध्वस्त है। बिजली व्यवस्था चरमरा चुकी है। शिक्षा व्यवस्था बर्बाद हो चुकी है। भाजपा सरकार के मंत्री विभागीय कार्यों के बजाय अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में व्यस्त हैं। इनको जनता की समस्याओं और जनसरोकार से कोई मतलब नहीं है।

दुष्कर्म का आरोपी, मोबाइल लूटने वाला गिरफ्तार

अमृत विचार, लखनऊ : सआदतगंज पुलिस ने किशोरी से दुष्कर्म के आरोप में गुरुवार को ऐशबाग निवासी शाहिद उर्फ अरशद को गिरफ्तार कर लिया। इंस्पेक्टर संतोष कुमार आर्य ने बताया कि आरोपी शाहिद किशोरी को बहला फुसला कर ले गया था। जहां उसके साथ दुष्कर्म किया। पीडि़ता के बयान पर आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट की धारा बढ़ाने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उधर, आलमबाग : कृष्णानगर पुलिस ने गुरुवार को मोबाइल लूट के दो आरोपियों को गुरुवार को गिरफ्तार किया है। इंस्पेक्टर पीके सिंह ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी आशियाना के किला मोहम्मदी नगर निवासी आदित्य रावत और आलमबाग का आनंद सिंह है। आरोपियों ने 10 जुलाई को कमेटी हॉल के पास पल्लवी जायसवाल का मोबाइल लूटा था। पुलिस ने आरोपियों के पास से लूटा गया मोबाइल व घटना में प्रयुक्त बाइक बरामद की है।

लिफ्ट की डक्ट में मिला अधेड़ का शव

अमृत विचार, लखनऊ : बीबीडी के अनौरा कला स्थित साई यश रेसिडेंट अपार्टमेंट के लिफ्ट की डक्ट में गुरुवार शाम को अधेड़ का शव मिला। इंस्पेक्टर राम सिंह ने बताया कि गाजीपुर जिले के रहने वाले विजय का लखनऊ स्थित एसजीपीजीआई से इलाज चल रहा था। गुरुवार को वह चेकअप के लिए लखनऊ आए थे। अस्पताल से निकलकर वे परिचित के फ्लैट नंबर 505 में गए थे। फ्लैट किसका इस बात का पता नहीं चल सका है।

कोतवाल को हटाने के लिए धरने पर बैठीं राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: सदर विधायक एवं प्रदेश सरकार में महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला गुरुवार को अकबरपुर थाने में अपने समर्थकों के साथ दरी बिछाकर धरने पर बैठ गईं। सीओ सिटी प्रिया सिंह उन्हें मनाने का प्रयास करती रहीं, मगर राज्यमंत्री ने ऐलान कर दिया समर्थकों पर दर्ज मुकदमे वापस होने और अकबरपुर कोतवाल सतीश कुमार को हटाने के बाद ही धरना खत्म होगा। राज्यमंत्री ने आरोप लगाया कि अकबरपुर थाने की पुलिस मनमानी पर उतारू है। सूचना मिलते ही सीओ प्रिया सिंह पहुंचीं और राज्यमंत्री को मनाने में लगी रहीं, लेकिन राज्यमंत्री ने कहा कि मांगें पूरी होने तक धरना खत्म नहीं होगा।

मामला बढ़ता देख पुलिस अधीक्षक अरविंद मिश्रा कोतवाली पहुंच गए। उन्होंने वार्ता के लिए राज्यमंत्री को कमरे में आमंत्रित किया लेकिन वह उन्होंने कहा कि वार्ता खुले में ही होगी।

अकबरपुर कोतवाली में समर्थकों के साथ धरने पर बैठीं राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला।

चौकी इंचार्ज का पुलिस लाइन स्थानांतरण

सात घंटे बाद रात नौ बजे धरना खत्म होने के बाद राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला ने बताया कि पुलिस अधीक्षक ने लालपुर चौकी इंचार्ज को निलंबित कर दिया है और अकबरपुर कोतवाली इंस्पेक्टर को हटाने का आश्वासन दिया है, मगर देर रात पुलिस अधीक्षक ने वीडियो जारी कर जो बयान दिया है, उसमें चौकी इंचार्ज के निलंबन का जिक्र नहीं है। एसपी ने कहा है कि 'एक क्रॉस केस के मामले को लेकर राज्यमंत्री अकबरपुर कोतवाली आई थीं। उन्होंने नाराजगी जाहिर की थी। हम व डीएम मौके पर आए और उन्हें बैठाकर वार्ता की गई। उन्हें जांच कर निष्पक्ष कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस पर वह संतुष्ट रहीं। देर रात चौकी इंचार्ज के पुलिस लाइन स्थानांतरण का आदेश जारी हुआ।

कार्यालय उपजिलाधिकारी सलोन जनपद रायबरेली

पत्रांक 403 /रा0नि0(कार्या0)/भूलेख-तालाब आवंटन/2025-26 दिनांक 11 जुलाई 2025

विज्ञप्ति

सर्वसाधरण को सूचित किया जाता है कि तहसील सलोन जनपद रायबरेली के अन्तर्गत पड़ने वाले राजस्व ग्रामों में निम्नलिखित तालाबों को 10 वर्षीय मत्स्य पालन पट्टा नीलामी किये जाने हेतु दिनांक 28 जुलाई 2025 से 29 जुलाई 2025 तक मत्स्य पालन पट्टा नीलामी षिविर का आयोजन तहसील सलोन के सभागार में किया जायेगा। जिसमें इच्छुक पात्र व्यक्तियों के प्रातः10 बजे से 1.00 बजे तक आवेदन पत्र लिये जायेंगे तथा 01.00 बजे के बाद नीलामी की कार्यवाही की जायेगी। तालाबों की नीलामी हेतु नायब तहसीलदार सलोन को नीलाम अधिकारी नियुक्त किया जाता है। तालाबों की नीलामी के सम्बन्ध में उ0प्र0 राजस्व संहित 2006 के नियम 57 व 58 द्वारा की जायेगी जो तहसील मुख्यालय/राजस्व परिषद की वेबसाइट bor.up.nic.in पर उपलब्ध है। सर्वोच्च बोली बोलने वाले समिति/व्यक्ति को नीलामी धनराषि एक वर्ष के लगान का 1/4 भाग तुरन्त जमा करना होगा। षेष 3/4 भाग नीलामी तिथि के 15 दिनों के अन्दर जमा करना अनिवार्य होगा। सभी बोलीदाता को विज्ञापन की तिथि से आय, निवास प्रमाण पत्र जो 06 माह से अधिक पुराना न हो बोली के समय प्रस्तुत करना होगा। मत्स्य पालन पट्टे की अवधि 10 वर्ष जिसका न तो आगे नवीनीकरण होगा न ही बढ़ाया जायेगा। विस्तृत जानकारी कार्यालय तहसीलदार के राजस्व निरीक्षक (कार्यालय) से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है। नीलामी को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी का होगा।

क्रम सं0	तहसील का नाम	विकास खण्ड का नाम	ग्राम पंचायत का नाम	ग्राम का नाम	तालाबों का विवरण		रा0सं की धारा 61 अन्तर्गत 2 हे0 से कम क्षेत्रफल वाले तालाबों की लगान 5000रू0 एवं 2हे0 से अधिक क्षेत्रफल वाले तालाबों का लगान 10000रू0 प्रति हे0 प्रतिवर्ष की दर से प्रति वर्ष हेतु आरक्षित है।	बोली हेतु आरक्षित न्यूनतम धनराषि 1/4 भाग	नीलामी का दिनांक स्थान व समय
					गाटा सं0	क्षे0			
1	सलोन	सलोन	औनानीस	औनानीस	582	0.2660	1330	333	28 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
2	सलोन	सलोन	रेवली	पूरे मो0 सईद उर्फ उमरपुर	101	0.3470	1735	434	
3	सलोन	सलोन	रेवली	पूरे मो0 सईद उर्फ उमरपुर	102	0.290	1345	336	
4	सलोन	सलोन	रेवली	रेवली	77	0.048	1125	282	
					118	0.177			
5	सलोन	सलोन	करेमुवा	सोनबरसा	354	0.4550	2275	569	
6	सलोन	सलोन	करेमुवा	सोनबरसा	396	0.2530	1265	316	
7	सलोन	सलोन	करेमुवा	करेमुवा	48	0.3790	1895	474	
8	सलोन	सलोन	रेवली	रेवली	936	0.4710	2355	589	
9	सलोन	सलोन	मोहनगंज	मोहनगंज	332	0.3160	1580	395	
10	सलोन	सलोन	मोहनगंज	मोहनगंज	605मि0	0.2260	1130	283	
11	सलोन	सलोन	मोहनगंज	मोहनगंज	658	0.2250	1125	282	
12	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा खुर्द	106मि0	0.2330	1165	291	
13	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा खुर्द	507	0.5250	2625	656	
14	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा बुर्जुग	290क	1.8180	9090	2273	
15	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा बुर्जुग	98	0.3700	1850	463	
16	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा बुर्जुग	152	0.9950	4975	1244	
17	सलोन	सलोन	जमुर्वा बुजुर्ग	जमुरवा बुर्जुग	171	0.4330	2165	541	
18	सलोन	सलोन	रेवहारा	रेवहारा	264	0.3190	1595	399	
19	सलोन	सलोन	रेवहारा	रेवहारा	340	0.4720	2360	590	
20	सलोन	सलोन	रतासों	रतासों	675मि0	0.3100	1550	388	
21	सलोन	सलोन	पारी	पारी	826मि0	0.2230	1115	279	
22	सलोन	सलोन	पारी	पारी	1128	0.7500	3750	938	
23	सलोन	सलोन	पारी	पारी	1567मि0	0.266	1330	266	
24	सलोन	सलोन	पारी	पारी	1934/5	0.2530	1265	317	28 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
25	सलोन	सलोन	पारी	पारी	2117ख	0.331	1655	414	
26	सलोन	सलोन	धरई	धरई	1889	0.4530	2265	567	
27	सलोन	सलोन	धरई	धरई	2147	0.3100	1550	388	
28	सलोन	सलोन	धरई	धरई	2148	0.3290	1645	412	
29	सलोन	सलोन	केमूपुर	केमूपुर	536मि0/1	0.3790	1895	474	
30	सलोन	सलोन	केमूपुर	केमूपुर	144	0.9170	4585	1147	
31	सलोन	सलोन	केमूपुर	केमूपुर	114/1	0.5060	2530	633	
32	सलोन	सलोन	केमूपुर	केमूपुर	91	0.2470	1235	309	
33	सलोन	सलोन	नायन	नायन	1131	5190	2595	649	
34	सलोन	सलोन	खैरहनी पहाड़गढ़	खैरहनी पहाड़गढ़	407	0.5160	2580	645	
35	सलोन	सलोन	खैरहनी पहाड़गढ़	खैरहनी पहाड़गढ़	459	0.2400	1200	300	
36	सलोन	सलोन	परशुरामपुर ठेकहाई	परशुरामपुर ठेकहाई	331/1मि0	0.5970	2985	747	
37	सलोन	सलोन	राजापुर चकबीबी	राजापुर चकबीबी	376	0.509	2545	637	
38	सलोन	सलोन	बेवली	बेवली	316	1.530	6265	1566	
39	सलोन	सलोन	बेवली	बेवली	929	0.3040	1520	380	
40	सलोन	सलोन	बेवली	बेवली	614	0.3540	1770	443	
41	सलोन	सलोन	बेवली	बेवली	1122	0.2640	1320	330	
42	सलोन	सलोन	कमालापुर	कमालापुर	1408	0.2300	1150	2880	
43	सलोन	सलोन	कमालापुर	कमालापुर	1419मि0	0.500	2500	625	
44	सलोन	सलोन	कमालापुर	कमालापुर	1409	0.6100	3050	763	
45	सलोन	सलोन	पियारेपुर	जयरामपुर पाण्डेय	124	0.5060	3030	633	
46	सलोन	सलोन	किठावां	किठावां	1525	0.905	4525	1131	
47	सलोन	सलोन	अतरथरिया	अतरथरिया	978ख	2.3390	23390	5848	
48	सलोन	सलोन	अतरथरिया	अतरथरिया	1023ख	2.0000	10,000	2500	
49	सलोन	सलोन	कमालापुर	कोडरी	112	0.3070	1535	384	
50	सलोन	सलोन	गोडवाहसनपुर	गोड़वाहसनपुर	46	0.8210	4105	1026	
51	सलोन	सलोन	करेमुवा	चकनेकनामपुर	104मि	0.5190	2945	649	
52	सलोन	सलोन	पकसरावां	पकसरावां	799	0.5440	2720	680	
53	सलोन	सलोन	पकसरावां	पकसरावां	294ख	2.7750	27750	6938	
54	सलोन	सलोन	पकसरावां	पकसरावां	295घ	7.6390	76390	19098	
55	सलोन	सलोन	पारी	पारी	1934/4	0.253	1265	317	
56	सलोन	सलोन	कहुवा	मदापुर	90गमि0	0.2630	1315	329	
57	सलोन	सलोन	मीरजहांपुर	मीरजहांपुर	1599क	0.2740	1370	343	
58	सलोन	सलोन	भवानीपुर	भवानीपुर	175	0.4640	2320	580	
59	सलोन	सलोन	अशिकाबाद	आशिकाबाद	101	0.3420	1710	428	
60	सलोन	सलोन	पारी	पारी	1021मि0	0.4360	2180	545	
61	सलोन	डीह	मधुकरपुर	मधुकरपुर	576	0.5060	2530	633	
62	सलोन	डीह	बिरनावां	बिरनावा	664	0.4870	3435	859	
63	सलोन	डीह	बिरनावां	बिरनावा	7400	0.9710	4855	1214	
64	सलोन	डीह	बिरनावां	बिरनावा	8476	0.2360	1180	295	
65	सलोन	डीह	बिरनावां	बिरनावा	4123	0.4110	2055	514	
66	सलोन	डीह	बिरनावां	बिरनावा	6715मि0	1.0120	5060	1012	
67	सलोन	डीह	खेतौंधन	खेतौंधन	1280	1.9850	9925	2481	
68	सलोन	डीह	पूरब नायन	धनकेशरा	219	0.5820	2910	728	
69	सलोन	डीह	सिरसी	सिरसी	872	1.0730	5365	1342	
70	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	3623	0.2240	1120	280	
71	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	4420	1.9940	9970	2493	
72	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	4360क	0.2530	1265	317	
73	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	1387क	0.1140	1835	459	28 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
74	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	1387ख	0.2530			
75	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	3539	0.408	2040	510	
76	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	1386	0.7870	3935	984	
77	सलोन	डीह	रोखा	रोखा	4433मि0	0.2530	1265	317	
78	सलोन	डीह	पोठई	पोठई	1556	0.6170	3085	771	
79	सलोन	डीह	पोठई	पोठई	3261	1.100	5500	1375	
80	सलोन	डीह	बेतौरा	बेतौरा	1574	0.5370	2685	671	
81	सलोन	डीह	मझिलहा	रेवरीसैदपुर	171	0.2530	1265	316	
82	सलोन	डीह	मझिलहा	मझिलहा	1314	0.5030	2515	629	
83	सलोन	डीह	मझिलहा	मझिलहा	1337	0.3010	1505	376	
84	सलोन	डीह	मझिलहा	मझिलहा	1153	0.2690	1345	336	
85	सलोन	डीह	जगदीशपुर	जगदीषपुर	1565क	1.2050	6025	15106	
86	सलोन	डीह	रायपुर टोडी	किया	774मि0	0.7350	3674	919	
87	सलोन	डीह	अहल	अहल	20	0.5030	2515	629	
88	सलोन	डीह	सुरैया मुवक्किलपुर	सुरैया मुवक्किलपुर	164क	0.4850	2425	607	
89	सलोन	डीह	मऊ	मऊ	512	0.3950	1975	494	
90	सलोन	डीह	मऊ	मऊ	399क	0.7590	7590	1898	
					399ख	0.7590			
91	सलोन	डीह	मऊ	मऊ	1985	0.759	3795	949	
92	सलोन	डीह	मऊ	मऊ	2859	0.253	1265	317	
93	सलोन	डीह	मऊ	मऊ	1208	0.291	2085	522	
					1156	0.126			
94	सलोन	छतोह	बेढ़ौना	बेढौना	1965	0.7810	3905	977	29 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
95	सलोन	छतोह	बेढ़ौना	बेढौना	206मि0	1.4330	7165	1791	
96	सलोन	छतोह	जगतपुर	जगतपुर	413	0.9670	4835	1209	
97	सलोन	छतोह	जगतपुर	जगतपुर	436	0.8620	4310	1078	
98	सलोन	छतोह	पदुमपुर	पदुमपुर	360	0.5420	2710	678	
99	सलोन	छतोह	पदुमपुर	पदुमपुर	574	0.2980	1490	373	
100	सलोन	छतोह	पदुमपुर	पदुमपुर	578	0.2980	1490	373	
101	सलोन	छतोह	बरावां	बरांवां	706	0.5370	2637	659	
102	सलोन	छतोह	बरावां	बरांवां	397	0.3490	1745	436	
103	सलोन	छतोह	बरावां	बरांवां	577	0.4930	2465	616	
104	सलोन	छतोह	कांटा	कांटा	294	0.8730	8380	1095	
105	सलोन	छतोह	बेवल	बेवल	1140	0.4200	2100	525	
106	सलोन	छतोह	बेवल	बेवल	1630	0.2970	1485	371	
107	सलोन	छतोह	बेवल	बेवल	389ख	0.7800	3900	975	
108	सलोन	छतोह	परैया नमकसार	परैयानमकसार	104मि0	0.236	2595	649	
109	सलोन	छतोह	बभनपुर	बभनपुर	219	0.2380	1190	298	
110	सलोन	छतोह	बभनपुर	बभनपुर	727मि	0.3400	1700	425	
111	सलोन	छतोह	चन्दाबाहीपुर	चन्दाबाहीपुर	107	0.5400	2700	675	
112	सलोन	छतोह	चन्दाबाहीपुर	चन्दाबाहीपुर	554	0.2830	1415	354	
113	सलोन	छतोह	चन्दाबाहीपुर	चन्दाबाहीपुर	845	0.5970	2985	747	
114	सलोन	छतोह	अशरफपुर	अषरफपुर	1606	0.6510	3255	814	
115	सलोन	छतोह	अशरफपुर	अषरफपुर	1067	0.3220	1610	403	
116	सलोन	छतोह	अशरफपुर	अषरफपुर	480	0.8160	4080	1020	
117	सलोन	छतोह	अशरफपुर	अषरफपुर	299	0.3100	1550	388	
118	सलोन	छतोह	बारा	बारा	480	0.8160	4080	1020	
119	सलोन	छतोह	बारा	बारा	299	0.3100	1550	388	
120	सलोन	छतोह	बारा	बारा	576	0.2430	1215	304	
121	सलोन	छतोह	बारा	बारा	304	0.5690	2845	711	29 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
122	सलोन	छतोह	अब्दूमऊ	अब्दूमऊ	233	0.5060	2530	633	
123	सलोन	छतोह	अब्दूमऊ	डीघा	1067	0.2610	1305	326	
124	सलोन	छतोह	सरांय	सरांय	268	0.3160	1580	395	
125	सलोन	छतोह	जमालपुर हुरैया	जमालपुर हुरैया	264	1 815	9075	2269	
126	सलोन	छतोह	जमालपुर हुरैया	जमालपुर हुरैया	358	1. 214	6070	1518	
127	सलोन	छतोह	जमालपुर हुरैया	जमालपुर हुरैया	558	0.8090	4045	1011	
128	सलोन	छतोह	बरखुरदारपुर	बरखुरदारपुर	228	0.8140	4070	1018	
129	सलोन	छतोह	बरखुरदारपुर	बरखुरदारपुर	583	0.3670	1835	459	
130	सलोन	छतोह	कुवरमऊ	कुवरमऊ	668	0.4630	2315	579	
131	सलोन	छतोह	कुवरमऊ	कुवरमऊ	2103	0.5220	2610	653	
132	सलोन	छतोह	कुवरमऊ	कुवरमऊ	1395	0.6430	3215	804	
133	सलोन	छतोह	चतुरपुर	चतुरपुर	447	0.5690	2845	711	
134	सलोन	छतोह	भेलिया	भेलिया	692	0.3410	1705	426	
135	सलोन	छतोह	भेलिया	भेलिया	1060	0.2970	1485	371	
136	सलोन	छतोह	भेलिया	भेलिया	648	0.6760	4565	1141	
137	सलोन	छतोह	कुढ़ा	तारापुर	581	0.5340	2670	668	
138	सलोन	छतोह	काजीपुर तेलियानी	काजीपुर तेलियानी	202	0.3320	1610	403	
139	सलोन	छतोह	काजीपुर तेलियानी	काजीपुर तेलियानी	1209	2.0260	20260	5065	
140	सलोन	छतोह	बनी	बनी	45	0.2780	1390	384	
141	सलोन	छतोह	बनी	बनी	224	3.341	33410	8353	
142	सलोन	छतोह	मेदापुर	मेदापुर	572	0.3790	1895	474	
143	सलोन	छतोह	मेदापुर	मेदापुर	1148	0.5270	2885	721	
144	सलोन	छतोह	मेदापुर	मेदापुर	540	5120	2560	640	
145	सलोन	छतोह	भुवालपुर सिसनी	भुवालपुर सिसनी	457	2.9730	29730	7433	
146	सलोन	छतोह	भुवालपुर सिसनी	भुवालपुर सिसनी	991	9.6370	96370	24093	
147	सलोन	छतोह	भुवालपुर सिसनी	भुवालपुर सिसनी	342	5.0870	50870	12718	
148	सलोन	छतोह	भुवालपुर सिसनी	विषेषरपुर	99	0.8250	4125	1031	
149	सलोन	छतोह	कुकहा	कुकहा	784	0.3340	1670	418	
150	सलोन	छतोह	नसीराबाद	नसीराबाद	1841मि0	2.4130	24130	6033	
151	सलोन	छतोह	बनी	हाजीपुर	58	0.9230	4615	1154	
152	सलोन	छतोह	बनी	हाजीपुर	43	0.4280	2140	535	
153	सलोन	छतोह	बनी	हाजीपुर	710	0.3540	1770	443	
154	सलोन	छतोह	अब्दूमऊ	इटरौरा	589	0.2930	1465	366	
155	सलोन	छतोह	जमालपुर हुरैया	महमपुर नमकसार	246मि0	1.5510	7755	1939	28 जुलाई 2025 तहसील सलोन सभागार प्रातः 10:00 बजे से
156	सलोन	छतोह	जमालपुर हुरैया	महमपुर नमकसार	865मि	1.5510	7755	1939	
157	सलोन	छतोह	लखापुर	लखापुर	676	0.4810	2405	601	
158	सलोन	छतोह	महानन्दपुर	महानन्दपुर	237	0.7410	3705	926	
159	सलोन	छतोह	दोस्तपुर बुढ़वारा	दोस्तपुर बुढवारा	200	0.4540	2270	568	

नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने की पात्रता एवं शर्तेः-

1. तालाब का आवटंन/नीलामी उ0प्र0 राजस्व संहिता नियमावली 2016 में दिये गये प्राविधानानुसार किया जायेगा।
2. नीलामी की कार्यवाही सम्बन्धित क्षेत्रीय नायब तहसीलदार सलोन के द्वारा करायी जायेगी।
3. यदि किसी एक ही तालाब के लिये एक ही वरीयता क्रम के एक से अधिक व्यक्ति इच्छुक हैं तो ऐसे तालाबों का आवंटन नीलामी के माध्यम से किया जायेगा।
4. तालाबों की नीलामी बोली सर्वोच्च बोलीदाता के पक्ष में की जायेगी। सर्वोच्च बोलीदाता को नीलामी धनराषि 1/4 भाग तत्काल जमा करना होगा। यदि सर्वोच्च बोलीदाता नीलामी धनराषि की 1/4 भाग तत्काल जमा नहीं करता है तो उसके द्वारा अग्रिम जमा धनराषि राज्य सरकार के पक्ष में जब्त कर ली जायेगी।
5. नीलामी धनराषि की 3/4 भाग 15 दिन के अन्दर जमा करना होगा। यदि नीलामक्रेता पट्टा स्वीकृत के पश्चात् 15 दिन के अन्दर अवषेष 3/4 भाग नहीं जमा करता है तो उसके द्वारा जमा 1/4 भाग धनराषि राज्य सरकार के पक्ष में जब्त कर ली जायेगी।
6. नीलामी/आवंटन 10 वर्षों के लिये किया जायेगा और आवंन्टी/नीलामी क्रेता को प्रत्येक नीलामी धनराषि के बराबर धनराषि लगान के रूप प्रतिवर्ष में जमा करना होगा।
7. आवंटन/नीलामी में भाग लेने वाले व्यक्ति को जाति, निवास, व आय प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा जो नीलाम/आवंटन की तिथि से 6 माह से अधिक पुराना न हो।
8. 2.0हे0 क्षेत्रफल तक के तालाबों का लगान रू0-5000 रू0/हे0/वर्ष व 2.0हे0 से अधिक क्षेत्रफल के तालाबों का लगान रू0 10000.00 प्रति हे0 प्रतिवर्ष होगा।
9. नीलामी आवंटन की कार्यवाही दिनांक 28.07.2025 व 29.07.2025 की प्रातः 10.00 बजे से तहसील सभागार सलोन में की जायेगी।
10. नीलामी/आंवटन स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का अधिकार उपजिलाधिकारी सलोन का होगा।
11. नीलामी में भाग लेने हेतु ग्राम पंचायत के मछुवा समुदाय का व्यक्ति तत्पष्चात् ग्राम पंचायत में निवास करने वाला गरीबी रेखा से नीचे का अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति/अन्य पिछड़ा वर्ग अथवा साामन्य श्रेणी का व्यक्ति भाग ले सकता है।
12. उक्त मत्स्य पालन नीलामी/आवंटन में 2 हे0 अधिक/तालाब/पोखरों/मीनाशयों की नीलामी/आवंटन पंजीकृत व मत्स्य पालन विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त समितियों द्वारा अदेयता प्रमाण पत्र देने के पश्चात् ही नीलामी में प्रतिभाग कर सकेंगे।
13. मत्स्य पालन पट्टा के लगान का बकायेदार व्यक्ति किसी भी दषा में मत्स्य पालन पट्टा की नीलामी में भाग लेने का अधिकार नही होगा।
14. जिन तालाबों के गाटा संख्या का आवंटन हो चुका है या अवधि शेष है त्रुटिवष विज्ञापन हो गया है तो ऐसे तालाबों की नीलामी नही की जायेगी।
15. पट्टे की शर्तें आवंटन/नीलामी से सम्बन्धित अन्य जानकारी नीलामी से पूर्व कार्यालय तहसीलदार सलोन से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है।

(चन्द्र प्रकाश गौतम)
उपजिलाधिकारी
सलोन, रायबरेली।

UP-236191 दिनांक 22.07.2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

नेशनल ब्रीफ

विमान में महिला ने बच्चे का जन्म दिया

मुंबई। मस्कट से मुंबई जा रहे एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान में सवार थाईलैंड की महिला ने स्वस्थ बच्चे का जन्म दिया। एयर इंडिया एक्सप्रेस की ओर से जारी मीडिया बयान में कहा गया कि एयरलाइन के प्रशिक्षित केबिन क्रू ने थाई महिला की प्रसव में मदद की और विमान में मौजूद एक नर्स ने भी समय पर सहायता प्रदान की। पायलटों ने तुरंत एयर ट्रैफिक कंट्रोल को सूचित किया और मुंबई में प्राथमिकता लैंडिंग का अनुरोध किया, जहाँ चिकित्सा दल और एक एम्बुलेंस पहुंचते ही तैयार थे। लैंडिंग के बाद, मां और बच्चे दोनों को आगे की देखभाल के लिए तुरंत पास के एक अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया।

यूनिवर्सल बिल्डवेल के तीन प्रवर्तक गिरफ्तार

गुरुग्राम। ईडी के गुरुग्राम क्षेत्रीय कार्यालय ने मेसर्स यूनिवर्सल बिल्डवेल प्राइवेट लिमिटेड के तीन प्रवर्तकों और पूर्व निदेशकों को गिरफ्तार कर लिया है। ईडी अधिकारियों ने बताया कि ये गिरफ्तारियां एक हजार करोड़ रुपये से अधिक के धनशोधन मामले से जुड़ी हुई हैं। रमन पुरी, वरुण पुरी और विक्रम पुरी सात साल से अधिक समय से अदालत के समन से बच रहे थे, उन्हें कई संगीन अपराधों में भगोड़ा घोषित किया गया था और हाल ही में दिल्ली पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया था। यूनिवर्सल बिल्डवेल प्राइवेट लिमिटेड एक रियल एस्टेट कंपनी है, जो आवासीय और वाणिज्यिक संपत्तियों के विकास में शामिल है।

गगनयान मिशन के लिए तैयारियां तेजी पर

नई दिल्ली। भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान' वर्ष 2027 की पहली तिमाही में प्रक्षेपित किया जाएगा और इसके लिए आवश्यक अवसंरचना जैसे ऑर्बिटल मॉड्यूल प्रिपरेशन फैसिलिटी, गगनयान कंट्रोल सेंटर, क्रू प्रशिक्षण सुविधा और लॉन्च पैड में आवश्यक संशोधन पूरे कर लिए गए हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बृहस्पतिवार को राज्यसभा को एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गगनयान कार्यक्रम के तहत ह्यूमन रेटेड लॉन्च व्हीकल (एचएलवीएम3) का विकास और ग्राउंड परीक्षण पूरा हो चुका है।

निकम ने राज्यसभा सदस्यता की ली शपथ

नई दिल्ली। राज्यसभा में बृहस्पतिवार को वरिष्ठ वकील एवं न्यायविद् उज्ज्वल निकम ने मनोनीत सदस्य के रूप में शपथ ली। निकम ने मराठी में ईश्वर के नाम पर शपथ ली। शपथ लेने के बाद सदस्यों ने मेजें थपथपाकर उनका स्वागत किया। निकम एक विख्यात वकील हैं, जिन्होंने सरकारी वकील के रूप में 2008 सहित विभिन्न महत्वपूर्ण मुकदमों को अभियोजन पक्ष की ओर से लड़ा था। उन्होंने 2024 में मुंबई उत्तर मध्य सीट से भाजपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था, जिसमें वह हार गये थे। राष्ट्रपति ने हाल में चार विशिष्ट नागरिकों को राज्यसभा के लिए मनोनीत किया था।

विपक्षी सांसदों का संसद परिसर में प्रदर्शन

सोनिया गांधी समेत कई नेताओं ने बिहार में एसआईआर पर जताया विरोध

मानसून सत्र

नई दिल्ली, एजेंसी

विपक्षी 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के कई घटक दलों के सांसदों ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का विरोध करते हुए बृहस्पतिवार को संसद भवन परिसर में प्रदर्शन किया। संसद के 'मकर द्वार' के निकट इस विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, समाजवादी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल और कई अन्य दलों के सांसद शामिल हुए।

विपक्षी सांसदों ने एक बड़ा बैनर भी ले रखा था, जिस पर 'एसआईआर-लोकतंत्र पर वार' लिखा हुआ था। उन्होंने 'एसआईआर वापस लो' के नारे लगाए। विपक्षी सांसदों ने कहा कि इस विषय पर संसद में चर्चा होनी चाहिए। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने जनता दल (यूनाइटेड) के सांसद गिरिधारी यादव के बयान का हवाला देते हुए कहा कि अब तो सत्तापक्ष के लोग भी एसआईआर पर सवाल उठा रहे हैं, ऐसे में इस पर संसद में चर्चा होनी चाहिए। यादव ने एसआईआर की कवायद का विरोध करते हुए कहा था कि जो सूची लोकसभा चुनाव में सही थी, वो विधानसभा चुनाव में गलत कैसे हो सकती है।

बिहार में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण के विरोध संसद के बाहर प्रदर्शन करते विरोधी दलों के नेता। ● एजेंसी

नई पीढ़ी के संस्कार देश देख रहा है: बिरला

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन में हंगामा करने के लिए कांग्रेस सदस्यों को आड़े हाथों लिया। कहा, देश की सबसे पुरानी पार्टी के संस्कार सदन में नारेबाजी करने, तख्तियां लाने और मेजें ठोंकने के लिए नहीं रहे हैं, लेकिन इस दल के मौजूदा सांसदों का आचरण पूरा देश देख रहा है। बिरला ने कहा, पहले भी कहा गया है कि प्रश्नकाल महत्वपूर्ण समय होता है। इसमें जनता के सवाल होते हैं और सरकार की जवाबदेही होती है, कई सांसदों ने कहा कि उनका प्रश्नकाल के दौरान मुश्किल से प्रश्न आता है, लेकिन आप लोगों का जिस तरह का व्यवहार होता है, वो संसद की गरिमा के अनुकूल नहीं है।

तेजस्वी बोले- बिहार में हमारे पास खुला है चुनाव का बहिष्कार करने का विकल्प

पटना, एजेंसी

● कहा- गठबंधन सहयोगियों के साथ चर्चा करने के बाद लेंगे निर्णय

राजद नेता तेजस्वी यादव ने बृहस्पतिवार को कहा कि बिहार में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर पैदा विवाद के मद्देनजर उनकी पार्टी के पास आगामी चुनाव का बहिष्कार करने का विकल्प खुला है। विपक्ष के नेता ने मानसून सत्र के अंतिम पूर्व दिन राज्य विधानसभा के बाहर संवाददाताओं के सवालों का जवाब देते हुए यह टिप्पणी की।

यादव ने कहा, समय आने पर, हम गठबंधन सहयोगियों के साथ चर्चा के बाद कोई निर्णय लेंगे। एसआईआर के नाम पर जो कुछ हो रहा है, वह किसी धोखाधड़ी से कम नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया, मतदाताओं की ओर से बूथ-स्तरीय अधिकारी गणना प्रपत्रों पर अपने हस्ताक्षर और अंगूठे के निशान लगा रहे हैं। खाली प्रपत्रों का इस्तेमाल रद्दी कागज की तरह किया जा रहा है। इन विसंगतियों की ओर इशारा करने वाले स्वतंत्र पत्रकारों पर प्राथमिकियां दर्ज की जा रही है और सरकार को यह सब ठीक लग रहा है क्योंकि चुनाव आयोग सत्ताधारी दल के एक राजनीतिक औजार की तरह काम कर रहा है।

चुनाव आयोग की धोखाखड़ी के 100 प्रतिशत सबूत : राहुल

नई दिल्ली, एजेंसी

आयोग ने किया आरोपों का खंडन

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को दावा किया कि उनकी पार्टी के पास कर्नाटक के एक निर्वाचन क्षेत्र में निर्वाचन आयोग की ओर से धोखाधड़ी किए जाने के 100 प्रतिशत सबूत हैं और यदि आयोग सोचता है कि वह इससे बच निकलेगा, तो यह उसकी गलतफहमी है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने यह आरोप भी लगाया कि निर्वाचन आयोग अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं कर रहा है।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने बिहार में जारी विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के बारे में पूछे जाने पर संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, यह बहुत ही गंभीर मामला है। उन्होंने कर्नाटक के निर्वाचन क्षेत्र के नाम का उल्लेख नहीं किया।

राहुल के आरोपों पर निर्वाचन आयोग ने कहा, अगर चुनाव याचिका दायर की गई है, तो माननीय उच्च न्यायालय के फैसले का इंतजार करें। अगर नहीं, तो अभी बेबुनियाद आरोप क्यों लगाए जा रहे हैं? चुनाव परिणाम घोषित होने के 45 दिनों के भीतर चुनाव याचिका दायर की जा सकती है। ऐसी याचिकाएं उस राज्य के उच्च न्यायालयों में दायर की जा सकती हैं, जिसमें संबंधित निर्वाचन क्षेत्र आता है।

कांग्रेस ने की धनखड़ के विदाई समारोह की मांग

नई दिल्ली। कांग्रेस ने पूर्व उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के लिए विदाई समारोह आयोजित करने की मांग की है, हालांकि सरकार के स्तर पर इस मांग को लेकर कोई तवज्जो नहीं दी गई। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने बुधवार शाम राज्यसभा की कार्य मंत्रणा समिति (बीएसी) की बैठक में यह मांग उठाई। सूत्रों ने बताया कि सरकार की ओर से इस मुद्दे पर चुप्पी रही और केंद्रीय मंत्री जे पी नड्डा तथा किरेन रीजीजू ने इस मांग पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

मृत और स्थाई प्रवासियों को सूची में नहीं रख सकते

नई दिल्ली। बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर आलोचनाओं का सामना कर रहे मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार ने बृहस्पतिवार को कहा कि आयोग किसी प्रभाव में आकर मृतकों, स्थायी रूप से पलायन कर चुके लोगों या कई जगहों पर मतदाता के रूप में दर्ज लोगों के नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं कर सकता। उनकी यह टिप्पणी विपक्षी दलों द्वारा बिहार की मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर आयोग पर बढ़ते हमलों के बीच आई है। विपक्ष का दावा है कि इस कदम से करोड़ों पात्र नागरिक मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। आयोग के अनुसार, उन्होंने कहा, क्या निर्वाचन आयोग द्वारा पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से तैयार की जा रही शुद्ध मतदाता सूची निष्पक्ष चुनाव और मजबूत लोकतंत्र की नींव नहीं है।

● विपक्षी दलों के विरोध के बीच दिया सीईसी ने जवाब

मंडी में सौ फीट गहरी खाई में गिरी बस, आठ की मौत

मंडी (हिमाचल प्रदेश), एजेंसी

● बस में सवार थे 29 लोग, गंभीर घायल 17 अस्पताल में कराए भर्ती

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में एक सरकारी बस सड़क से फिसलकर 100 फीट नीचे खाई में गिर गई। इस हादसे में चार महिलाओं सहित आठ लोगों की मौत हो गई।

यह दुर्घटना मसेरन के निकट तरंगला में उस समय हुई जब हिमाचल सड़क परिवहन निगम (एचआरटीसी) की बस सरकाघाट से जिले के दुर्गापुर जा रही थी। बस में चालक और परिचालक सहित 29 लोग सवार थे। पुलिस ने बताया कि पांच लोगों को सरकारी अस्पताल सरकाघाट, दो को राजकीय मेडिकल कॉलेज नेरचौक और एक को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) बिलासपुर में मृत घोषित कर दिया गया।

पुलिस ने बताया कि 17 घायलों का राजकीय मेडिकल कॉलेज नेरचौक, एम्स बिलासपुर और आरकेजीएमसी हमीरपुर में इलाज जारी है, जबकि चार घायलों का सरकारी अस्पताल सरकाघाट में इलाज किया जा रहा है। हादसे के बाद स्थानीय निवासियों ने तुरंत पुलिस को सूचित किया। मंडी की पुलिस अधीक्षक (एसपी) साक्षी वर्मा ने बताया कि स्थानीय पुलिस और एम्बुलेंस टीमों ने तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर बचाव अभियान चलाया और पीड़ितों को बाहर निकाला। घटनास्थल पर मौजूद वर्मा ने बताया कि दुर्घटना का कारण अभी पता नहीं चल पाया है। उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने एम्स बिलासपुर में घायलों से मुलाकात की। अग्निहोत्री के पास परिवहन विभाग का भी प्रभार है। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने घटना पर दुख व्यक्त किया है और मंडी जिला प्रशासन को मृतकों के परिजनों को अनुग्रह राशि तथा घायलों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है।

उपराष्ट्रपति के चुनाव में साझा उम्मीदवार उतार सकता है इंडिया

नई दिल्ली। विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन उपराष्ट्रपति के चुनाव में साझा उम्मीदवार उतार सकता है, हालांकि सभी घटक दलों से विचार-विमर्श के बाद ही इस पर अंतिम निर्णय किया जाएगा।

सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। विपक्षी गठबंधन के एक वरिष्ठ नेता ने बताया, उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर यह भावना है कि इसमें उम्मीदवार उतारा जाए, चाहे नतीजे कुछ भी हों क्योंकि ऐसा करने से राजनीतिक संदेश जाएगा। जगदीप धनखड़ ने बीते सोमवार शाम स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था, हालांकि उनके इस्तीफे के पीछे के कारणों को लेकर अटकलों का दौर जारी है।

दोनों सदनों की सदस्य संख्या 782 है और उपराष्ट्रपति चुनाव में विजय के लिए 392 वोट हासिल करने होंगे, बशर्ते सभी पात्र मतदाता मताधिकार का इस्तेमाल करें। मनोनीत सदस्यों समेत लोकसभा और राज्यसभा के सभी सदस्य चुनाव में मतदान करते हैं। लोकसभा में भाजपा नेतृत्व वाले राजग के 542 सदस्यीय सदन में 293 सदस्यों का समर्थन प्राप्त है।

संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवादी' और 'पंथनिरपेक्ष' शब्द हटाने की कोई योजना नहीं

नयी दिल्ली, एजेंसी

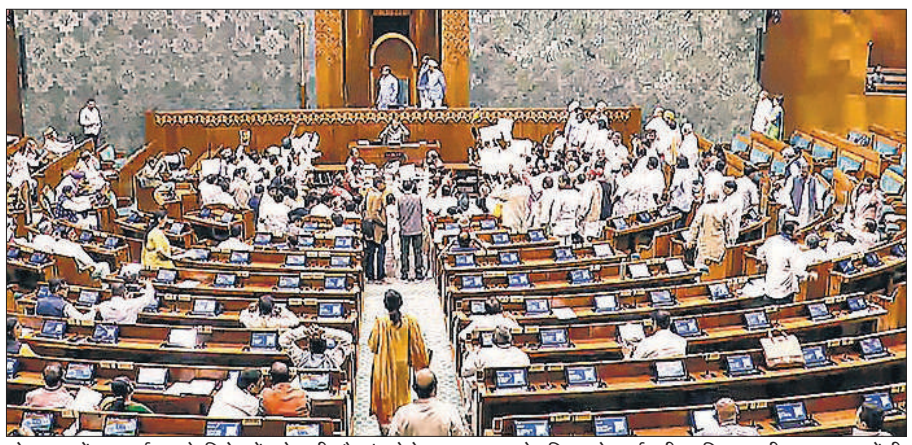

लोकसभा में एसआईआर के विरोध में नारेबाजी और हंगामे के बाद अध्यक्ष ओम बिरला ने कार्यवाही स्थगित कर दी। ● एजेंसी

सरकार ने गुरुवार को संसद में कहा कि संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'पंथनिरपेक्ष' शब्दों पर पुनर्विचार करने या उन्हें हटाने की वर्तमान में कोई योजना नहीं है। सरकार ने यह भी कहा कि उसने संविधान की प्रस्तावना से इन दोनों शब्दों को हटाने के लिए 'औपचारिक रूप से कोई कानूनी या संवैधानिक प्रक्रिया' नहीं शुरू की है।

कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में राज्यसभा को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कुछ सार्वजनिक या राजनीतिक क्षेत्रों में इस पर चर्चा या बहस हो सकती है, लेकिन इन शब्दों के संशोधन के संबंध में ''सरकार द्वारा किसी औपचारिक फैसले या प्रस्ताव की घोषणा नहीं की गई है।'' उन्होंने कहा कि सरकार का आधिकारिक रुख यह है कि संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'पंथनिरपेक्ष' शब्दों पर पुनर्विचार करने या (प्रस्तावना से) उन्हें हटाने की वर्तमान में कोई योजना या इरादा नहीं है। मंत्री ने कहा कि प्रस्तावना में संशोधन के संबंध में किसी भी चर्चा के लिए गहन विचार-विमर्श और व्यापक सर्व-सम्मति की आवश्यकता होगी, लेकिन अब तक सरकार ने इन प्रावधानों में बदलाव करने के लिए कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं शुरू की है। मेघवाल ने बताया कि नवंबर 2024 में, उच्चतम न्यायालय ने 1976 के संशोधन (42वां संविधान संशोधन) को चुनौती देने वाली याचिकाओं को यह उल्लेख करते हुए खारिज कर दिया था कि संविधान में संशोधन करने की संसद की शक्ति प्रस्तावना तक विस्तारित है।

न्यायालय ने स्पष्ट किया कि भारतीय संदर्भ में 'समाजवादी' एक कल्याणकारी राज्य (शासन) को व्यक्त करता है और निजी क्षेत्र के विकास में बाधा नहीं डालता है वहीं 'पंथनिरपेक्ष' संविधान के मूल ढांचे का अभिन्न हिस्सा है। कुछ सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों द्वारा बनाए गए माहौल के बारे में मेघवाल ने कहा कि कुछ समूह हो सकता है कि अपनी राय व्यक्त कर रहे हों, या इन शब्दों पर पुनर्विचार की वकालत कर रहे हों। उन्होंने कहा कि ऐसी गतिविधियां, मुद्दे पर सार्वजनिक विमर्श का माहौल तो बना सकती हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि सरकार के आधिकारिक रुख या कार्रवाई को प्रतिबिंबित करे।

बिहार सरकार ने नहीं दिया 70 हजार करोड़ रुपये का उपभोग प्रमाणपत्र

पटना, एजेंसी

● धनराशि का उपयोग इच्छित उद्देश्य के लिए हुआ, ये गारंटी नहीं : कैग

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने 70,877 करोड़ रुपये के कार्यों के उपभोग प्रमाणपत्र जमा करने में नाकाम रहने पर बिहार सरकार की खिंचाई की है।

राज्य के वित्त पर कैग की वित्त वर्ष 2023-24 की रिपोर्ट बृहस्पतिवार को राज्य विधानसभा में पेश की गई। इस रिपोर्ट में कहा गया है, निर्धारित समय सीमा के भीतर उपभोग प्रमाणपत्र जमा करने की शर्त के बावजूद 31 मार्च, 2024 तक महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार को 70,877.61 करोड़ रुपये के 49,649 बकाया उपभोग प्रमाणपत्र नहीं मिले। ऐसे में इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वितरित धनराशि का उपयोग इच्छित उद्देश्य के लिए किया गया है।

उपभोग प्रमाणपत्र न मिलने से गबन और धन के दुरुपयोग का जोखिम बना रहता है। कुल 70,877.61 करोड़ में से 14,452.38 करोड़ रुपये 2016-17 तक की अवधि के हैं। रिपोर्ट के मुताबिक सर्वाधिक भुगतान न करने वाले विभागों में पंचायती राज 28,154.10 करोड, शिक्षा 12,623.67 करोड़, शहरी विकास 11,065.50 करोड़, ग्रामीण विकास 7,800.48 करोड़ और कृषि 2,107.63 करोड़ रुपये शामिल हैं।

मदनी का विपक्ष से असम में बहुदलीय प्रतिनिधि मंडल भेजने का अनुरोध

नई दिल्ली, एजेंसी

असम में ध्वस्तीकरण अभियान की पृष्ठभूमि में प्रमुख मुस्लिम संगठन जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने विपक्षी दलों के सांसदों से एक बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल पूर्वोत्तर राज्य भेजने का आग्रह किया है।

संगठन की ओर से जारी एक बयान बयान के मुताबिक, मदनी ने बुधवार रात एक होटल में विपक्षी सांसदों के लिए आयोजित रात्रि भोज के दौरान यह गुजारिश की। इस भोज में कांग्रेस, सपा, टीएमसी, बीजद, द्रमुक और ऑल इंडिया मुस्लिम लीग के 20 से अधिक सांसद मौजूद थे। इसमें कहा गया है कि देश में चल रहे अल्पसंख्यक विरोधी रवैये, असम में बांग्लाभाषियों पर सरकारी अत्याचार, फलस्तीन पर सरकार का रुख, नफरत भरी घटनाओं व बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण पर बातचीत की गई और जाति आधारित जनगणना जैसे संवेदनशील मुद्दों पर एक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की गई।

शाह ने सहकारिता आंदोलन को मजबूत करने के लिए नई राष्ट्रीय नीति की पेश

नई दिल्ली, एजेंसी

● 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य मुख्य उद्देश्य

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए एक नई राष्ट्रीय नीति की घोषणा की। इस नीति का उद्देश्य हर गांव में अधिक पेशेवर रूप से प्रबंधित और वित्तीय रूप से स्वतंत्र सहकारी संगठन बनाना है। सहकारी समितियों के लिए इसी तरह की नीति वर्ष 2002 में लाई गई थी।

उस समय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सत्ता में था। 23 साल बाद नई नीति लाई गई है। 'राष्ट्रीय सहकारिता नीति - 2025' का अनावरण करते हुए, शाह ने ज़ोर देकर कहा कि सहकारिताएं, कराधान सहित सभी पहलुओं में कॉरपोरेट क्षेत्र के बराबर हैं। उन्होंने राज्यों से नई नीति को जल्द से जल्द लागू करने का आग्रह किया और इस बात पर जोर दिया कि सहकारी क्षेत्र में भारत के लिए विकास लाने की क्षमता है।

भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। उन्होंने कहा कि इस मिशन का उद्देश्य सहकारी संगठनों को पेशेवर, पारदर्शी, तकनीक से लैस और वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने के साथ-साथ सफल भी बनाना है। शाह ने कहा, देश के हर गांव में कम से कम एक सहकारी संस्था स्थापित करने का लक्ष्य है।

बेंगलुरु भगदड़ के लिए आयोजक और पुलिस उच्चाधिकारी जिम्मेदार

बेंगलुरु, एजेंसी

● न्यायिक जांच आयोग ने मुख्यमंत्री को सौंपी अपनी रिपोर्ट

चिन्नास्वामी स्टेडियम के पास चार जून को हुई भगदड़ की जांच कर रहे एक सदस्यीय आयोग ने इस घटना के लिए आयोजकों और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों दोनों को जिम्मेदार ठहराया है। भगदड़ में 11 लोगों की जान चली गई थी।

उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति माइकल डी'कुन्हा वाले आयोग ने 11 जुलाई को मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को दो खंडों वाली रिपोर्ट सौंपी। राज्य मंत्रिमंडल ने बृहस्पतिवार को रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी), कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) और डीएनए नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू करने का फैसला किया। इसके अलावा, मंत्रिमंडल ने दोषी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विभागीय जांच शुरू करने का निर्देश दिया। कानून एवं संसदीय कार्य मंत्री एच के पाटिल द्वारा साझा की गई इस रिपोर्ट में आयोजन के आयोजकों- रॉयल चैलेंजर्स स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (आरसीएसपीएल), डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क और केएससीए पर घोर लापरवाही का आरोप लगाया गया है।

तीसरी मंजिल से छलांग लगा गर्भवती किशोरी ने जान दी

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम दिल्ली के पूठ खुर्द इलाके में आठ महीने की गर्भवती एक किशोरी ने एक घर की तीसरी मंजिल से कथित तौर पर छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि 17 वर्षीय किशोरी अपनी बहन के घर की छत से छलांग लगाने के बाद गंभीर रूप से घायल हो गई थी, जिसके बाद पहले उसे पास के एक चिकित्सक के पास ले जाया गया, जिसने उसे रोहिणी के भगवती अस्पताल रेफर कर दिया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

मंथन | संघ प्रमुख मोहन भागवत ने 60 से ज्यादा मौलानाओं के साथ साढ़े तीन घंटे तक की चर्चा

संघ की पहल : मौलानाओं-पुजारियों में जारी रहेगा संवाद

नई दिल्ली, एजेंसी

60 इमाम, मुफ्ती एवं मदरसों के मोहतमिम (कुलपति) मौजूद थे। इलियासी ने बताया कि यह बैठक करीब साढ़े तीन घंटे चली और इसमें मुसलमानों से जुड़े प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की गई और यह सहमति बनी कि संवाद का यह सिलसिला बरकरार रहेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने बृहस्पतिवार को इमामों और मुस्लिम विद्वानों के साथ बैठक की जिसमें हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच संवाद जारी रखने पर सहमति जताई गई।

'ऑल इंडिया इमाम आर्गनाइशन' के प्रमुख उमेर अहमद इलियासी की तरफ से इस बैठक का आयोजन यहां हरियाणा भवन में किया गया था, जिसमें भागवत के अलावा संघ के कुछ अन्य पदाधिकारी और आरएसएस ने बैठक को सकारात्मक बताया और कहा कि यह समाज के सभी वर्गों के साथ व्यापक संवाद की निरंतर प्रक्रिया का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य यह है कि देश के हित में सभी लोग मिलकर कैसे काम कर सकते हैं। संघ के राष्ट्रीय प्रचार एवं मीडिया विभाग के प्रमुख सुनील आंबेकर ने बताया, यह समाज के सभी वर्गों के साथ व्यापक संवाद की एक सतत प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि देश हित में सभी लोग मिलकर कैसे काम कर सकें। आज की चर्चा भी सकारात्मक रही।

बैठक में आरएसएस की तरफ से भागवत के साथ कृष्ण गोपाल और इंद्रेश कुमार सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे। इलियासी ने कहा, बैठक में राष्ट्रीय मुद्दों पर खुलकर चर्चा हुई। यह निर्णय लिया गया कि मंदिरों और मस्जिदों, इमामों और पुजारियों, गुरुकुलों और 'मदरसों' के बीच संवाद होना चाहिए। उनके मुताबिक, आरएसएस प्रमुख ने इस विचार की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस बात पर आम सहमति बनी कि उनका संगठन और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मिलकर इस संवाद को आगे बढ़ाएंगे।

वक्फ, कॉमन सिविल कोड के मुद्दे उठे

इलियासी नेकहा, संवाद ही गलतफहमियां दूर करता है, नफ़रत को खत्म करता है, आपसी समन्वय स्थापित करता है और आपसी विश्वास का निर्माण करता है। उन्होंने कहा कि बातचीत को ज़मीनी स्तर पर ले जाने के लिए मंदिरों और मस्जिदों के जरिए समन्वय स्थापित किया जा सकता है। सूत्रों का कहना है बैठक में कई प्रतिनिधियों ने वक्फ, समान नागरिक संहिता और मुसलमानों से जुड़े कुछ अन्य मुद्दे भी उठाए।

अमृत विचार

शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

"संगति आप को ऊंचा उठा भी सकती है और यह आप की ऊंचाई से गिरा भी सकती है। इसलिए संगति अच्छे लोगों से करें।"

अहम कूटनीतिक दौरा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मालदीव यात्रा अहम कूटनीतिक दौरा होने के साथ हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत बनाने की दिशा में सशक्त कदम है। पड़ोसी देश मालदीव और भारत की दोस्ती दक्षिण एशिया की सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारियों में गिनी जाती रही है। लेकिन बीते दो वर्षों में मालदीव के साथ भारत के रिश्तों में खटास आ गई थी। मालदीव का चीन की तरफ झुकाव काफी बढ़ गया था। ऐसे में बिगड़े रिश्तों के बीच प्रधानमंत्री मोदी का मालदीव के 60वें स्वतंत्रता दिवस पर बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करना बाजी पलटने वाला मिशन साबित हो सकता है। दरअसल, साल 2023 में 'इंडिया आउट' अभियान चलाकर मालदीव के राष्ट्रपति बनने के बाद वहां मौजूद भारतीय सैनिकों को देश छोड़ने का आदेश देने और चीन का गुणगान गाने वाले मोहम्मद मुइज्जू अगर अब प्रधानमंत्री मोदी का गर्मजोशी से स्वागत करने को आतुर हैं, तो इसे हाल में पाकिस्तान को परास्त करने वाले ऑपरेशन सिंदूर के बाद कूटनीतिक मोर्चे पर भारत की बड़ी सफलता माना जा रहा है। भारत पहले ही 'पड़ोसी पहले' नीति के तहत मालदीव को विशेष प्राथमिकता देता रहा है। मालदीव के साथ भारत के संबंध न सिर्फ ऐतिहासिक है, बल्कि मौजूदा वैश्विक भू-राजनीति के संदर्भ में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गए हैं। हाल के वर्षों में भारत ने मालदीव में सड़कों, पुलों और आवास परियोजनाओं में बड़ा निवेश भी किया है। ऐसे में मोदी की यह यात्रा इन परियोजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन करने के साथ नई योजनाओं की शुरुआत का बड़ा अवसर होने के साथ इस बात का स्पष्ट संदेश देगी कि भारत अपने पड़ोसियों की कभी अनदेखी नहीं करता है और उनकी प्रगति में सहभागी बनकर क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करता है। प्रधानमंत्री का मालदीव दौरा रक्षा सहयोग, नौसैनिक अभ्यास, समुद्री निगरानी, पर्यटन और जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ठोस संवाद और समझौते का आधार बन सकता है। भारत पहले ही मालदीव को कोस्टल सर्विलांस रडार सिस्टम में जोड़ता रहा है, जिससे हिंद महासागर में भारत की निगरानी शक्ति सुदृढ़ होती रही है। इस सबके बीच वर्तमान वैश्विक घटनाक्रमों के चलते एशिया और अफ्रीका को जोड़ने वाले समुद्री मार्ग के मध्य में स्थित होने से मालदीव महाशक्तियों की रणनीतिक स्पर्धा के केंद्र में आ गया है। चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति के तहत हिंद महासागर में बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए पहले ही चुनौती बनी हुई है। ऐसे में यह जरूरी हो गया था कि मालदीव जैसे पारंपरिक मित्र के साथ विश्वास और साझेदारी को नए सिरे से परिभाषित किया जाए। मालदीव के साथ मजबूत रिश्ते भारत को श्रीलंका और अन्य छोटे द्वीपीय देशों के साथ मामरिक नेटवर्क बेहतर बनाने में भी मदद करेंगे। इन नई परिस्थितियों में मालदीव की लहरों पर भारत की नए सिरे से सवारी को एक नए युग की शुरुआत के साथ कई बड़े बदलावों और प्रभावों की नींव रखने वाला कहा जा सकता है।

प्रसंगवश

क्रिप्टो की उड़ान और भरोसे की गिरावट

भारत में डिजिटल वित्तीय क्रांति ने निवेश की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। क्रिप्टोकरेंसी अब सिर्फ़ तकनीकी नवाचार नहीं रही, यह एक जीवंत, जोखिमपूर्ण और आकर्षक निवेश का साधन बन चुकी है, जिसमें लाखों भारतीयों ने अपनी मेहनत की कमाई लगाई है। लेकिन इस तेजी से बढ़ते डिजिटल बाजार के पीछे एक सच्चाई ऐसी है, जिसे नज़रअंदाज़ करना अब संभव नहीं रहा-हमारी सुरक्षा व्यवस्था और कानूनी तैयारी, इस तकनीकी रफ्तार के मुकाबले पीछे छूट रही है। हाल ही में क्रिप्टो एक्सचेंज कॉइनडीसीएक्स पर हुआ साइबर हमला और उससे एक साल पहले वज़ीरएक्स पर हुआ करोड़ों डॉलर का नुकसान, इस असंतुलन के सबसे जीवंत उदाहरण हैं। 19 जुलाई 2025 को कॉइनडीसीएक्स के एक आंतरिक खाते से 368 करोड़ की डिजिटल संपत्ति चोरी हो गई। हालांकि कॉइनडीसीएक्स ने साफ़ किया कि किसी भी ग्राहक की निधि इस हमले से प्रभावित नहीं हुई है, क्योंकि सभी उपभोक्ता फंड कोल्ड वॉलेट्स में सुरक्षित रखे गए थे। यह साइबर हमला एक्सचेंज के उस वॉलेट पर हुआ, जिसका इस्तेमाल बाजार में लिक्विडिटी बनाए रखने के लिए किया जाता था। कंपनी ने चोरी की गई संपत्ति की वापसी के लिए अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों के साथ समन्वय बनाकर एक संगठित प्रयास शुरू किया और साथ ही उसने $11 मिलियन तक का बाउंटी प्रोग्राम घोषित किया-एक ऐसा कदम जो दर्शाता है कि यदि निजी संस्थाएं ज़िम्मेदारी और इच्छाशक्ति से काम लें, तो संकट के समय भी जनता का भरोसा बनाए रखा जा सकता है।

डॉ. शिवम भारद्वाज
असिस्टेंट प्रोफेसर, मथुरा

कॉइनडीसीएक्स का यह सक्रिय और पारदर्शी रवैया उसकी परिपक्वता का संकेत है। लेकिन इसके साथ ही यह प्रश्न भी ज़ोर से उभरता है कि क्या सभी क्रिप्टो कंपनियां इतनी ज़िम्मेदारी निभा सकती हैं? और अगर नहीं, तो क्या हमारे पास ऐसा कोई कानूनी ढांचा मौजूद है जो निवेशकों को साइबर हमलों से सुरक्षा या हानि की भरपाई की गारंटी देता हो? इस सवाल का उत्तर हमें वज़ीरएक्स की घटना में मिलता है-एक साल पहले जुलाई 2024 में। वज़ीरएक्स पर हुए साइबर हमले में $230 मिलियन (लगभग 1,900 करोड़) की क्रिप्टो संपत्ति हैक हो गई थी। लेकिन इस हमले के बाद कंपनी की ओर से जो प्रतिक्रिया सामने आई, उसने लाखों निवेशकों को असमंजस, चिंता और असुरक्षा में धकेल दिया। सबसे पहले तो इस घटना की सूचना देने में देरी हुई, फिर उपयोगकर्ताओं के फंड लॉक कर दिए गए, और उसके बाद शुरू हुआ कानूनी दांवपेंचों का लंबा सिलसिला-वह भी भारत में नहीं, सिंगापुर की अदालतों में। इस निर्णय ने भारतीय निवेशकों को चकित कर दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि उनका मामला अब एक ऐसे मंच पर पहुंच गया है जहां उनकी पहुंच, प्रभाव और अधिकार सीमित हैं। वज़ीरएक्स ने कहा कि वह संरचनात्मक पुनर्गठन के ज़रिए फंड लौटाने के लिए प्रतिबद्ध है, और इस योजना पर 93.1 प्रतिशत लेनदारों ने वोट भी दिया था। लेकिन अदालत ने पहले इसे नामंजूर कर दिया, और अब एक संशोधित योजना पर दोबारा वोटिंग होनी है। कंपनी का कहना है कि कुछ हफ्तों में वितरण शुरू हो जाएगा। पर जो बात साल भर बाद भी नहीं बदली, वह है भारतीय निवेशकों की अनिश्चितता। उनकी संपत्ति अब भी अटकी है, और सरकार की ओर से कोई निर्णायक हस्तक्षेप अब तक नहीं आया है। इन दोनों घटनाओं को एक साथ देखने पर भारत की क्रिप्टो दुनिया की एक विडंबनात्मक तस्वीर सामने आती है। एक ओर कॉइनडीसीएक्स जैसी कंपनी है, जो संकट के समय अपनी जवाबदेही निभाने को तैयार दिखती है, तो दूसरी ओर वज़ीरएक्स जैसे मामले हैं जहां निवेशक एक साल बाद भी अदालत के फैसलों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और इन दोनों के बीच जो चीज़ अनुपस्थित है, वह है सरकार की ओर से ठोस कानूनी पहल। भारत को अब यह तय करना होगा कि वह इस तेजी से बदलती डिजिटल अर्थव्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाना चाहता है या सिर्फ़ दर्शक बना रहना चाहता है। इसलिए अब ज़रूरत किसी आदर्शवाद की नहीं, व्यावहारिक और तत्काल कदम उठाने की है। जो देश इस क्षेत्र में भरोसे और सुरक्षा की बुनियाद तैयार करेंगे, वही डिजिटल अर्थव्यवस्था के भविष्य में नेतृत्व की भूमिका निभा सकेंगे।

संसद में न हो सड़क जैसा व्यवहार

सुनील कुमार महला
स्तंभकार

मॉनसून नवीनता और नवसृजन का प्रतीक है और वर्तमान में संसद का मानसून सत्र चल रहा है, जो 21 जुलाई 2025 से शुरू हुआ था, लेकिन यह बहुत ही दुखद है कि लोकतंत्र का मंदिर कहलवाने वाली संसद में बेवजह बात-बात पर हंगामा खड़ा किया जा रहा है। संसद के प्रति हर देशवासी अथाह सम्मान रखता है और यह उम्मीद करता है कि संसद के सत्र में चलने वाली चर्चाएं और मुद्दे सार्थक होंगे, जिससे समाज और देश आगे बढ़ सकेगा, लेकिन संसद में ठीक उलट हो रहा है। मुख्य मुद्दे और चर्चाएं ग़ायब हैं और ऐसे मुद्दों पर परिचर्चाएं हों रहीं हैं, जिनका कोई मतलब और औचित्य नजर नहीं आता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि संसद सत्रों के दौरान अनेक बार देखा गया है कि मुद्दे से ज्यादा हंगामे को महत्व दिया जाता है और ऐसा ही कुछ संसद के मानसून सत्र के दौरान भी देखने को मिल रहा है।

> संसद के प्रति हर देशवासी अथाह सम्मान रखता है और यह उम्मीद करता है कि संसद के सत्र में चलने वाली चर्चाएं और मुद्दे सार्थक होंगे, जिससे समाज और देश आगे बढ़ सकेगा, लेकिन संसद में ठीक उलट हो रहा है।

लोकसभा में विपक्ष के हंगामे के कारण 23 जुलाई बुधवार को लगातार तीसरे दिन सदन की कार्यवाही नहीं चल पाई। दरअसल, विपक्षी दलों के सदस्यों ने बिहार में वोटर लिस्ट के लिए किए जा रहे 'स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन' (एसआईआर) और अन्य मुद्दों को लेकर सदन में हंगामा किया, जिसके कारण लोकसभा की कार्यवाही सुबह 11 बजे शुरू होने के बाद दो बार स्थगन के साथ दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई।

यहां जानकारी देना चाहूंगा कि बिहार विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ही निर्वाचन आयोग 'स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन' यानी कि एसआईआर करवा रहा है। इस संबंध में आयोग का यह कहना है कि कानून व संविधान के तहत उसे यह अधिकार प्राप्त है कि वह नागरिकता से जुड़े दस्तावेज मांग सकता है, ताकि नागरिकों को उचित मताधिकार मिल सके। इधर, विपक्ष यह आरोप लगा रहा है कि आयोग से एसआईआर की आड़ में नागरिकता (सिटिजनशिप) की जांच कर रहा है।

यहां बताता चलूं कि सुप्रीम कोर्ट अपने फैसले में यह स्पष्ट कर चुका है कि मताधिकार केवल संवैधानिक अधिकार है, मौलिक अधिकार नहीं। मगर भारतीय नागरिक होने के बावजूद उसे विभिन्न शर्तें पूरी करनी होती है, और आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने होते हैं। विपक्ष का यह आरोप है कि गणना फार्म में मांगे गए दस्तावेज में आधार, मतदाता-पत्र व राशन कार्ड का न शामिल होना कहीं न कहीं संदेह पैदा करता है।

चूंकि सरकार 'आधार' को केवल पहचान-पत्र मान रही है, इसलिए यह संशय उठा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि जल्द ही आयोग इसमें सुधार कर ले तो, शायद विपक्ष के इन आरोपों-प्रत्यारोपों से बचा जा सकता है। बहरहाल, जरूरत इस बात की है कि आयोग अपनी छवि, गरिमा और स्वायत्तता का ख्याल रखे।

बहरहाल, संसद के मानसून सत्र में विपक्षी दलों के हंगामे के बीच ही खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने राष्ट्रीय खेल शासन विधेयक, 2025 और राष्ट्रीय डोपिंग रोधी संशोधन विधेयक 2025 सदन में पेश किए। दुःखद है कि लोकसभा में विपक्षी सांसद नारेबाजी करते हुए वेल में चले आए। इतना ही नहीं, उन्होंने काले कपड़े भी लहराए। विपक्षी सांसदों ने हंगामा किया तो लोकसभा स्पीकर ओम बिरला भड़क गए और उन्होंने विपक्षी सांसदों को चेतावनी देते हुए यह कहा कि 'आप सड़क का व्यवहार संसद में कर रहे हैं। ये देश देख रहा है।' उन्होंने यह भी कहा कि 'सदन में तख्तियां लेकर आने वालों पर मुझे निर्णायक कार्रवाई करनी पड़ेगी।' कितनी बड़ी बात है कि लोकसभा स्पीकर के इस कथन का विपक्षी सांसदों पर कोई असर दिखाई नहीं दिया। इधर, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि- 'सरकार कहती है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' चालू है, जबकि डोनाल्ड ट्रम्प इसे बंद कराने का दावा कर चुके हैं।' हाल फिलहाल, मीडिया के हवाले से यह खबरें आईं हैं कि सरकार 'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा को तैयार है और इसके लिए लोकसभा में 28 जुलाई और राज्यसभा में 29 जुलाई को चर्चा होगी।

बहरहाल, यह अच्छी बात है कि सरकार 'ऑपरेशन सिंदूर' पर सार्थक चर्चा के लिए तैयार है। ऐसे में विपक्षी दलों के नेताओं का भी यह कर्तव्य व जिम्मेदारी बनती है कि वे सार्थक, संयमित चर्चा को अंजाम दें। आज देश में अनेक मुद्दे मौजूद हैं, जिन पर संसद में सार्थक चर्चाएं होनी चाहिए, व उन मुद्दों के समाधान के लिए यथेष्ठ प्रयासों को बल मिलना चाहिए, लेकिन दुःख इस बात है कि ऐसा होता नहीं है और हर बार सत्र हंगामे की भेंट चढ़ जाते हैं, वास्तव में संसद सही ढंग से चलनी चाहिए, ताकि हम हमारे देश को प्रगति व उन्नयन के पथ की ओर अग्रसर कर सकें। पक्ष-विपक्ष दोनों को ही यह चाहिए कि दोनों ही पूरी गंभीरता व संवेदनशीलता से देश व समाज के विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए माहौल बनाने के लिए आगे आएं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि संसद के सत्र के संबंध में हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 85 में प्रावधान किया गया है और संसद के किसी सत्र को बुलाने की शक्ति सरकार के पास है। इस पर निर्णय संसदीय मामलों की कैबिनेट समिति द्वारा लिया जाता है जिसे राष्ट्रपति द्वारा औपचारिक रूप दिया जाता है। संसद चलती है तो बहुत पैसा खर्च होता है, चर्चाएं मुद्दों पर होनी चाहिए, अनर्गल, असार्थक बहस का कोई औचित्य नहीं होता। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को यह चाहिए कि वे लोकतंत्र के पावन व पवित्र मंदिर में अपने आचरण और व्यवहार पर ध्यान दें। सच तो यह है कि संसद हो या व्यावहारिक जीवन, हर कहीं पर अनुशासन और शिष्टाचार बहुत ही जरूरी और आवश्यक है।

आमने

महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा, "यह स्वाभाविक है कि महाराष्ट्र में मराठी भाषा बोलने का अनुरोध किया जाएगा। यह गलत नहीं है। लेकिन भाषा को लेकर कोई भी विवाद या भाषा को लेकर किसी के साथ दुर्व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जब भी ऐसी कोई घटना हुई है, हमने सख्त कार्रवाई की है।

सामने

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा, "हम सभी अपनी मातृभाषा बोलते हैं। बच्चे सबसे पहले अपनी मातृभाषा में "मां" बोलते हैं। हालांकि, बंगाली भाषा को लेकर भाषा युद्ध की घोषणा कर दी गई है। एक और भाषा आंदोलन से सभी में जागरूकता बढ़नी चाहिए। कई जगहों पर बंगाली बोलने पर लोगों को प्रताड़ित किया जाता है। सिर्फ़ बंगाली बोलने पर लोगों को हिरासत में नहीं लिया जा सकता।

विभाजनकारी राजनीति की फसल का सीजन

अनिल यादव
वरिष्ठ पत्रकार

कल्पना कीजिए मुंबई में यूपी के जौनपुर से गया एक आदमी अपनी पान की दुकान पर बैठा है। शिवसेना के उद्धव और राज ठाकरे गुटों के कार्यकर्ता आते हैं। उससे दुकान में रखे सभी सामानों के नाम मराठी में बताने के लिए कहते हैं। उसे सिर्फ भोजपुरी और हिंदी आती है। वे उसे पीटने लगते हैं। पानवाला चिल्लाता है, मराठी नहीं आती तो क्या हुआ हिंदू तो हूं, तुम लोग एक हिंदू को क्यों मार रहे हो? क्या कार्यकर्ता रूक जाएंगे और एक जागरूक हिंदी-हिंदू पानवाले को 'मार दिया जाए या छोड़ दिया जाए' का फैसला करने के लिए अपनी पार्टियों के नेताओं के पास लौट जाएंगे?

भयग्रस्त पानवाला यह सवाल नहीं पूछ सकता। उसे सबसे पहले किसी तरह अपनी जान बचानी है। वह जानता है कि सामने वृहन्नमुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के चुनाव हैं जिसमें मराठी मानुष की अस्मिता को सबसे बड़ा मुद्दा बनाया जा रहा है। लेकिन सत्ताधारी भाजपा चाहती है कि पानवाला यह सवाल पूछे इसीलिए महाराष्ट्र सरकार में मंत्री नितेश राने ने बयान दिया है कि दोनों प्रकार की शिवसेना और कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी पार्टियां क्यों नहीं मस्जिदों से मराठी में अजान देने और मदरसों में पढ़ाई का माध्यम उर्दू के बजाय मराठी करने की मांग कर रही हैं? यह विभाजन की राजनीति में तू डाल-डाल तो मैं पात-पात की स्थिति है। घृणा का निशाना हिंदी से हटाकर अजान पर कर देने से भाषा और मराठी अस्मिता का मुद्दा पीछे जाएगा और हर किस्म का हिंदू खुश होगा, उसके वोटबैंक को बंटने से रोकने वाला एक पक्का धार्मिक बाड़ा बनेगा।

जब तक उद्धव और राज ठाकरे इस चाल की कोई काट सोच रहे हैं आप एक और कल्पना कीजिए। सभी लोग अपने मोबाइल फोनों के जरिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स (एआई) का इस्तेमाल करने अभ्यस्त हो गए हैं। एक बहुत सस्ती चिप बाजार में आ गई है जिसे लोग अपने दिमागों में फिट कराकर दुनिया की कोई भी भाषा समझने और बोलने लगे हैं। हर तरह का व्यापार, पर्यटन, शिक्षा और सबसे बढ़कर प्रवासी मजदूरों की जिंदगी बहुत आसान हो गई है। मुंबई की एक मस्जिद में अजान देने की तैयारी कर रहे एक मुल्ला के पास भाजपा और एकनाथ शिंदे समेत शिवसेना के तीनों धड़ों के कार्यकर्ता जाते हैं और उससे मराठी में अजान देने के लिए कहते हैं। वह अपने फोन पर उंगलियां चलाता है और अरबी के बजाय मराठी में अजान देने लगता है। वह अजान के बाद पूछता है, अगर दुनिया की किसी और भाषा चाइनीज या रूसी या फ्रेंच में अजान देने की जरूरत हो तो बताएं, वह फौरन दे सकता है क्योंकि उसके सॉफ्टवेयर में तीन सौ पैंसठ भाषाओं का विकल्प है।

> भयग्रस्त पानवाला यह सवाल नहीं पूछ सकता। उसे सबसे पहले किसी तरह अपनी जान बचानी है। वह जानता है कि सामने वृहन्नमुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के चुनाव हैं जिसमें मराठी मानुष की अस्मिता को सबसे बड़ा मुद्दा बनाया जा रहा है।

क्या लगता है, अजान देने वाला अपनी धार्मिक पहचान या अस्मिता से जुदा होने के लिए राजी हो जाएगा? अगर संकट की स्थिति में, जान बचाने के लिए कुछ देर के लिए हो भी जाए तो क्या हिंदुत्ववादी पार्टियों के कार्यकर्ताओं के चेहरों पर हवाईयां उड़ने लगेंगी? वे निरूत्तर हो जाएंगे? क्या टेक्नालॉजी के विकास से धर्म-भाषा-जाति की राजनीति की विभाजनकारी दीवारें इतनी आसानी से भरभराकर गिर जाएंगी और एक विज्ञान-तकनीक आधारित राजनीति का नया रास्ता खुल जाएगा? भारतीय राजनीति का देसी अनुभव कुछ और कहता है। ज्यादा संभावना है कि कार्यकर्ता उसके अशुद्ध मशीनी उच्चारण को मुद्दा बनाते हुए मराठी भाषा के अपमान और खुद उसके धर्म के ज्यादातर लोग इस्लाम की पवित्रता और आस्था से खिलवाड़ करने के आरोप लगाएंगे। जब तक यह विवाद चलेगा भाषा और धर्म की रक्षा के नाम पर वोटों के ध्रुवीकरण के नए आक्रामक उपाय सोचे जाएंगे।

कभी शिवसेना भाजपा से ज्यादा उग्र हिंदुत्व वाली पार्टी हुआ करती थी। याद आ सकता है कि बाबरी मस्जिद गिराए जाने के बाद भाजपा अगर-मगर कर रही थी लेकिन शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने दावा किया था कि इस कारनामें को उनके कार्यकर्ताओं ने अंजाम दिया है। शिवसेना सत्ता के लिए सेकुलर पार्टियों के साथ जाकर कुछ नरम पड़ी और टूटी तो भाजपा आगे निकल गई। भाजपा ने भी सेकुलर पार्टियों का साथ लिया लेकिन अपनी हिंदू उग्रता को बनाए भी रखा। अब विधानसभा का रिहर्सल समझे जाने वाले महापालिका चुनावों को सामने पाकर उसके दो धड़े मराठी अस्मिता का मुद्दा लेकर आए हैं जबकि भाजपा को उग्र हिंदुत्व की ताकत पर ज्यादा यकीन है। इसकी बुनियाद में एक तथ्य है कि गरीब राज्यों से आजीविका की तलाश में तेज आवक से मुंबई का 28 प्रतिशत वोटर हिंदी भाषी हो चुका है। इस हिंसा के पीछे वोटों की राजनीति है कहने से भी कुछ नहीं होने वाला है। जनता उसकी कब की अभ्यस्त हो चुकी है। पानवाला और अजान देने वाला दोनों कार्यकर्ताओं के सामने एक और सवाल उठा सकते हैं कि आपको मराठी या हिंदी से क्या मतलब, आपके नेताओं के बच्चे तो अंग्रेजी मीडियम के मंहगे स्कूलों में पढ़ रहे हैं, खुद आप भी अपने बच्चों को थोड़ा सस्ते अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ा रहे हैं या पढ़ाना चाहते हैं? लेकिन यह सवाल भी सिर्फ भय से नहीं एक और बड़े कारण से नहीं पूछा जाएगा। वह यह है कि खुद मुल्ला और पानवाला भी अपने बच्चों को अंग्रेजी सिखाना चाहते हैं ताकि वे आजीविका के अवसरों, ग्लोबल शक्ति और सभ्यता की दौड़ में पिछड़ न जाएं। आजादी के समय सोचा गया था कि शिक्षित होने के साथ धर्मिक जड़ता, जातिवाद, भाषा और क्षेत्रीयताओं के झगड़े खत्म हो जाएंगे लेकिन वे उल्टे बढ़ते गए। इसका कारण यह है कि जनता सिर्फ शिक्षा और आर्थिक बेहतरी से नहीं बदलती बल्कि उसका मानस राजनीतिक पार्टियां अपनी जरूरतों के हिसाब से संगठित अभियान चलाकर निर्मित करती और बिगाड़ती रहती हैं। थोड़ा-बहुत खून बहता है लेकिन यह फूट डालो और राज करो की राजनीति अंग्रेजों के समय से लेकर आज तक कम मेहनत, कम लागत और बहुत कम समय में बंपर फसल दे रही है।

मंथन

कौन अधिक आस्थावान

दिमाग़ की सिफ़त है, क़ुदरत की देन। कट्टरता और उदारता किसी मज़हब की संपत्ति नहीं, व्यक्ति के गुण हैं। वही सब पढ़-सुनकर कोई

कमलाकांत त्रिपाठी
पूर्व आईआरएस

कट्टर हो सकता है, कोई उदार। कट्टर व्यक्ति अपने मज़हब की एकान्तिक बातों को गांठ बांध लेता है और उदार व्यक्ति समावेशी बातों को। कट्टर व्यक्ति को हमेशा यह एहसास बना रहता है कि उसने अन्तिम सत्य पा लिया है। उसके लिए दुनियावाले दो हिस्सों में बंट जाते हैं-वे जो उसके समानधर्मा हैं और वे जो इतरधर्मा हैं। दूसरे हिस्से के लोगों को वह गुमराह और बदतर इंसान मान लेता है। उसका अच्छे-बुरे का विवेक सिमटकर मज़हब में विलीन हो जाता है। रोज़-रोज़ के विपरीत अनुभव को भी वह दरकिनार कर देता है। इतिहास से चुन-चुन कर अपने मज़हब के अच्छे लोगों की अच्छाई याद कर लेता है और दूसरे मज़हब के बुरे लोगों की बुराई।

अपने-पराये का यह बोध अंततः नफ़रत और हिंसा की ओर ही ले जाता है। नफ़रत मनुष्य की सहजता, उसका चैन हर लेती है। घोर कट्टर व्यक्ति नफ़रत से निजात पाने के लिए तलवार तक उठा सकता है। किसी अनजान और निर्दोष व्यक्ति का, जिसने कभी उसका कोई ज़ाती नुक़सान नहीं किया, सर तक क़लम कर सकता है। मज़हबी होने के बावजूद वह भूल जाता है कि उसी ईश्वर/अल्लाह/गॉड ने इतर मज़हबवालों को भी बनाया है। उसकी मर्ज़ी के बिना तो पत्ता तक नहीं हिल सकता, तो दुनिया के इतने सारे लोगों का अस्तित्व (जिनमें स्वभाव से भले-बुरे दोनों शामिल हैं, जैसे उसके मज़हब में भले-बुरे दोनों शामिल हैं) कैसे क़ायम रह सकता है? तात्पर्य यह कि वस्तुतः उसे ईश्वर में विश्वास ही नहीं होता। उसे लगता है, दुनिया ईश्वर ने भले बनाई हो, उसका एक बड़ा हिस्सा ईश्वर के रास्ते पर चलने के बजाय उसके दुश्मन शैतान के रास्ते पर चल पड़ा है। और ईश्वर का इस पर कोई वश नहीं। यानी, ईश्वर शैतान के सामने कमज़ोर पड़ गया है। तो वह ईश्वर का हाथ मज़बूत करने, उसकी सहायता करने, यानी ईश्वर का ही काम करने निकल पड़ता है। ईश्वर को कमज़ोर मानकर ही कोई उसके काम में हाथ बंटाने, उसका काम अपने हाथ में लेने के लिए दौड़ सकता है।

यही हाल किसी विचारधारा, किसी व्यक्ति के कट्टर अनुयायियों का भी होता है। नफ़रत और बेचैनी कट्टरता के अनिवार्य लक्षण हैं। इसी को बुनियादपरस्ती भी कहते हैं। तो बुनियादपरस्ती मज़हब तक महदूद नहीं है। उदार व्यक्ति जैसे किसी मज़हब का अंध या कट्टर अनुयायी नहीं हो सकता वैसे ही किसी विचार, किसी अन्य व्यक्ति का भी अंध या कट्टर अनुयायी नहीं हो सकता। वह किसी अन्य को किसी मज़हब, किसी विचार, किसी व्यक्ति का अंध अनुयायी होने को प्रेरित भी नहीं कर सकता। अपना भी नहीं। उदारता की यही पहचान है। ईश्वर की बनाई दुनिया की विविधता का सम्मान। (पाखण्डियों की बात अलग है। वे जो लगते हैं, वह होते नहीं। वे अवसर देखकर रंग बदलने की कला में माहिर होते हैं। उनकी आस्था सिर्फ़ अपने हित-साधन में होती है।) सवाल है, कट्टर और उदार में अधिक आस्थावान कौन है? ईश्वर को ईश्वर के रूप में कौन ज़्यादा शिद्दत से मानता है।

सोशल फोरम

साक्षात्कार के उद्देश्य

हिन्दी संसार को समझने के लिए भारतेंदु के 'अंधेर नगरी': नाटक के 'समर्पण' पृष्ठ की पंक्तियां काम की साबित हो सकती हैं। इसकी ओर

शंभुनाथ
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कोलकाता

सामान्यतः ध्यान नहीं गया है। आज संस्कृत के उस श्लोक का अर्थ जानना बहुत जरूरी है : 'जो चंदन, आम और चंपा के वन को काटकर कीकड़ के पेड़ों की रक्षा करता है, हंस और कोयल के प्रति हिंसक होकर काग लीला का मजा लेता है और जो कपूर और कपास को उनके श्वेत रंग के कारण एक जैसा समझता है-जहां के गुणी जन ऐसी समझ रखते हों उस स्थान को नमस्कार है!' क्या रक्षणीय है और क्या त्याज्य, क्या सुरुचि है और क्या विकृति तथा क्या खोकर क्या हासिल हो रहा है, जब इसका विवेक लेखक और बुद्धिजीवियों के समाज में ही विलुप्त होता जा रहा हो, तो चिंता होती है।

> साक्षात्कार के संबंध में सामान्यतः कहना जरूरी लग रहा है कि यह ज्ञान की जगह न होकर अब सर्कस बन रहा है। दर्शक यह देखकर मजा लेते हैं कि देखो अमुक ने अमुक को कैसा जमकर रगड़ा, अपनी ताल पर किस तरह नचाया या उसके व्यक्तिगत मामलों को सार्वजनिक कर दिया।

साक्षात्कार के संबंध में सामान्यतः कहना जरूरी लग रहा है कि यह ज्ञान की जगह न होकर अब सर्कस बन रहा है। दर्शक यह देखकर मजा लेते हैं कि देखो अमुक ने अमुक को कैसा जमकर रगड़ा, अपनी ताल पर किस तरह नचाया या उसके व्यक्तिगत मामलों को सार्वजनिक कर दिया। मैंने सोशल मीडिया पर साक्षात्कार लेने वाले की इस वीरता का वर्णन पढ़ा है। यह मुझे लोकतांत्रिक बोध के क्षय और सत्ता की विचारधारा से सहानुभूति रखने के चिह्न की तरह दिखता है। आज यह एक संक्रामक रोग है, इसलिए आश्चर्य नहीं होता। मैं यह कभी कहना नहीं चाहता था, पर आज बता रहा हूं कि मेरे सामने ऐसा प्रस्ताव आया तो मैंने स्पष्ट कहा कि ऐसे साक्षात्कार में मेरी कोई रुचि नहीं है। सचमुच मैंने ऐसा एक भी साक्षात्कार नहीं देखा है और नहीं लगता कि कुछ खोया है। हजार-पांच हजार लोगों को अच्छा लगता है तो वे देखें-सुनें, मजा दें-लें, उन्हें स्वतंत्रता है। मुझे भीड़ में नहीं बहना। इस मामले को मैं 'अंधेर नगरी' के उपर्युक्त समर्पण की तरह लेता हूं।

जब साक्षात्कार कर्ता यह न सोचकर कि कैसे लेखक के भीतर के छिपे सर्वोत्तम को बाहर निकाले और उसकी वैचारिक प्रेरणाओं का उद्घाटन करे, इसकी जगह जब वह केवल उसके भीतर के निकृष्टतम को बाहर करना चाहता है या वह कहलाना चाहता है जो साक्षात्कार कर्ता खुद सुनना चाहता है और खुद नायक बनना चाहता है तो जाहिर है कि यह अहंकार भरा कितना पूर्वग्रहग्रस्त साक्षात्कार हो सकता है। यह संवाद का आनंद नहीं है, विवाद का मजा है! एक लगभग अलेखक द्वारा लिए गए साक्षात्कार और एक लेखक द्वारा लिए गए साक्षात्कार में फर्क है। मुझे अज्ञेय के रघुवीर सहाय और रमेशचंद्र शाह के लिए साक्षात्कार की याद आ रही है। उस समय साक्षात्कार सामान्यतः लेखक को दिखा लिए जाते थे, ताकि वह आखिरी टच दे सके। रामविलास शर्मा से नामवर सिंह का साक्षात्कार है। वर्तमान दौर के प्रसिद्ध विदेशी लेखकों के साक्षात्कार भी हैं, उनसे भी कुछ सीखना चाहिए। ऐसे साक्षात्कारों का उद्देश्य साहित्यकार को अपनी ताल पर नचाना या लोगों की आंखों में उसे गिराना या उसे रगड़ना नहीं होता था। साक्षात्कार कर्ता के प्रश्न सबसे पहले उसके अपने साहित्यिक ज्ञान का खुलासा करते हैं।

-फेसबुक वॉल से

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह*** 0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- amritvicharkanpur@gmail.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

आत्मनिर्भरता व तकनीकी संप्रभुता फ्रांस के बाद भारत बना निर्माता

मराल एयरोस्पेस का दावा है कि आईआईटी कानपुर से पीएचडी डॉ. विजय शंकर द्विवेदी के नेतृत्व में विकसित उनका स्वदेशी सौर ऊर्जा आधारित ड्रोन भारत की सीमाओं और विविध भौगोलिक चुनौतियों पर निरंतर निगरानी रखने के लिए विदेशी प्रौद्योगिकी पर निर्भरता कम करके राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी संप्रभुता को मजबूत बनाता है। यह ड्रोन एक अग्रणी नवाचार है, जो देश की आत्मनिर्भरता और तकनीकी प्रगति को भी दर्शाता है। इस तरह का ड्रोन दुनिया में सिर्फ फ्रांस की एक्सन कंपनी बना रही है। आईआईटी कानपुर ने विभिन्न प्रकार के ड्रोन विकसित किए हैं जो राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिक आवश्यकताओं दोनों को पूरा करते हैं। इसमें एआई-सक्षम 'आत्मघाती ड्रोन' शामिल हैं जो 100 किमी तक के लक्ष्यों को नष्ट कर सकते हैं।

एक्सीरॉन तकनीक ने बनाया अपने पेलोड वर्ग में अनूठा

अत्याधुनिक यूएवी तेजस-1 पूरी तरह सोलर ऊर्जा पर निर्भर रहने के लिए एक्सीरॉन तकनीक से लैस है। इस तकनीक से इसके पैनल हमेशा सूर्य की ओर रहेंगे और उसकी सबसे अधिक ऊर्जा ग्रहण करेंगे। इस विशेषता ने इसे अपने पेलोड वर्ग में दुनिया का सर्वाधिक समय तक उड़ने वाला सोलर यूएवी बना दिया है।

आईआईटी कानपुर का नवाचार सौर ऊर्जा से चलने वाला ड्रोन हवाई निगरानी में क्रांति लाने का भरोसा दिलाता है। सौर ऊर्जा से संचालित होने के कारण इसकी उड़ान का समय बढ़ जाता है। पांच किलोमीटर ऊंचाई तक उड़ने की क्षमता इसे निगरानी उद्देश्यों के लिए व्यापक हवाई कवरेज प्रदान करती है। हवाई निगरानी के साथ इसका उपयोग सीमा सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और पर्यावरण निगरानी जैसे कामों के लिए किया जा सकता है। 10 से 12 घंटे तक लगातार तस्वीरें खींचने में सक्षम यह ड्रोन जमीन पर गतिविधियों की निगरानी में बेजोड़ दक्षता प्रदान करता है। यह उन्नत ड्रोन मध्यम ऊंचाई और लंबी दूरी के लिए डिजाइन किया गया है।

उड़ने के लिए तैयार भारत का पहला सोलर ड्रोन

भारत का पहला सोलर अनमैंड एयर व्हीकल (यूएवी) तेजस-1 अब आसमान में उड़ान भरने और बाजार में उतरने के लिए तैयार है। इसका निर्माण आईआईटी कानपुर में स्थापित डीप टेक स्टार्टअप मराल एयरोस्पेस ने किया है। सौर-ऊर्जा संचालित इस स्वदेशी फिक्स्ड विंग ड्रोन को 12 घंटे से अधिक की असाधारण उड़ान के लिए डिजाइन किया गया है। यह क्षमता इसे खुफिया निगरानी और टोही मिशनों के लिए "आकाश में लंबी आंख" बनाती है, जो चौबीसों घंटे के मिशन, सीमा गश्त, लक्ष्य ट्रैकिंग के कारण सेना के लिए काफी कारगर साबित हो सकती है। इसके साथ ही यह ड्रोन समुद्री निगरानी, वैज्ञानिक अनुसंधान, खोज और बचाव, मानचित्रण, पर्यावरण संरक्षण और कृषि-तकनीक जैसे क्षेत्रों में भी इस्तेमाल के लिए अनूठा है। भारत के अलावा अभी फ्रांस ही इस तरह के ड्रोन बना रहा है।

मराल एयरोस्पेस के सीईओ विवेक कुमार पांडेय के अनुसार उनका सोलर यूएवी जिसे शुरू में मराल नाम दिया गया था, अब तेजस-1 नाम से अगले माह उपलब्ध हो जाएगा। यह ड्रोन देश की सीमाओं खासकर चीन और पाकिस्तान के साथ हिमालय के कठिन इलाकों में प्रभावी निगरानी करके आतंकी घुसपैठ और तस्करी जैसी गतिविधियों का पता लगाने में सक्षम है। इसे मिसाइल लॉन्च या बड़ी दूरी पर बड़ी सैन्य गतिविधियों का पता लगाने के लिए सेंसर से लैस किया जा सकता है। यह ड्रोन दूरदराज या पहाड़ी क्षेत्रों में जहां पारंपरिक संचार बुनियादी ढांचे की कमी है या प्राकृतिक आपदा अथवा दुश्मन के हमले में संचार सुविधाएं नष्ट हो गई हैं, वहां हवाई संचार नोड्स के रूप में काम करके सैन्य बलों को विश्वसनीय संचार लिंक प्रदान कर सकता है। यह ड्रोन ग्राउंड स्टेशनों और उपग्रहों के बीच डेटा रिले का काम अंजाम दे सकते हैं, जिससे सीधे लिंक संभव न होने पर भी निर्बाध संचार सुनिश्चित हो जाता है। इसके अलावा बाढ़ या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के बाद क्षति का विस्तृत आकलन प्रदान करने के साथ प्रभावित क्षेत्रों का मानचित्रण करके राहत और बचाव कार्यों में मदद कर सकते हैं। यहां तक कि मौसम की स्थिति की भविष्यवाणी करके सैन्य अभियानों की योजना बनाने में सहायक हो सकते हैं।

12 किलो वजन ... 12 घंटे से ज्यादा उड़ान, 200 किमी की दूरी

सोलर यूएवी का वजन 12 किलो है। यह 12 घंटे से ज्यादा उड़ान भरने के साथ सात किलो वजन लेकर उड़ सकता और 200 किमी तक दूरी तय कर सकता है। यह 5 किलोमीटर तक की ऊंचाई पर उड़ान भर सकता है। यह ऊंचाई व्यापक हवाई कवरेज और अधिक गुप्त संचालन की अनुमति देती है। यह 3 किलोग्राम से अधिक का पेलोड ले जाने में सक्षम है। इसे आधुनिक ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड कैमरों के साथ ही अत्याधुनिक सेंसर से लैस किया जा सकता है। कैमरों और राउटर सहित विभिन्न पेलोड को समायोजित करने की क्षमता इसकी उपयोगिता को बहुमुखी बनाती है।

200 मीटर के रनवे से लॉचिंग, 600 किमी से ज्यादा है रेंज

- सोलर यूएवी तेजस-1 का टेक आफ वजन लगभग 25 किलोग्राम है। इसका पंख फैलाव 11 मीटर है। परिचालन रेंज 600 किलोमीटर से ज्यादा है। इसे सिर्फ 30 मिनट में उड़ान भरने के लिए तैयार किया जा सकता है। यह ड्रोन ऊर्जा भंडारण के लिए बैटरी और गुरुत्वाकर्षण संभावित ऊर्जा का उपयोग करता है। इसे लगभग 200 मीटर के छोटे रनवे से लॉन्च किया जा सकता है, इस कारण इसे विभिन्न प्रकार के भौगोलिक स्थानों पर तैनात करना काफी आसान है। यह उन लंबी अवधि के मिशनों के लिए एक अत्यधिक आकर्षक समाधान है, जहां मानवीय उपस्थिति बनाए रखना या बार-बार ईंधन जुटाना काफी अव्यावहारिक या महंगा पड़ता है।

प्रस्तुति: मनोज त्रिपाठी

नए उत्पाद गैजेट

आगत का स्वागत

- इस साल कई शानदार स्मार्टफोन लॉन्च होने वाले हैं। कुछ बजट में और कुछ महंगे पर सभी दमदार तकनीक वाले। एप्पल आईफोन 17 प्रो और आईफोन 17 प्रो मैक्स भी बाजार में उतरने को तैयार हैं। दो दूसरे कैमरों के साथ 48 मेगापिक्सल के टेलीफोटो सेंसर वाला कैमरा लेंस, आईफोन 17 की खासियत होने वाली है। एपल 17 सिरीज के लिए सितंबर तक इंतज़ार करना होगा।

- Vivo V60 को लेकर जानकारी ये मिली है कि ये 12 अगस्त को भारत में लॉन्च होगा। इस हैंडसेट में 50-मेगापिक्सल प्राइमरी शूटर, 8-मेगापिक्सल अल्ट्रावाइड लेंस और 50-मेगापिक्सल 3X पेरिस्कोप टेलीफोटो सेंसर के साथ ट्रिपल रियर कैमरा सेटअप होगा, जो पहले की लीक्स से मेल खाता है। Vivo स्मार्टफोन की कीमत भी लीक हुई है, जिससे पता चलता है कि ये एक मिड-रेंज डिवाइस हो सकता है। हाल ही में एक टिप्स्टर ने Vivo V60 के कथित रेंडर्स ऑनलाइन पोस्ट किए, जिसमें पिल-शेप्ड रियर कैमरा आइलैंड दिखाया गया।

- गूगल का इंडिया स्पेसिफिक भारत में मेड फॉर गूगल इवेंट 14 अगस्त को लांच होगा। इस इवेंट में कंपनी अपने चार स्मार्टफोन को लांच कर सकती है। लीक रिपोर्ट की मानें, तो कंपनी पहली बार फोल्डेबल स्मार्टफोन को लांच कर सकती है, जिस स्मार्टफोन को लॉन्च किया जा सकता है, उसमें Pixel 9, Pixel 9 Pro, Pixel 9 Pro XL और Pixel 9 Pro Fold शामिल हैं।

कैंसर के इलाज का रास्ता दिखाएगा चमगादड़

हम दोनों स्तन धारी फिर उसे क्यों नहीं यह बीमारी

फीचर डेस्क

कुछ ही दिनों पहले यह बात उजागर हुई कि स्तनधारी जीव चगादड़ों को कैंसर होने की आशंका लगभग न के बराबर होती है। वे अमूमन 25 साल जीते हैं और उनमें से कई तो इससे बहुत ज्यादा। शायद ही किसी को किसी तरह का कैंसर कभी हुआ हो। ऐसा क्यों होता है, यह समझने के लिये रोचेस्टर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जो शोध किया है वह नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित हुआ है। चमगादड़ में मिलने वाले कैंसर विरोधी गुणों की खोज मनुष्यों के लिये बड़े काम की हो सकती है। जीवविज्ञानी वेरा गोरबुनोवा और आंद्रेई सेलुआनोव के नेतृत्व में चार अलग प्रजातियों के चमगादड़ों पर शोध के दौरान वैज्ञानिकों की टीम ने पाया कि चमगादड़ में ट्यूमर सप्रेसर या कैंसर से लड़ने वाला एक गुणसूत्र या जीन होता है, जिसे पी 53 कहा जाता है। यह जीन एपोप्टोसिस, उर्फ सेल डेथ को नियंत्रित करता है। होता तो यह मनुष्यों में भी है। अंतर बस इतना है कि चमगादड़ों में यह पी53 जीन इतनी उन्नत किस्म का है, इतना कारगर और करामाती कि कैंसर को पनपने से पहले इसकी दो प्रतियां प्राकृतिक रूप से कैंसर की अचूक हत्या कर देती हैं। अब यह जानने की कोशिश हो रही है कि चमगादड़ों में कैंसर प्रतिरोधक क्षमता इतनी ताकतवर कैसे है। चमगादड़ वाली पी 53 मानव में पाई जाने वाली एपी53 कैंसर के मुकाबले में इतनी घातक कैसे? उसे इतना सटीक कौन बनाता है? बेशक, चमगादड़ की प्रतिरक्षा प्रणाली की भी इसमें बड़ी भूमिका है जो आक्रमणकारियों को नेस्तनाबूद करने में देर नहीं करते।

इन सबका यह मतलब नहीं है कि चमगादड़ को कभी कैंसर नहीं होता। असल में उनके शरीर का तंत्र कैंसर को झेलने के लिए खास बना है। जब उनमें कैंसर विकसित होता है, तो उनका शरीर बेहद जल्दी और कुशलता से कैंसर से लड़ने लगता है। जबकि हमारी शारीरिक प्राकृतिक प्रतिक्रिया इनके मुकाबले दयनीय लगती है। कैंसर से लड़ने में चमगादड़ इतने कामयाब क्यों हैं उनके गुणों पर शोध अभी जारी है। बरसों बाद, शायद एक दिन, हमको इससे एक ऐसी चिकित्सा प्रविधि हासिल होगी जो हमें इस मामले में कुछ हद तक चमगादड़ों जैसा बना सके, बस उल्टा लटक कर सोने की ज़रूरत नहीं होगी।

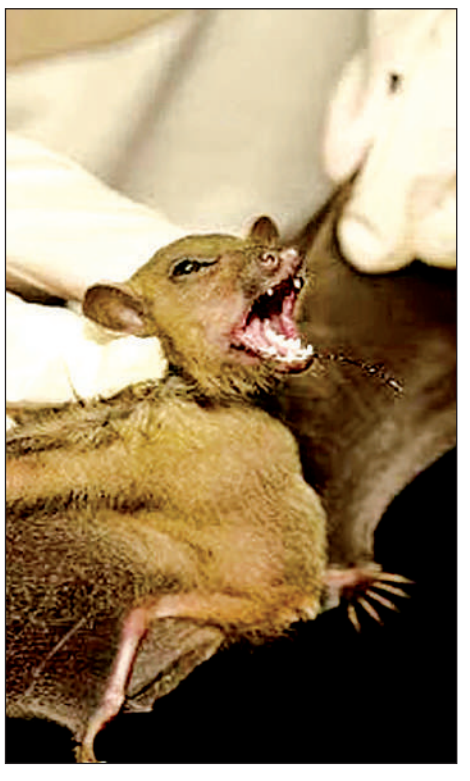

नज़र आसमानी

यह कोई पक्षी नहीं, नए प्रकार का ड्रोन है जिसे लिटिल फाल्कन ऑर्निथॉप्टर कहा गया है। इसका वीडियो फुटेज इसे अपने पंख फड़फड़ाकर पंछी के तरह उड़ता हुआ दिखाता है। चीन ने इसे टोह लेने, निगरानी करने और जरूरत पड़ने पर हमला करने की नीयत से बनाया है। हूबहू पक्षी जैसा दिखने वाले ड्रोन को आसमान में बतौर खतरा पहचानना मुश्किल हो सकता है। हालांकि यह विचार नया नहीं है, 1960 के दशक में ऐसा प्रयोग हो चुका है, पर यह तकनीकी तौर पर उससे बहुत ज्यादा उन्नत है।

तकनीक क्षेत्र एआई की पहुंच पालतू तक

देश में पालतू पशु पक्षियों का बाज़ार जो अभी दस हजार करोड़ का है, दो बरस बाद तकरीबन 14 हजार और 2032 तक 21,000 करोड़ रुपये से ऊपर पहुंच जाएगा। वजह यह कि देश में पालतू रखने वालों की तादाद बेतहाशा बढ़ रही है। ऐसे में यह तकनीकी पहलू उनके बहुत काम का साबित होने वाला है। एक शाम संतू जायसवाल के प्यारे पालतू सेंट बर्नार्ड "झुक्का" ग़ायब हो गया तो पुलिस में रिपोर्ट हुई, पोस्टर चिपकाए गये, मुहल्लों और सोशल मीडिया पर मुनादी हुई पर सब बेकार। वह आज भी नहीं लौटा, न तलाशा जा सका। लेकिन अमेरिका के माइकल बोवन का अनुभव अलग है। उनकी पिटबुल- मिल्ली, लोअर मैनहट्टन के खुले इलाके में टहलने के दौरान ऐसे भागी कि वह उसे पकड़ नहीं पाया। बहुत तलाश करने के बाद यह सोचता घर लौट आया, वह भी उसे ढूंढ रही होगी। बोवन की मां ने मिल्ली की तस्वीर लव लॉस्ट नाम के एक वेब साइट के डेटाबेस पर अपलोड कर कर दी जो पालतू पशुओं को एआई के फेस रिकग्नीशन तकनीक का इस्तेमाल कर पालतुओं को तलाशती, पहचान कर मालिकों से मिलवाती है। खैर, 14 घंटे के भीतर, उन्हें एक कॉल आया। पता चला मिल्ली वहां से 10 मील उत्तर भागी थी। वहाँ वह कार से टकराई और किसी ने उसे पशु चिकित्सालय में भरती कर दिया था। अस्पताल ने मिल्ली की तस्वीर भी उसी लव लॉस्ट साइट पर अपलोड की थी, तस्वीर की मिलान हो गई और ज़ाहिर है पालतू और मालिक की भी। नई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित क यह तकनीक पालतू जानवर की अनूठी विशेषताओं जैसे आँखों के आकार पूंछ, मूंछ की लंबाई, टेढाई, बाल, चमड़ी, पंखों का पैटर्न, असामान्य निशान जैसे 512 डेटा पॉइंट एकत्र करता है, इसके बाद मिलान करके जानवरों की खोज करने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करता है। सिस्टम की सबसे बड़ी खासियत यह कि यह पालतू जानवरों को पहचानने की इतनी शानदार क्षमता रखता है कि जाने के बाद अगर जानवर के रंग रूप में बदलाव भी आ जाए तो यह पहचान जाता है।

बूचड़खाने होंगे बंद

दशकों बाद यह संभव हो सका तो स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा पशुओं के प्रति क्रूरता के विरुद्ध एक क्रांति होगी

कुछ बरस पहले आंध्रप्रदेश के हृदय रोग विशेषज्ञ और वैज्ञानिक वेलेटी ने कुछ अमेरिकी वैज्ञानिकों के साथ मिलकर लैब में कृत्रिम मांस तैयार किया था। पशु कोशिका द्वारा 9 से 21 दिनों में बनाया यह मांस हर तरह के संदूषण से दूर और स्वास्थ्य मानदंडों पर पूरी तरह खरा उतरा। इस मीट को मेम्फेसिस मीट कहते हैं। वेलेटी ने विल क्लेम जो बायो मेडिकल इंजीनियर हैं और निकोलस जीनेवेस जो स्टेम सेल बायोलॉजिस्ट हैं, के साथ मिलकर इसे तैयार किया।

लैब में पशु अंश और वनस्पति स्रोत से बना मांस पहले बहुत पसंद नहीं किया गया लेकिन दूसरे जानवरों और टर्की जैसे पक्षियों के मांस की नकल का काम चालू रहा लेकिन जटिल प्रक्रिया और लाखों गुना महंगा होने के चलते यह माना जाता रहा कि यह व्यावहारिक स्तर पर संभव नहीं हो सकेगा। आज इस बात की तैयारी ज़ोरों पर है कि बड़े रेस्त्रां या होटलों में अमीर लोगों की थाली तक बिना जानवरों का खून बहाये, उन्हीं से उत्पादित साफ, सुथरा, स्वास्थ्यप्रद सुस्वादु मांस पहुंचाया जा सके। बस सवाल कीमत का है। बीते दस सालों में वैज्ञानिकों ने इस तरह के मीट बनाने की लागत को 99 फीसदी तक कम किया फिर भी इसकी कीमत बाजारू मीट के हजार गुना रही। कोशिका से सीधे ही मांस को विकसित करने पर यह काम थोडा आसान और सस्ता हो गया है।

हम्पटन क्रीक कंपनी ने मीट का सस्ता विकल्प बनाया

- हम्पटन क्रीक कंपनी ने मीट का सस्ता विकल्प बनाया, है बिल्कुल मीट जैसा टेक्स्चर, वैसा ही स्वाद, खिंचाव, जो कुछ गुना ही महंगा है। बाजार को जितना मांस चाहिये उससे ज्यादा और लगातार उत्पादन की क्षमता की ओर कंपनियां अब तेजी से बढ़ रही हैं। इस काम में तमाम तरह की मशीनों, ऑटोमेशन तकनीक, प्रयोगशाला का कार्य और मानव श्रम चाहिये, सब झोंका जा चुका है। केमिस्ट, टिश्शू इंजीनियर सेल बायोलोजिस्ट सभी जुट गए हैं, हम्पटन क्रीक में ऐसे 60 से ज्यादा विशेषज्ञ काम पर लगे हैं। देखते है कवायद कितनी और कब तक कारआमद होती है। कब थाली तक पहुंचता है यह मीट। ताकि बूचड़ खाने हों बंद।

प्रस्तुति: संजय श्रीवास्तव

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	82,184.17	25,062.10
गिरावट	542.47	157.80
प्रतिशत में	0.66	0.63

सोना : 99,620 प्रति 10 ग्राम

चांदी : 1,15,000 प्रति किलो

अमृत विचार

लखनऊ, शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

www.amritvichar.com

भारत-ब्रिटेन में अब तक की सबसे बड़ी डील

एफटीए पर हस्ताक्षर से भारत में लग्जरी कारें, व्हिस्की, चॉकलेट, बिस्किट, सालमन फिश, कॉस्मेटिक सामान होगा सस्ता

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत-ब्रिटेन में अब तक की सबसे बड़ी डील होने के बाद चमड़ा, जूते, ऑटोपार्ट, सीफूड, खिलौने और कपड़ों का रियायती दरों पर निर्यात संभव होगा, जिससे ये चीजें ब्रिटेन के लोगों को सस्ती मिलेगी। इसके साथ ही ब्रिटेन से आने वाले सामानों पर भी आयात सस्ता होगा, जिससे भारतीयों को व्हिस्की, चॉकलेट, बिस्किट, सालमन फिश, कॉस्मेटिक सामान, लग्जरी कारें आदि सस्ती मिलेंगी।

वहीं, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत-ब्रिटेन एफटीए से ब्रिटिश बाजार में चमड़ा, विद्युत मशीनरी और रसायन जैसे कई घरेलू क्षेत्रों को शुल्क-मुक्त पहुंच मिलेगी, जिससे लगभग 23 अरब डॉलर के अवसर खुलेंगे। आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (सीईटीए) कहे जाने वाले इस समझौते पर बृहस्पतिवार को लंदन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके ब्रिटिश समकक्ष केअर स्टार्मर की मौजूदगी में हस्ताक्षर किए गए।

गोयल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा, लगभग 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात के लिए शुल्क-मुक्त पहुंच से श्रम-प्रधान क्षेत्रों के लिए लगभग 23 अरब डॉलर के अवसर खुलेंगे, जो समावेशी और लैंगिक-समानता के लिए एक नए युग का सूत्रपात करेगा। कपड़ा, चमड़ा, जूते, रत्न एवं आभूषण, खिलौने और समुद्री उत्पादों से जुड़े कई एमएसएमई में कार्यरत कारीगर, बुनकर और दिहाड़ी मजदूर समृद्धि के एक नए चरण में प्रवेश करेंगे। गोयल ने कहा कि इस समझौते से लगभग 95 प्रतिशत कृषि उत्पादों का शुल्क मुक्त निर्यात सुनिश्चित होगा, जबकि मछुआरों को 99 प्रतिशत समुद्री निर्यात पर शून्य शुल्क से लाभ होगा, जिससे उनकी आय बढ़ेगी। समझौते का इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, रसायन, खाद्य प्रसंस्करण और प्लास्टिक जैसे विनिर्माण-गहन क्षेत्रों पर भी परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा। यह समझौता भारतीय उपभोक्ताओं को प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुएं भी प्रदान करेगा।

लंदन में भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करते उद्योग मंत्री पीयूष गोयल व उनके समकक्ष।

उद्योग जगत ने कहा- देश के उभरते व्यापार ढांचे में मील का पत्थर

■ **नई दिल्ली।** भारतीय उद्योग जगत ने बृहस्पतिवार को कहा कि यह भारतीय निर्तायकों के लिए परिवर्तनकारी पल है और इससे दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार मौजूदा 60 अरब डॉलर से 2030 में दोगुना होकर 120 अरब डॉलर का हो जाएगा। एफटीए से ब्रिटेन को 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर शुल्क कम हो जाएगा, जबकि ब्रिटिश कंपनियों के लिए भारत को व्हिस्की, कार और अन्य उत्पादों का निर्यात आसान हो जाएगा। भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ (फियो) के अध्यक्ष एस सी रल्हन ने भारत-ब्रिटेन एफटीए पर कहा कि यह भारतीय निर्तायकों के लिए परिवर्तनकारी पल है। उन्होंने कहा कि इससे दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार मौजूदा 60 अरब डॉलर से 2030 में दोगुना होकर 120 अरब डॉलर का हो जाएगा।

ब्रिटेन में सामाजिक सुरक्षा अंशदान से 3 साल छूट, 75,000 भारतीयों को फायदा

■ **नई दिल्ली।** ब्रिटेन में परिचालन करने वाली टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और इन्फोसिस जैसी देश की प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनियों को अब वहां (ब्रिटेन में) स्थानांतरित किए गए अपने कर्मचारियों के लिए तीन साल तक सामाजिक सुरक्षा अंशदान करने की जरूरत नहीं होगी। वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि इससे 75,000 से अधिक भारतीय पेशेवरों और 900 से अधिक नियोक्ताओं को लाभ मिलने का अनुमान है। इससे भारतीय पेशेवरों और उनके नियोक्ताओं को ब्रिटेन में 36 महीने तक रहने के लिए इन अंशदानों से छूट मिल जाएगी। यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ब्रिटेन 283 अरब डॉलर के भारतीय आईटी उद्योग के लिए दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार है।

जेनेरिक दवाओं, चिकित्सा उपकरण निर्यात को बढ़ावा

■ **नई दिल्ली।** ब्रिटेन के मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत शून्य शुल्क पर सहमति के बाद भारत के जेनेरिक दवाओं और चिकित्सकीय उपकरणों जैसे एक्स-रे सिस्टम और सर्जिकल उपकरणों के निर्यात को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। वाणिज्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, सर्जिकल उपकरण, जांच में उपयोग (डायग्नोस्टिक) वाले उपकरण, ईसीजी मशीन, एक्स-रे सिस्टम जैसे चिकित्सकीय उपकरणों के एक बड़े हिस्से पर कोई शुल्क नहीं लगेगा। भारत वैश्विक स्तर पर दवा क्षेत्र के तहत 23.31 अरब अमेरिकी डॉलर का निर्यात करता है और ब्रिटेन करीब 30 अरब अमेरिकी डॉलर का आयात करता है।

इंजीनियरिंग वस्तु: 2030 तक निर्यात 7.5 अरब डॉलर होगा

■ **नई दिल्ली।** इंजीनियरिंग वस्तुओं पर सीमा शुल्क को 18 प्रतिशत से घटाकर शून्य कर दिया गया है, जिससे इनका निर्यात अधिक प्रतिस्पर्धी हो जाएगा। उपकरणों का निर्यात अगले पांच वर्ष में लगभग दोगुना हो सकता है, जो 2029-30 तक 7.5 अरब डॉलर से अधिक हो जाएगा। ब्रिटेन, भारत का छठा सबसे बड़ा इंजीनियरिंग निर्यात बाजार है। ब्रिटेन के साथ व्यापार में वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान सालाना आधार पर 11.7 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि देखी गई। सूचीबद्ध क्षेत्रों में इंजीनियरिंग उत्पाद क्षेत्र की हिस्सेदारी सबसे अधिक है जिसमें 1,659 शुल्क श्रेणियां हैं जो कुल श्रेणियों का 17 प्रतिशत है। भारत का वैश्विक इंजीनियरिंग निर्यात 77.79 अरब डॉलर है, जबकि ब्रिटेन 193.52 अरब डॉलर मूल्य के ऐसे उत्पादों का आयात करता है।

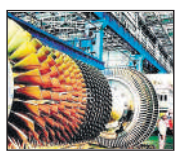

परिधान निर्यात के साथ रोजगार को मिलेगा बढ़ावा

■ **नई दिल्ली।** परिधान क्षेत्र में अधिक रोजगार पैदा होंगे। सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और मानकों की पारस्परिक मान्यता में भी मदद मिलेगी, जिससे भारतीय परिधान निर्यातकों के लिए अनुपालन का बोझ कम होगा। ब्रिटेन एक वैश्विक 'फैशन' केंद्र और दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा परिधान आयातक है। 2024 में इसने दुनियाभर से 19.7 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के परिधान का आयात किया। भारत ने पिछले वर्ष 1.2 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के वस्त्र का निर्यात किया और ब्रिटेन के शीर्ष चार आपूर्तिकर्ताओं में से एक बन गया।

एफटीए पर मुख्य बातें

कृषि क्षेत्र :

- भारत को ब्रिटेन में फल, सब्जियां, अनाज, हल्दी, काली मिर्च, इलायची जैसे कई कृषि उत्पादों और खाने के लिए तैयार खाद्य, आम का गूदा, अचार और दालों जैसे प्रसंस्कृत उत्पाद तक शुल्क मुक्त पहुंच मिलेगी।
- भारत के 95 प्रतिशत से अधिक कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य शुल्क लाइन पर शून्य शुल्क लगेगा।
- शुल्क मुक्त पहुंच से अगले तीन साल में कृषि निर्यात में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि होने की उम्मीद है, जो 2030 तक भारत के 100 अरब डॉलर के कृषि निर्यात के लक्ष्य में योगदान देगा।
- 'व्यापार में तकनीकी बाधाओं' (टीबीटी) से संबंधित प्रावधान प्रमाणीकरण को सुव्यवस्थित करेंगे, जिससे निर्यातकों के लिए समय और लागत में कटौती होगी।
- एफटीए कटहल, बाजरा और जैविक जड़ी-बूटियों जैसे उभरते उत्पादों के लिए नए बाजार तक पहुंच बनाता है, जिससे किसानों को घरेलू मूल्य अस्थिरता के खिलाफ विविधता लाने में मदद मिलती है।
- भारत के मत्स्य पालन क्षेत्र, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश, ओडिशा, केरल और तमिलनाडु को, ब्रिटेन के 5.4 अरब डॉलर के समुद्री आयात बाजार तक पहुंच के माध्यम से विस्तार मिलेगा।
- भारत डेयरी उत्पाद, सेब, जई और खाद्य तेलों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों पर कोई शुल्क रियायत नहीं दे रहा है।
- भारत वैश्विक स्तर पर 36.63 अरब डॉलर का निर्यात करता है, जबकि ब्रिटेन 37.52 अरब डॉलर का आयात करता है, लेकिन भारत से केवल 81.1 करोड़ डॉलर का आयात करता है, जो उच्च मूल्य वाले कृषि उत्पादों में वृद्धि की संभावना दर्शाता है।
- इस समझौते से महाराष्ट्र (अंगूर, प्याज), गुजरात (मूंगफली, कपास), पंजाब और हरियाणा (बासमती चावल), केरल (मसाले) और पूर्वोत्तर राज्यों (बागवानी) को लाभ होगा।

समुद्री क्षेत्र

- सीईटीए भारत के समुद्री उत्पादों पर ब्रिटेन के शुल्क को समाप्त करता है।
- इससे भारतीय निर्यातकों के लिए मूल्य प्राप्ति में सुधार होगा, तथा उच्च खरीद दरों के माध्यम से तटीय मछुआरों को लाभ मिलेगा।
- ब्रिटेन के 5.4 अरब डॉलर के समुद्री आयात बाजार के बावजूद, भारत की हिस्सेदारी मात्र 2.25 प्रतिशत ही बनी हुई है, जो एक महत्वपूर्ण अप्रयुक्त निर्यात अवसर को रेखांकित करता है।
- भारतीय झींगा पर ब्रिटेन में मौजूदा शुल्क 4.2 प्रतिशत से 8.5 प्रतिशत के बीच है। इसके कारण, एफटीए के शुल्क उन्मूलन से विशेष रूप से झींगा, टूना, मछली के भोजन और चारे में तीव्र वृद्धि होने की उम्मीद है।
- झींगा, टूना, मछली का भोजन और चारा, जिन पर वर्तमान में 4.2 प्रतिशत से 8.5 प्रतिशत के बीच कर लगता है, पूरी तरह से शुल्क मुक्त हो जाएंगे।

चाय-कॉफी

- ब्रिटेन पहले से ही भारत के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है, जहां भारत के कुल निर्यात का 1.7 प्रतिशत कॉफी, 5.6 प्रतिशत चाय और 2.9 प्रतिशत मसाला जाता है। अब इन उत्पादों पर शुल्क मुक्त पहुंच के साथ इसमें तेजी से वृद्धि होने की उम्मीद है।
- 'इंस्टेंट कॉफी' तक शुल्क-मुक्त पहुंच से भारतीय व्यवसायों को जर्मनी, स्पेन और नीदरलैंड जैसे त्वरित/मूल्य-वर्धित कॉफी के अन्य यूरोपीय आपूर्तिकर्ताओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी। ● एफटीए, मूल्यवर्धित कॉफी उत्पादों, विशेषकर भारतीय इंस्टेंट कॉफी का ब्रिटेन को निर्यात बढ़ाने के लिए एक सशक्त मंच तैयार करेगा।

तिलहन

- कम शुल्क और सुव्यवस्थित प्रक्रियाओं के साथ, भारतीय तिलहन निर्यातक ब्रिटेन के बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं, जिससे संभावित रूप से निर्यात में वृद्धि हो सकती है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सॉफ्टवेयर

- शून्य-शुल्क पहुंच से इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्यात में तेजी आने की उम्मीद है, साथ ही स्मार्टफोन, ऑप्टिकल फाइबर केबल और इनवर्टर के कारण ब्रिटेन के बाजार में भारत की स्थिति मजबूत होगी।

प्लास्टिक

- शुल्क मुक्त पहुंच से प्लास्टिक, फिल्म, शीट, पाइप, पैकेजिंग, टेबलवेयर और किचनवेयर के लिए ब्रिटेन की मजबूत मांग का लाभ उठाने का अवसर मिलता है। ये ऐसे क्षेत्र हैं जहां भारत ने विनिर्माण क्षमता सिद्ध कर ली है।
- शुल्क मुक्त पहुंच से भारत को ब्रिटेन के प्रमुख आयात स्रोतों जैसे जर्मनी, चीन, अमेरिका, नीदरलैंड, बेल्जियम और फ्रांस के साथ बेहतर प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी।
- अनुमानित वृद्धि दर 15 प्रतिशत है तथा कैलेंडर वर्ष 2030 के लिए अगले पांच वर्षों का लक्ष्य 18.7 करोड़ डॉलर है।

रत्न एवं आभूषण

- भारत का ब्रिटेन को कुल रत्न एवं आभूषण निर्यात 94.1 करोड़ डॉलर का है, जिसमें से 40 करोड़ डॉलर आभूषणों से आता है। यह एफटीए एक विशाल बाजार खोलता है क्योंकि ब्रिटेन सालाना लगभग तीन अरब डॉलर मूल्य के आभूषणों का आयात करता है। एफटीए के तहत शुल्क में छूट से अगले दो-तीन साल में ब्रिटेन को भारत के रत्न एवं आभूषण निर्यात में दोगुना वृद्धि होने का अनुमान है।

कारोबार ब्रीफ

16,000 करोड़ के निवेश प्रस्ताव मिले

नई दिल्ली। सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विनिर्माण योजना के तहत 16,000 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव आकर्षित किए हैं। सूत्रों ने यह जानकारी दी है। सरकार ने एक मई को 22,805 करोड़ रुपये की इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विनिर्माण योजना (ईसीएमएस) के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे। एक आधिकारिक सूत्र ने बताया, ईसीएमएस के तहत लगभग 16,000 करोड़ रुपये के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। सरकारी सूत्र के अनुसार, अनुमोदन प्रक्रिया शुरू हो गई है और चयनित परियोजनाओं की घोषणा सितंबर में होने की उम्मीद है।

खुले बाजार में गेहूं की बिक्री की जरूरत नहीं

नई दिल्ली। खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने गुरुवार को कहा कि खुले बाजार हस्तक्षेप योजना के तहत सरकारी भंडार से गेहूं बेचने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि आपूर्ति पर्याप्त है और कीमतें स्थिर हैं। सरकार, भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रबंधित केंद्रीय पूल से अधिशेष भंडार को पूर्व निर्धारित आरक्षित मूल्यों पर सीधे बाजार में बेचकर गेहूं की आपूर्ति और कीमतों को विनियमित करने के लिए खुला बाजार बिक्री योजना का संचालन करती है।

सेबी ने जागरूकता पहल शुरू की

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने गुरुवार को कहा कि उसने प्रतिभूति बाजार में वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने एवं निवेशकों की सुरक्षा के लिए बाजार अवसंरचना संस्थानों और म्यूचुअल फंड निकाय एम्फी के साथ मिलकर एक साझा निवेशक जागरूकता अभियान शुरू किया है।

ब्रिटेन को रसायनिक उत्पादों का निर्यात 40 प्रतिशत तक बढ़ेगा

नई दिल्ली। एफटीए में प्रदान की गई शुल्क रियायतों की मदद से ब्रिटेन को भारत का रासायनिक निर्यात बढ़कर 65-75 करोड़ डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। रासायनिक उत्पादों पर शुल्क अब शून्य होगा, जो पहले आठ प्रतिशत तक था। हालांकि, ब्रिटेन को वर्तमान रासायनिक निर्यात 57 करोड़ 3.2 लाख डॉलर (भारत के वैश्विक रासायनिक निर्यात का लगभग 2%) है। ब्रिटेन को भारत के रासायनिक निर्यात में 30-40 प्रतिशत की वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे आगामी वित्त वर्ष में यह आंकड़ा अनुमानित 65-75 करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगा।

मुलाकात

लंदन में प्रधानमंत्री मोदी अपने ब्रिटिश समकक्ष कीर स्टार्मर के साथ व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर के बाद बिजनेस लीडर्स के साथ बातचीत करते हुए।

बिकवाली और एफआईआई की निकासी से सेंसेक्स 543 अंक लुढ़का

मुंबई, एजेंसी

● **निफ्टी 158 अंक के नुकसान पर बंद, 2,410 शेयरों में गिरावट**

स्थानीय शेयर बाजार में गुरुवार को गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स 543 अंक लुढ़क गया जबकि एनएसई निफ्टी 158 अंक के नुकसान में रहा। मुख्य रूप से प्रमुख कंपनियों के शेयरों में मुनाफावसूली और विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी जारी रहने से बाजार में गिरावट आई। सकारात्मक शुरुआत के बावजूद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स इस गति को बनाए नहीं रख सका और बाद में इसमें गिरावट आई। सेंसेक्स 542.47 अंक यानी 0.66 प्रतिशत की गिरावट के साथ 82,184.17 अंक पर बंद हुआ।

कारोबार के दौरान, एक समय यह 679.42 अंक तक लुढ़क गया था। बीएसई में सूचीबद्ध शेयरों में 2,410 शेयरों में गिरावट रही जबकि 1,645 शेयर बढ़त में रहे। वहीं 166 के भाव अपरिवर्तित रहे। पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 157.80 अंक यानी 0.63 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,062.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट, टेक महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, रिलायंस इंडस्ट्रीज, इन्फोसिस, कोटक महिंद्रा बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और एनटीपीसी प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं।

सेबी जुर्माना चूक मामले में दो निदेशकों को 6 महीने की सजा

मुंबई। एक विशेष अदालत ने आभूषण फैशन एक्सेसरीज क्षेत्र से जुड़ी फर्म एम'बेले इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के दो निदेशकों को सेबी द्वारा लगाए गए एक करोड़ रुपये के जुर्माने को जमा करने में विफल रहने पर छह महीने के कारावास की सजा सुनाई है।

विशेष न्यायाधीश आर एम जाधव ने 19 जुलाई को पारित एक आदेश में गोपू बेलानी और अनुपमा मोटवानी को दोषी ठहराया और उन्हें सजा सुनाई। साथ ही, नियामक द्वारा मूल रूप से लगाए गए जुर्माने का भुगतान न करने पर उन्हें एक-एक करोड़ रुपये का भुगतान करने का भी निर्देश दिया। सेबी ने 2014 में कंपनी और उसके निदेशकों के खिलाफ सेबी अधिनियम, 1992 के तहत दंडनीय अपराध के लिए मामला दर्ज किया था।

दूरसंचार नीति के मसौदे में 10 लाख नौकरियों का लक्ष्य

नई दिल्ली, एजेंसी

● **राष्ट्रीय दूरसंचार नीति का लक्ष्य 2030 तक एक लाख करोड़ का वार्षिक निवेश आकर्षित करना**

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति (एनटीपी) का लक्ष्य 2030 तक एक लाख करोड़ रुपये का वार्षिक निवेश आकर्षित करना और 10 लाख नए रोजगार के अवसर सृजित करना है। दूरसंचार विभाग द्वारा जारी दस्तावेजों के मसौदे में यह कहा गया है।

मसौदा नीति का उद्देश्य 5जी और 6जी, कृत्रिम मेधा (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और क्वांटम संचार जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में नवोन्मेषण और अनुसंधान के लिए भारत को शीर्ष 10 वैश्विक केंद्रों में शामिल करना है। गुरुवार को जारी नीति के मसौदा दस्तावेज के अनुसार, एनटीपी-25 का लक्ष्य 2030 तक दूरसंचार क्षेत्र में विभिन्न रणनीतिक उद्देश्यों को पूरा करना है। इनमें सभी के लिए सार्वभौमिक और सार्थक संपर्क, भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इस क्षेत्र का योगदान दोगुना करना और एक लाख करोड़ रुपये का वार्षिक निवेश प्राप्त करना हैं। दूरसंचार विभाग ने परिपत्र जारी होने की तिथि से 21 दिन के भीतर प्रस्तावित नीति पर जनता से टिप्पणियां आमंत्रित की हैं। इस नीति का उद्देश्य भारत को न केवल डिजिटल प्रौद्योगिकियों का अग्रणी उपभोक्ता बनाना, बल्कि दूरसंचार उत्पादों, सेवाओं और समाधान का एक विश्वसनीय वैश्विक प्रदाता भी बनाना है। दस्तावेज के अनुसार, एनटीपी-25 भारत को दुनिया के लिए दूरसंचार उत्पादों का पसंदीदा विनिर्माता बनाने के लिए काम करेगी।

अपने व्यवहार से करदाताओं का भरोसा हासिल करें कर अधिकारी

नई दिल्ली, एजेंसी

● **वित्त मंत्री सीमारमण ने नए आयकर विधेयक का मसौदा तैयार करने की सराहना की**

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को आयकर अधिकारियों से नीतियों के समय पर क्रियान्वयन में मानकों को ऊंचा करने और अपने व्यवहार से करदाताओं का भरोसा अर्जित करने को कहा। सीतारमण ने आयकर अधिकारियों की नई प्रौद्योगिकी को अपनाने और केवल छह महीनों के भीतर नए आयकर विधेयक का मसौदा तैयार करने में उनकी तत्परता की सराहना की।

उन्होंने जल्द से जल्द ओजीई के लंबित मामलों को निपटाने के लिए प्रेरित किया। ओजीई (या प्रभावी आदेश) एक ऐसा आदेश है जो एक आयकर अधिकारी को तब पारित करना होता है जब कोई करदाता कर निर्धारण के विरुद्ध अपील में विभाग के खिलाफ मामला जीत जाता है। उन्होंने यहां 166वें आयकर दिवस समारोह में कहा, अच्छी नीतियां ही पर्याप्त नहीं हैं। वास्तव में जो मायने रखता है वह है समय पर क्रियान्वयन... मुझे लगता है कि इतने वर्षों में आपने (कर अधिकारी) अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। अब मानकों को ऊंचा करने का समय आ गया है। आप अपने व्यवहार से करदाताओं का विश्वास अर्जित कीजिए। आयकर दिवस राज्य और करदाता के बीच अघोषित सामाजिक अनुबंध की फिर से पुष्टि करने का अवसर है। सीतारमण ने नए आयकर विधेयक, 2025 का मसौदा तैयार करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा कि आयकर कानून 1961 को सरल बनाने वाले प्रस्तावित कानून का मसौदा तैयार करने में 60,000 मानव घंटे लगे।

एफटीए दोनों देशों के बीच 99 फीसदी उत्पादों पर ड्यूटी फ्री होने से होगा फायदा

कानपुर में बढ़ सकता 400 करोड़ रुपये का निर्यात

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। भारत-ब्रिटेन के बीच हुए मुक्त व्यापार समझौते का शहर के निर्यात कारोबार पर भी बड़ा असर पड़ेगा। निर्यात विशेषज्ञों की मानें तो इस समझौते से निर्यातकों को दोनों देशों के बीच होने वाले कारोबार में 99 फीसदी उत्पादों पर फ्री ड्यूटी का लाभ मिलेगा। इसके अलावा शहर में ब्रिटेन के कारोबारियों के साथ होने वाले ई कारोबार में लगभग 20 फीसदी का इजाफा हो सकता है। यह लगभग 400 करोड़ रुपये के आसपास है। अभी दोनों देशों के बीच लगभग दो हजार करोड़ रुपये का निर्यात कारोबार होता है।

● **चमड़ा, खिलौने, इंजीनियरिंग गुड्स सहित शहर से कई अन्य प्रमुख उत्पादों का होता है निर्यात**

व्यापारिक समझौता होने के बाद माना जा रहा है कि शहर से सबसे अधिक चमड़ा, चमड़े के खिलौने, कृषि उत्पाद, टेक्सटाइल, होजरी, इंजीनियर गुड्स सहित अन्य उत्पादों का निर्यात बढ़ेगा। इसके अलावा दोनो देशों के बीच होने वाले कारोबार में 99 फीसदी उत्पादों पर ड्यूटी फ्री निर्यात कारोबार होगा। उत्पाद सस्ते होने की वजह से शहर को भी नए उत्पादों के ऑर्डर मिलने की संभावना बढ़ गई है। फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) के सहायक निदेशक आलोक श्रीवास्तव ने कहा कि इस समझौते का शहर के निर्यातक लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। निश्चित रूप से इस समझौते से शहर के निर्यात कारोबार को लाभ होगा। इस समझौते से कई नए सेक्टर के उत्पादों के लिए भी निर्यात रास्ते भविष्य में खुल सकते हैं।

रोजगार के बढ़ेंगे अवसर

समझौते के बाद निर्यात कारोबार बढ़ने से शहर के रोजगार के अवसरों में भी बढ़ोतरी होगी। खासतौर पर स्किल्ड युवाओं के लिए 15 फीसदी रोजगार के अवसर बढ़ने की संभावना जताई जा रही है। इसी तरह एमएसएमई सेक्टर के लिए भी यह समझौता बेहतर व्यापार के अवसर लेकर आया है। निर्यात विशेषज्ञों का मानना है कि उत्पादों का निर्यात बढ़ने से इस सेक्टर का भी लगभग दस फीसदी अधिक कारोबार बढ़ सकता है। शहर से ब्रिटेन में चमड़े के उत्पाद, कृषि उत्पाद, इंजीनियरिंग गुड्स, चमड़े के खिलौने सहित अन्य उत्पाद निर्यात होते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि समझौता होने के बाद वर्ष 2030 तक ब्रिटेन के साथ निर्यात कारोबार में हर वर्ष लगभग 10 से 20 फीसदी के आस-पास बढ़ोतरी हो सकती है।

वर्ल्ड ब्रीफ

शंकराचार्य मंदिर पहुंचा शिव का पवित्र दंड

श्रीनगर। भगवान शिव के पवित्र दंड 'छड़ी मुबारक' को सदियों पुरानी परंपरा के अनुरूप 'हरियाली अमावस्या' (श्रावण अमावस्या) के अवसर पर विशेष पूजा-अर्चना के लिए बृहस्पतिवार को यहां ऐतिहासिक शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया। महंत दीपेंद्र गिरि के नेतृत्व में छड़ी मुबारक को वार्षिक अमरनाथ यात्रा के तहत पूजा-अर्चना के लिए गोपाद्री पहाड़ियों पर स्थित मंदिर ले जाया गया। 'छड़ी मुबारक' के संरक्षक गिरि ने बताया कि 'छड़ी मुबारक' को यहां लाल चौक के निकट दशनामी अखाड़ा स्थित उसके निवास स्थान से मंदिर लाया गया, जहां पूजन किया गया।

थाईलैंड-कंबोडिया में सीमा विवाद तेज, 9 मरे

बैंकॉक। थाईलैंड और कंबोडिया में चल रहा सीमा विवाद गुरुवार को खूनी संघर्ष में तब्दील हो गया जिसमें थाईलैंड के नौ नागरिकों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। देर शाम तक दोनों देशों के सीमांत इलाकों में रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही। 'बैंकाक पोस्ट' ने जानकारी दी है कि कंबोडिया के हमले में एक बच्चे सहित नौ थाई नागरिकों मारे गए और 14 अन्य घायल हो गए। जबकि कंबोडिया में हताहतों की जानकारी नहीं मिल सकी। रायल थाई आर्मी के हवाले से बताया गया कि कंबोडिया की सेना ने रॉकेट दागे और आम लोगों को निशाना बनाया।

आईएईए के दौरे के लिए सहमत हुआ ईरान

संयुक्त राष्ट्र। ईरान ने अंतरराष्ट्रीय परमाणु उर्जा एजेंसी (आईएईए) की एक तकनीकी टीम को देश में आने की अनुमति दे दी है। ईरान के कानून और अंतर्राष्ट्रीय मामलों के उप-विदेश मंत्री काजम गरीबाबादी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आईएईए की टीम अगले दो-तीन सप्ताह में आएगी। गरीबाबादी ने कहा, आईएईए का एक प्रतिनिधिमंडल अगले दो-तीन सप्ताह में आने वाला है। वे कामकाज के तौरतरीकों पर बातचित करने के लिए आ रहे हैं न कि परमाणु स्थलों पर जाने के लिए। हमारा परमाणु उर्जा संगठन परमाणु संयंत्रों को हुए क्षति का आकलन कर रहा है।

वाहनों में 6 एयरबैग की मांग वाली याचिका रद्द

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने यात्री वाहनों में छह एयरबैग लगाए जाने का अनुरोध करने वाली याचिका बृहस्पतिवार को खारिज कर दी और कहा कि यह मामला पूरी तरह नीतिगत दायरे में आता है। प्रधान न्यायाधीश बी आर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने याचिकाकर्ता से कहा कि वह सरकार को अभ्यावेदन दे। याचिकाकर्ता ने कहा कि वह 17 मई को सरकार को अभ्यावेदन दे चुके हैं।

अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए नए ऊष्मा स्रोत ईंधन का परीक्षण

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने पृथ्वी से लाखों मील दूर अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए नए ऊष्मा स्रोत ईंधन का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है।

गहरे अंतरिक्ष में अज्ञात चीजों का पता लगाने को अंतरिक्ष यान में पर्याप्त शक्ति होना अत्यंत आवश्यक है। नासा के रेडियोआइसोटोप पावर सिस्टम इन अभियानों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प हैं जिसका उपयोग 60 वर्षों से किया जा रहा है। ये परमाणु बैटरी अंतरिक्ष यानों और विज्ञान उपकरणों को दीर्घकालिक विद्युत शक्ति प्रदान करती हैं। नासा ने कहा कि अब नासा एक नए प्रकार के आरपीएस ऊष्मा स्रोत ईंधन का परीक्षण कर रहा है जो भविष्य में चरम वातावरण में लंबी अवधि की यात्राओं के लिए अतिरिक्त विकल्प बन सकता है। ऐतिहासिक रूप से, रेडियोआइसोटोप प्लूटोनियम-238 नासा का पसंदीदा आरपीएस ऊष्मा स्रोत ईंधन रहा है जबकि दो दशकों से अमेरिकियम-241 यूरोप में पसंदीदा रहा है।

● गहरे अंतरिक्ष में यान की पर्याप्त शक्ति की जरूरत करेगा पूरी

माइक्रोप्लास्टिक के खतरे

विकसित देशों की तुलना में भारत में ज्यादा

माइक्रोप्लास्टिक वैसे तो एक वैश्विक पर्यावरणीय संकट बन चुका है जो न केवल प्रकृति बल्कि मानव और पशु स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा बनता जा रहा है लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों में इसका खतरा अपेक्षाकृत ज्यादा है। माइक्रोप्लास्टिक एक अदृश्य लेकिन गंभीर संकट है और इसका गहरा असर हवा, पानी, भोजन और स्वास्थ्य पर हो रहा है। मानव ही नहीं, जानवर भी इस संकट से अछूते नहीं हैं। इस खतरे से बचाव के लिए प्रभावी नीतियों के अलावा वैज्ञानिक अनुसंधान और जान भागीदारी की भी त्वरित आवश्यकता है लेकिन विडंबना है कि इस दिशा में किए जाने वाले प्रयास काफी कम हैं और जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे कोई ज्यादा असरदार साबित नहीं हो रहे हैं।

कैसे मिलते हैं वातावरण में

- सूरज की अल्ट्रा वायलेट किरणों, घर्षण और समुद्र की लहरों से प्लास्टिक धीरे-धीरे टूटकर छोटे-छोटे कणों में बदल जाता है।
- ये कण पानी, हवा, मिट्टी में मिल जाते हैं और लंबे समय तक नष्ट नहीं होते। हवा और दूसरे माध्यमों से मानव शरीर में पहुंचते हैं।
- वॉशिंग मशीन से निकले सिंथेटिक फाइबर, टायर का घर्षण, माइक्रोबीड्स युक्त सौंदर्य प्रसाधन भी इनका प्रमुख स्रोत हैं।

क्या होती है माइक्रोप्लास्टिक

माइक्रोप्लास्टिक यानी 5 मिमी से छोटे आकार के प्लास्टिक कण जो मुख्यत: दो तरह के होते हैं।

- **प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिक** : ये प्लास्टिक के छोटे कण होते हैं जिन्हें सौंदर्य प्रसाधनों, व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों और औद्योगिक अनुप्रयोगों में उपयोग के लिए जानबूझकर बनाया जाता है। उदाहरण के लिए, माइक्रोबीड्स जो एक्सफोलिएटिंग उत्पादों में पाए जाते हैं, ये प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिक हैं।
- **द्वितीयक माइक्रोप्लास्टिक** : ये बड़े प्लास्टिक के सामानों के टूटने से बनते हैं, जैसे कि प्लास्टिक की बोतलें, पैकेजिंग, और सिंथेटिक कपड़े. सूर्य के प्रकाश, गर्मी, हवा और लहरों के संपर्क में आने से बड़े प्लास्टिक के टुकड़े टूटकर छोटे कणों में बदल जाते हैं, जो अंतत: माइक्रोप्लास्टिक बन जाते हैं।

मानव स्वास्थ्य पर खतरे

- माइक्रोप्लास्टिक पीने के पानी, खाद्य पदार्थों जैसे मछली, नमक, शहद, दूध और हवा के जरिए इंसानों के शरीर में प्रवेश कर रहे हैं।
- ये शरीर में जाकर सूजन, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस, और हार्मोनल असंतुलन पैदा कर सकते हैं। इनसे गंभीर रोग पैदा हो सकते हैं।
- कुछ अनुसंधानों में माइक्रोप्लास्टिस की वजह से फेफड़ों, लिवर, आंतों और यहां तक कि मस्तिष्क में सूक्ष्म स्तर पर क्षति देखी गई है।
- एक ताजा रिसर्च के अनुसार इंसान हर हफ्ते 5 ग्राम माइक्रोप्लास्टिक निगल सकता है जो एक क्रेडिट कार्ड के बराबर हो सकती है।

चिंताजनक : पर्याप्त नहीं प्रयास, निष्फलता ज्यादा

माइक्रोप्लास्टिक के बड़े खतरे सामने आने के बाद प्रतिबंध तो लगाए गए हैं लेकिन इसके बावजूद सिंगल यूज प्लास्टिक का अवैध उपयोग जारी है और सुधार की प्रगति काफी धीमी है। जन जागरूकता की कमी, कचरा पृथक्करण की असफलता और रिसाइक्लिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी से संकट जस का तस बना हुआ है। सरकार, उद्योग और आम जनता तीनों के संयुक्त प्रयासों की कमी से स्थायी समाधान नहीं हो पा रहा है।

लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने वाले जवाबदेह ठहराए जाएं

मोदी ने ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों पर चिंता जताई

लंदन, एजेंसी

भारत द्वारा ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक तत्वों की बढ़ती गतिविधियों पर बृहस्पतिवार को अपनी चिंता जाहिर करने के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि चरमपंथी विचारधारा वाली शक्तियों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। मोदी ने ब्रिटेन के अपने समकक्ष केअर स्टार्मर के साथ वार्ता के बाद यह बात कही।

मोदी ने यह भी कहा कि भारत और ब्रिटेन दोनों इस बात पर 'एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती।' उन्होंने पहलगाम आतंकवादी हमले की 'कड़ी' निंदा करने के लिए ब्रिटिश सरकार को धन्यवाद दिया। प्रधानमंत्री ने कहा, हम इस बात पर सहमत हैं कि चरमपंथी विचारधारा वाली शक्तियों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। जो लोग लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों खासकर मार्च 2023 में लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग पर हुए हमले के बाद भारत में चिंताएं बढ़ रही हैं। भारत, ब्रिटेन की धरती पर खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों को लेकर ब्रिटेन के समक्ष अपनी चिंताओं से अवगत कराता रहा है।

मोदी ने आतंकवाद की चुनौती का दृढ़ता से मुकाबला करने की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया। प्रधानमंत्री ने कहा, हम पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा के लिए प्रधानमंत्री स्टार्मर और उनकी सरकार का आभार व्यक्त करते हैं। हम इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मापदंडों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। समझा जा रहा है कि बातचीत में भारत की सीमा पार आतंकवाद की चुनौती पर भी चर्चा हुई।

मोदी और स्टार्मर के बीच बातचीत मुख्यतः व्यापार, निवेश, रक्षा एवं सुरक्षा, शिक्षा और स्वच्छ प्रौद्योगिकी समेत विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने पर केंद्रित रही। दोनों पक्षों ने एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए।

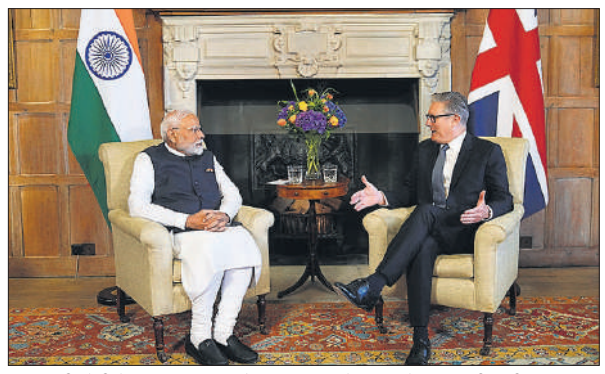

प्रधानमंत्री मोदी ने ब्रिटिश समकक्ष केअर स्टार्मर से कई मुद्दों पर बातचीत की।

चरमपंथ पर भारत -ब्रिटेन के विचार एक: मिसरी

विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने मीडिया ब्रीफिंग में कहा कि 'चरमपंथी तत्वों' की गतिविधियों पर ब्रिटेन के साथ भारत के विचार मिलते हैं। उन्होंने कहा, हमने इस तथ्य पर ध्यान दिया है कि वे उत्तरोत्तर सक्रिय हो रहे हैं तथा अतीत में और अब भी हमारे राजनयिक मिशन एवं कर्मियों की सुरक्षा के लिए खतरा बने हुए हैं, वे हमारे नेताओं और राजनयिकों के खिलाफ हिंसा भड़का रहे हैं। मिसरी ने यह भी कहा कि इस मुद्दे पर भारत को ब्रिटेन से सहयोग मिला है। मिसरी ने कहा कि मोदी और स्टार्मर ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई को मजबूत करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा, यह बात रेखांकित की गई कि चरमपंथ और कट्टरपंथ दोनों समाज के लिए खतरा हैं तथा आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरपंथ की बुराइयों से निपटने के लिए द्विपक्षीय सहयोग एवं समन्वय को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

महाराज चार्ल्स तृतीय को पौधा भेंट किया

लंदन। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को पूर्वी इंग्लैंड के नॉरफॉक स्थित सैंड्रिंगम एस्टेट में महाराजा चार्ल्स तृतीय के साथ मुलाकात के दौरान उन्हें एक पेड़ मां के नाम पर्यावरण पहल के तहत एक पौधा भेंट किया। मोदी ने कहा कि दोनों के बीच योग और आयुर्वेद जैसे पहलुओं के साथ-साथ भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते, जिसे व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) के रूप में जाना जाता है, पर भी चर्चा हुई, जिस पर उनके और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर के बीच हस्ताक्षर हुए थे। प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, महाराजा राजा चार्ल्स तृतीय के साथ बहुत शानदार बैठक हुई। मोदी ने कहा, हमने भारत-ब्रिटेन संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, जिसमें सीईटीए और 'विज़न 2035' के मद्देनजर व्यापार और निवेश की जमीनी प्रगति भी शामिल थी।

भारत ने किया गाजा में संघर्षविराम का आह्वान

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने गाजा में जारी मानवीय संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वहां संघर्षविराम जरूरी है और यह भी स्पष्ट किया कि बीच-बीच में संघर्षविराम क्षेत्र की जनता के सामने मौजूद चुनौतियों को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बुधवार को हुई एक चर्चा में भारत के स्थायी प्रतिनिधि पर्वतनेनी हरीश ने कहा, आज की बैठक गाजा में जारी मानवीय संकट की पृष्ठभूमि में हो रही है। हरीश ने 'फलस्तीन समेत पश्चिम एशिया में स्थिति' पर एक बहस में भाग लेते हुए कहा, बीच-बीच में संघर्षविराम, लोगों के सामने आ रही मानवीय चुनौतियों से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं है।

पूर्वजों को श्रद्धांजलि

तमिलनाडु के कन्याकुमारी त्रिसमुद्री स्थल पर आदि अमावस्या के अवसर पर लोग गुरुवार सुबह अपने पूर्वजों को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए। कन्याकुमारी जिले में इस परंपरागत आयोजन के दिन सरकारी अवकाश रहता है। एजेंसी

संबंध बनाने की सहमति उम्र 18 से घटा 16 करने की सुप्रीम कोर्ट से सिफारिश

नई दिल्ली, एजेंसी

● किशोरावस्था की यौन गतिविधियों के अपराधीकरण को चुनौती

न्यायमित्र और वरिष्ठ अधिवक्ता इंदिरा जयसिंह ने सहमति से शारीरिक संबंध बनाने के लिये वैधानिक उम्र 18 वर्ष से घटाकर 16 वर्ष करने की शीर्ष अदालत से सिफारिश की है। चर्चित 'निपुण सक्सेना बनाम भारत संघ' मामले में शीर्ष अदालत की सहायता करने वाली न्यायमित्र जयसिंह ने पॉक्सो एक्ट 2012 और आईपीसी की धारा 375 के तहत 16 से 18 वर्ष की आयु के किशोर एवं किशोरियों से जुड़ी यौन गतिविधियों को पूर्ण अपराधीकरण करने को चुनौती देते हुए लिखित प्रस्तुति दी हैं।

उन्होंने दलील दी कि वर्तमान कानून किशोरों के बीच सहमति से बनाए गए प्रेम संबंधों को अपराध मानता है और उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। जयसिंह ने कहा कि कानूनी ढांचा किशोरों के बीच सहमति से बने संबंधों को गलत तरीके से दुर्व्यवहार के बराबर मानता है, तथा उनकी स्वायत्तता, परिपक्वता और सहमति देने की क्षमता को नजरअंदाज करता है। वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा, सहमति की आयु 16 से बढ़ाकर 18 वर्ष करने को उचित ठहराने के लिए कोई तर्कसंगत कारण या अकाट्य आंकड़ा नहीं है। उन्होंने कहा कि आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013 द्वारा इसे बढ़ाए जाने से पहले 70 वर्षों से अधिक समय तक यौन सहमति की आयु सीमा 16 वर्ष ही रही थी।

जयसिंह ने कहा कि शारीरिक संबंध बनाने के लिए सहमति की उम्र में वृद्धि बिना किसी बहस के की गई थी, और यह न्यायमूर्ति वर्मा समिति की सिफारिश के विरुद्ध है। इस समस्या के समाधान के लिए, उन्होंने न्यायालय से कानून में आयु के निकट अपवाद को शामिल करने का आग्रह किया, जो 16 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों के बीच सहमति से किए गए यौन कृत्यों को पॉक्सो और आईपीसी के तहत अभियोजन से छूट देगा। उन्होंने कहा, किशोरों के बीच यौन संबंधों को अपराध घोषित करना मनमाना, असंवैधानिक और बच्चों के सर्वोत्तम हितों के विरुद्ध है।

बांग्लादेश: राजद्रोह और जालसाजी के मामले में पूर्व सीजेआई हिरासत में

ढाका, एजेंसी

बांग्लादेश के पूर्व प्रधान न्यायाधीश एबीएम खैर-उल-हक को राजद्रोह के आरोप सहित तीन आपराधिक मामलों में बृहस्पतिवार को हिरासत में लिया गया है।

हक 2010 से 2011 तक देश के 19वें प्रधान न्यायाधीश रहे थे। उन्हें ऐतिहासिक फैसले सुनाने के लिए जाना जाता है। उनकी अगुवाई वाली पीठ ने 2011 में व्यवस्था देते हुए बांग्लादेश की गैर-दलीय कार्यवाहक सरकार प्रणाली को असंवैधानिक घोषित किया गया था। ढाका मेट्रोपोलिटन पुलिस के उपायुक्त तालिब-उर-रहमान ने संवाददाताओं को बताया कि जासूसी शाखा के अधिकारियों ने 81 वर्षीय पूर्व न्यायाधीश को राजधानी के धनमंडी इलाके में उनके आवास से हिरासत में लिया।

रहमान ने कहा, हक तीन मामलों में आरोपी हैं। कानूनी प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधान न्यायाधीश को अदालत में पेश करने से पहले कम से कम एक मामले में गिरफ्तार किया जा सकता है।

जन्मजात नागरिकता : ट्रंप के फैसले पर रोक बरकरार

वाशिंगटन, एजेंसी

● आदेश को संघीय अपील कोर्ट ने असंवैधानिक बताया, निचली अदालत का देश भर में रोक का फैसला बरकरार

अमेरिका की एक संघीय अपील अदालत ने बुधवार को एक फैसले में कहा कि जन्म आधारित नागरिकता को समाप्त करने संबंधी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का आदेश असंवैधानिक है। अदालत ने साथ ही देशभर में ट्रंप के फैसले पर अमल पर रोक लगाने वाले अधीनस्थ अदालत के फैसले को बरकरार रखा।

यह फैसला '9वीं अमेरिकी सर्किट कोर्ट ऑफ अपील्स' के तीन न्यायाधीशों के पैनल ने सुनाया, इससे पहले न्यू हैम्पशायर के एक संघीय जज ने ट्रंप के आदेश पर रोक लगाई थी। अपील अदालत के फैसले से ट्रंप प्रशासन पर उस आदेश को लागू करने पर रोक रहेगी जो अवैध रूप से या अस्थायी रूप से अमेरिका में रहने वाले लोगों के बच्चों को नागरिकता देने से इनकार करता है। अदालत ने अपने आदेश में कहा, डिस्ट्रिक कोर्ट ने सही निष्कर्ष निकाला है कि शासकीय आदेश की प्रस्तावित व्याख्या, जो अमेरिका में जन्मे कई लोगों को नागरिकता से वंचित करती है असंवैधानिक है। हम इससे पूरी तरह सहमत हैं। अदालत के फैसले पर फिलहाल 'व्हाइट हाउस' और न्याय मंत्रालय ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है।

भारतीयों को काम देने और चीन में कारखाने लगाने के दिन गए

न्यूयॉर्क/वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन में कारखाने लगाने और भारत में लोगों को काम पर रखने के लिए अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियों की आलोचना की और आगाह किया कि ऐसा करने के दिन अब लद चुके हैं। ट्रंप ने यह टिप्पणी बुधवार को एआई शिखर सम्मेलन में की, जहां उन्होंने एआई संबंधी तीन कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर किए। इसमें एआई के उपयोग के लिए व्हाइट हाउस की कार्य योजना भी शामिल है। उन्होंने कहा कि बहुत लंबे समय तक अमेरिका का अधिकतर प्रौद्योगिकी उद्योग कट्टरपंथी वैश्वीकरण का अनुसरण करता रहा, जिसके कारण लाखों अमेरिकी ठगा महसूस करते रहे हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 25 जुलाई, शुक्रवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-श्रावण, पक्ष-शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा 11.22 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

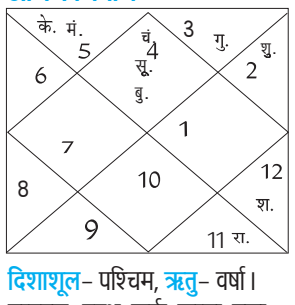

दिशाशूल- पश्चिम, ऋतु- वर्षा। चन्द्रबल-वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ।

ताराबल-अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती। नक्षत्र-पुण्य 16.00 तक तत्पश्चात अश्लेशा।

मेष — आज मानसिक तनाव का असर आपके काम और पारिवारिक जीवन पर पड़ सकता है। प्रबुद्ध व्यक्तियों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। घर के छोटे-छोटे काम को आज प्राथमिकता देंगे। कारोबार में सहकर्मियों के रवैये से नाखुश हो सकते हैं।

वृष — आज कार्यक्षेत्र में परिस्थितियां आपके लिए अनुकूल रहेंगी। जॉब में आप बड़ा बदलाव कर सकते हैं। बहुमूल्य वस्तुओं की खरीदारी कर सकते हैं। वैवाहिक जीवन का तनाव दूर होगा। बौद्धिक कार्यों में आप काफी ध्यान देंगे। समाज में आपकी ख्याति में वृद्धि होगी।

मिथुन — आज विदेशी संस्थानों से जॉब के ऑफर मिल सकते हैं। करियर को लेकर नई दिशा प्राप्त हो सकती है। जीवनसाथी से परामर्श लेना लाभकारी होगा। वैचारिक मतभेदों को अपने व्यक्तिगत संबंधों पर हावी न होने दें। आपको एकसाथ अनेक कार्य करने पड़ सकते हैं।

कर्क — आज युवा उद्यमियों को सम्मान मिल सकता है। मित्रों से वैचारिक मतभेद दूर होंगे। धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ेगी। घर की सुख-शांति बनी रहेगी। आपकी आय में वृद्धि होने के योग बन रहे हैं। कला जगत से जुड़े लोगों के लिए दिन विशेष शुभ है।

सिंह — आज का दिन सामान्य फलदायी रहेगा। परिजनों के साथ बैठकर गम्भीर मुद्दों पर चर्चा करेंगे। दैनिक कार्यों को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। आसपास के लोगों के व्यवहार पर नजर बनाये रखें। कब्ज और गैस की समस्या बढ़ सकती है।

कन्या — आज आप अत्यन्त ऊर्जावान महसूस करेंगे। शारीरिक रूप से काफी मजबूत रहेंगे। पुराने रोगों की बाधा समाप्त होगी। पूजा-पाठ और सत्संग में आप भाग लेंगे। खानपान पर आप अत्यधिक धन खर्च करेंगे। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि होगी।

तुला — आज विद्यार्थी उच्च शिक्षा को लेकर काफी सावधान रहेंगे। लोगों से आपकी जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा। घर में बुजुर्ग आपके विचारों से सहमत रहेंगे। प्रेम संबंधों में आपको थोड़ी असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा। विपरीत लिंग के जातकों के प्रति आकर्षित रहेंगे।

वृश्चिक — आज वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। मन की चञ्चलता पर नियंत्रण रखें। कर्ज और उधार चुकाने के लिये दिन बहुत अच्छा है। लोगों की अपेक्षाओं पर आप खरे उतरेंगे। अपने विचारों को लेकर थोड़े स्पष्ट रहें। जीवनसाथी की अहमियत को समझें।

धनु — आज आपकी परिस्थितियां प्रतिकूल हो सकती हैं। इसीलिए आपको सोच-समझकर ही निर्णय लेने चाहिए। जीवनसाथी को स्वास्थ्य समस्या होगी। पेट के विकार परेशान कर सकते हैं। ईर्ष्यालु लोग आपके विषय में गलत बातें प्रसारित कर सकते हैं।

मकर — आज आपकी कोई मनोकामना पूर्ण हो सकती है। परिजनों का व्यवहार आपके प्रति बहुत ही अच्छा रहेगा। अपनी सफलता का भरपूर आनंद उठायेंगे। मित्र आपकी प्रत्येक कार्य में सहायता करेंगे। जीवनसाथी के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न होगा। समाज में आपका वर्चस्व बढ़ेगा।

कुंभ — आज आपका स्वभाव थोड़ा अड़ियल रहेगा। राजनीति से जुड़े लोगों की परेशानियां दूर होंगी। पढ़ाई में आपको काफी मेहनत करनी पड़ेगी। आय के नए स्रोत विकसित हो सकते हैं। उधार दिया हुआ धन आपको वापस करना पड़ेगा। परिवार में मांगलिक कार्यक्रम की रूपरेखा बनेगी।

मीन — आज आपके ऊपर जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ सकता है। नए काम की शुरुआत करने का विचार बनायेंगे। संतान की सफलता से उत्साहित रहेंगे। अपनी गलतियों को सुधारने के लिए दिन बहुत अच्छा है। मार्केटिंग संबंधी कार्यों से धन लाभ होगा।

सुडोकू-49

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

			6				8	
	8	9			4			5
3			2			7		
	2			8	9			6
		7				3	9	
9				1			4	
		1			7			8
4			1			9	5	
	9				5			

सुडोकू - 48 का हल

7	6	5	9	3	1	2	4	8
9	4	3	6	2	8	1	5	7
8	2	1	5	7	4	3	9	6
5	9	6	8	1	3	7	2	4
3	7	4	2	5	9	8	6	1
1	8	2	7	4	6	9	3	5
4	3	7	1	6	2	5	8	9
6	1	9	3	8	5	4	7	2
2	5	8	4	9	7	6	1	3

इंग्लैंड में जीतना हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है और टी-20 तथा वनडे दोनों में ऐसा करना टीम की तैयारी और मानसिकता के बारे में बहुत कुछ बयां करता है। इस शानदार प्रदर्शन से टीम का आत्मविश्वास बढ़ेगा।
-सचिन तेंदुलकर

स्टेडियम

लखनऊ, शुक्रवार, 25 जुलाई 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

स्पोर्ट्स हाईलाइट

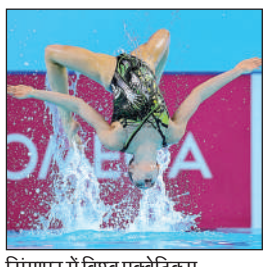

सिंगापुर में विश्व एक्वेटिक्स चैंपियनशिप में कनाडा की खिलाड़ी कलात्मक तैराकी के महिला युगल फ्री फाइनल में प्रतिस्पर्धा करती हुईं।

डॉसन से इंग्लैंड को मजबूती मिली : वॉन

मैनचेस्टर : इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन का मानना है कि बायें हाथ के स्पिनर लियाम डॉसन को टीम में शामिल करने से मेजबान टीम को मजबूती मिली है क्योंकि वह ऑलराउंडर हैं और टीम को आवश्यक संतुलन प्रदान करते हैं। शोएब बशीर की चोट के कारण आठ साल के अंतराल के बाद अंतिम एकादश में शामिल किए गए 35 वर्षीय डॉसन ने भारत के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच के पहले दिन शानदार फॉर्म में चल रहे यशस्वी जायसवाल को अपनी सातवीं गेंद पर ही आउट करके अपना प्रभाव छोड़ा। वॉन ने कहा वह ऐसे क्रिकेटर हैं जिनसे कप्तान अच्छी गेंदबाजी, अच्छी बल्लेबाजी और अच्छी फील्डिंग की उम्मीद कर सकता है।

ईएफआई की साख कम हो रही है: कुरैशी

नई दिल्ली : अदालत द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक एसवाई कुरैशी ने भारतीय घुड़सवारी महासंघ (ईएफआई) के कामकाज का आकलन करने के बाद चुनाव कराने की मांग करते हुए कहा इसके कार्यकारी समिति के सदस्यों के बीच अंतहीन कलह खेल संस्था की साख कम कर रही है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने नवंबर 2019 में राजस्थान घुड़सवारी संघ की एक याचिका का जवाब देते हुए पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त कुरैशी को ईएफआई के कामकाज की देखरेख का जिम्मा सौंपा था। उच्च न्यायालय ने 29 मई 2024 को अंतरिम व्यवस्था के रूप में नवंबर 2019 में चुनी गई कार्यकारी समिति को बहाल कर दिया था।

आईओए ने सीईओ को लेकर विवाद खत्म किया

नई दिल्ली : भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की कार्यकारी परिषद ने बृहस्पतिवार को एक लंबे विवाद को खत्म करते हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) रघुराम अय्यर की नियुक्ति को मंजूरी दे दी और डोपिंग से निपटने के लिए एक पैनल का गठन किया। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक परिषद (आईओसी) ने 2036 ओलंपिक की दावेदारी के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के दौरे के दौरान डोपिंग में देश के खराब रिकॉर्ड पर चिंता जताई थी, इसलिए इससे निपटना काफी अहम है। कार्यकारी परिषद के सदस्यों ने जनवरी 2024 में अध्यक्ष पीटी उषा द्वारा की गई अय्यर की नियुक्ति को मंजूरी देने से इनकार कर दिया था जिसका मुख्य कारण उनका 20 लाख रुपये प्रति माह का वेतन और अन्य भत्ते थे।

नई दिल्ली में भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के दौरान भारतीय मुक्केबाज विजेंदर सिंह (बीच में) व विश्व मुक्केबाजी कप 2025 की विजेता साक्षी चौधरी (दाएं) और जैस्मीन लैम्बोरिया। एजेंसी

बीएफआई ने विजेंदर की विशेषज्ञता मांगी

नई दिल्ली : भारतीय मुक्केबाजी की अंतरिम समिति के प्रमुख अजय सिंह ने कहा कि उन्होंने ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज विजेंदर सिंह से 'कुछ ट्रेनिंग शिविरों' का निरीक्षण करके और सुधार के लिए सुझाव देकर अपनी विशेषज्ञता प्रदान करने का अनुरोध किया है। बीजिंग ओलंपिक 2008 में कांस्य पदक जीतने वाले विजेंदर ओलंपिक में पोडियम पर पहुंचने वाले भारत के एकमात्र पुरुष मुक्केबाज हैं। उन्होंने कहा विजेंदर गतिविधियों में काफी सक्रिय रहते हैं। बेशक वह मुक्केबाजों के लिए बड़ी प्रेरणा हैं, हम उनके कौशल और विशेषज्ञता का उपयोग प्रशिक्षण में करना चाहते हैं।

शतक से चूके डकेट और क्राली इंग्लैंड के नाम रहा दूसरा दिन

भारत के 358 रनों के जवाब में इंग्लैंड ने दो विकेट पर बनाए 225 रन, अंशुल कम्बोज ने दिलाई दूसरी सफलता

मैनचेस्टर, एजेंसी

कप्तान बेन स्टोक्स (72 रन पर पांच विकेट) ने आठ साल में पहली बार पांच विकेट चटकाकर भारत को 358 रन पर रोक दिया। जिसके बाद बेन डकेट और जैक क्रॉली ने पहले विकेट के लिए शतकीय साझेदारी करके इंग्लैंड को पहली पारी में दो विकेट पर 225 रन तक पहुंचाकर चौथे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन मेजबान टीम का पलड़ा भारी रखा।

डकेट ने 100 गेंद में 13 चौकों की मदद से 94 रन की पारी खेलने के अलावा क्रॉली (84) के साथ पहले विकेट के लिए 166 रन की साझेदारी करते हुए भारतीय गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ाकर इंग्लैंड को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। दोनों सलामी बल्लेबाजों ने भारतीय तेज गेंदबाजों की दिशाहीन गेंदबाजी का पूरा फायदा उठाया और इस दौरान 'बैजबॉल' (हर हाल में आक्रामक होकर बल्लेबाजी करना) की झलक भी दिखाई जिसके लिए टीम मशहूर है। दिन का खेल खत्म होने पर ओली पोप 20 जबकि जो रूट 11 रन बनाकर खेल रहे थे।

इंग्लैंड अब भारत के पहली पारी के 358 रन के स्कोर से सिर्फ 133 रन पीछे है जबकि उसके आठ विकेट शेष हैं। स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर (73 रन पर तीन विकेट) ने दूसरे दिन बेहतर गेंदबाजी करते हुए भारत को 358 रन पर समेटने में अहम भूमिका निभाई। ऋषभ पंत ने पैर में फ्रैक्चर के बावजूद 75 गेंद में 54 रन की पारी खेली। उन्हें चलने में परेशानी हो रही थी लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अर्धशतक पूरा किया। शारदुल ठाकुर (41 रन, 88 गेंद) ने भी जुझारू पारी खेलकर भारत का स्कोर 350 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। भारतीय तेज गेंदबाजों ने अच्छी शुरुआत नहीं की और दिशाहीन गेंदबाजी की। पदार्पण कर रहे तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज (48 रन पर एक विकेट) अपने शुरुआती दो स्पैल में विकेट हासिल नहीं कर पाए जबकि अनुभवी जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सके। क्रॉली ने धीमी शुरुआत के बाद लय हासिल की और कुछ आकर्षक शॉट खेले।

बेन डकेट का विकेट लेने के बाद जश्न मनाते अंशुल कम्बोज। एजेंसी

भारतीय टीम अगले साल इंग्लैंड में पांच टी20 और तीन वनडे खेलेगी

मैनचेस्टर : इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने गुरुवार को घोषणा की कि भारत अगले साल सीमित ओवरों की शृंखला के लिए इंग्लैंड का दौरा करेगा जिसमें पांच टी20 अंतर्राष्ट्रीय और तीन एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच शामिल हैं। भारत का दौरा एक जुलाई को डरहम में टी-20 मैच से शुरू होगा, जिसके बाद मैनचेस्टर (चार जुलाई), नॉटिंघम (सात जुलाई), ब्रिस्टल (नौ जुलाई) और साउथम्प्टन (11 जुलाई) में मैच खेले जाएंगे। दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की एकदिवसीय शृंखला 14 जुलाई से बर्मिंघम में शुरू होगी। इसके बाद 16 जुलाई को कार्डिफ और 19 जुलाई को लॉर्ड्स में मैच खेले जाएंगे। भारतीय महिला टीम भी अगले साल फिर से इंग्लैंड का दौरा करेगी। वह इंग्लैंड की महिला टीम के खिलाफ तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला और एक टेस्ट मैच खेलेगी। टी20 शृंखला 28 मई को चेम्सफोर्ड में शुरू होगी। 30 मई को ब्रिस्टल और दो जून को टॉन्टन में मैच खेले जाएंगे। एकमात्र टेस्ट मैच 10 जुलाई से लॉर्ड्स में खेला जाएगा।

भारत पहली पारी

358/10 (114.1 ओवर)

जायसवाल का ब्रूक बो डॉसन	58
केएल राहुल का क्रॉली बो वोक्स	46
सुदर्शन का कार्स बो स्टोक्स	61
शुभमन गिल पगबाधा बो स्टोक्स	12
ऋषभ पंत बो आर्चर	54
रविंद्र जडेजा का ब्रूक बो आर्चर	20
शारदुल का डकेट बो स्टोक्स	41
वाशिंगटन का वोक्स बो स्टोक्स	27
कंबोज का स्मिथ बो स्टोक्स	00
बुमराह का स्मिथ बो आर्चर	04
मोहम्मद सिराज नाबाद	05

गेंदबाजी : वोक्स 23-5-66-1, आर्चर 26.1-3-73-3, कार्स 21-1-71-0, स्टोक्स 24-3-72-5, डॉसन 15-1-45-1, रूट 5-0-19-0

इंग्लैंड पहली पारी

225/2 (46 ओवर)

जैक क्रॉली का राहुल बो जडेजा	84
बेन डकेट का बो कंबोज	94
ओली पोप खेल रहे हैं	20
जो रूट खेल रहे हैं	11

गेंदबाजी : बुमराह 13-4-37-0, कम्बोज 10-1-48-1, सिराज 10-0-58-0, शारदुल 5-0-35-0, जडेजा 8-0-37-1

ऋषभ पंत (दाएं) का स्वागत करते मोहम्मद सिराज। एजेंसी

पंत के अंगूठे में फ्रैक्चर, दोबारा बल्लेबाजी के लिए उतरे

मैनचेस्टर, एजेंसी

- **बीसीसीआई ने कहा ऋषभ बल्लेबाज के रूप में उपलब्ध रहेंगे**

ऋषभ पंत इंग्लैंड के खिलाफ चौथे क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन पैर के अंगूठे में फ्रैक्चर के कारण मौजूदा टेस्ट में विकेटकीपर की जिम्मेदारी नहीं निभा पाएंगे, लेकिन बृहस्पतिवार को दूसरे दिन बल्लेबाजी के लिए उतरे जबकि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने भी कहा कि इस अहम मुकाबले में वह टीम की जरूरत के अनुसार वह बल्लेबाज के रूप में उपलब्ध रहेंगे।

पंत बुधवार को इंग्लैंड के तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स की गेंद पर रिवर्स स्वीप करने के प्रयास में चोटिल हो गए थे। तब वह 37 रन पर खेल रहे थे। दाहिने पैर में चोट लगने के कारण वह रिटायर्ड हर्ट हो गए और स्कैन के लिए गए। बीसीसीआई ने 'एक्स' पर लिखा मैनचेस्टर टेस्ट के पहले दिन दाहिने पैर में चोट लगने के बाद ऋषभ पंत बाकी मैच में विकेटकीपिंग नहीं कर पाएंगे। ध्रुव जुरेल विकेटकीपर की भूमिका निभाएंगे।

चोट के बावजूद ऋषभ पंत दूसरे दिन टीम से जुड़ गए हैं और टीम की जरूरत के अनुसार बल्लेबाजी के लिए उपलब्ध रहेंगे। इससे पहले बोर्ड से शुरुआत में संकेत मिले थे कि पंत शृंखला से बाहर हो गए हैं और उनके कवर के तौर पर इशान किशन को बुलाया जाएगा। भारत ने 314 रन के स्कोर पर शारदुल ठाकुर के रूप में अपना छठा विकेट गंवाया जिसके बाद पंत बल्लेबाजी के लिए उतरे। इस 27 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने आक्रामक अंदाज के कारण विश्व क्रिकेट में खास जगह बनाई है। उन्होंने इस शृंखला में भी अच्छा प्रदर्शन किया है।

महिला यूरो 2025 सेमीफाइनल फुटबॉल मैच में जीत के बाद जश्न मनातीं स्पेन के खिलाड़ी। एजेंसी

स्पेन पहली बार यूरो फाइनल में

ज्यूरिख, एजेंसी

- **बीमारी से लौटी ऐताना बोनमाटी के गोल से मिली सफलता**

टूर्नामेंट शुरू होने से पहले बीमार होने के कारण कुछ दिन अस्पताल में बिताने वाली ऐताना बोनमाटी के अतिरिक्त समय में किए गए गोल की मदद से स्पेन ने जर्मनी को 1-0 से हराकर महिला यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2025) के फाइनल में प्रवेश किया जहां रविवार को उसका सामना इंग्लैंड से होगा।

दोनों टीम निर्धारित समय में गोल नहीं कर पाई थी इसके बाद दो बार की बैलन डी'ओर विजेता बोनमाटी ने अतिरिक्त समय में 113वें मिनट में निर्णायक गोल किया। यूरो 2025 का फाइनल 2023 में खेले गए महिला विश्व कप के फाइनल की पुनरावृत्ति होगा। तब स्पेन ने इंग्लैंड को 2-1 से हराया था। स्पेन की जर्मनी के खिलाफ यह पहली जीत थी। वह पहली बार यूरोपीय चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचा है। स्पेन ने पिछले दो साल में विश्व कप और नेशंस कप जीते हैं और अब उसकी निगाह खिताब की हैट्रिक पूरी करने पर होगी। यूरो 2025 के लिए बोनमाटी की तैयारियां उस समय गंभीर रूप से प्रभावित हो गई थी जब टूर्नामेंट से एक सप्ताह से भी कम समय पहले बार्सिलोना की मिडफील्डर को वायरल मैनिंजाइटिस के कारण अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था। बोनमाटी ने कहा मैं अपने सर्वश्रेष्ठ स्तर पर पहुंचना चाहती थी।

बीसीसीआई एशिया कप की मेजबानी के लिए तैयार

नई दिल्ली/ढाका : भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता सितंबर में संक्षिप्त रूप से फिर से शुरू होगी क्योंकि बीसीसीआई के लिए संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में आगामी एशिया कप टी 20 टूर्नामेंट की मेजबानी करने का रास्ता साफ हो गया है।

एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। एसीसी की बैठक के बाद यह फैसला हुआ जिसमें सभी 25 सदस्य देशों ने आयोजन स्थल पर चर्चा के लिए हिस्सा लिया। बीसीसीआई का प्रतिनिधित्व इसके उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने वर्चुअली किया। एसीसी के एक सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई को बताया बीसीसीआई यूएई में एशिया कप की मेजबानी करेगा। भारत के अपने सभी मैच दुबई में खेलने की संभावना है। कार्यक्रम पर अब भी विचार-विमर्श चल रहा है। यह टूर्नामेंट यूएई में आयोजित किया जा रहा है।

भारतीय बल्लेबाजों ने दिखाया कि वे केवल सपाट पिचों पर ही रन नहीं बनाते

मैनचेस्टर, एजेंसी

पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर का मानना है कि भारत के युवा बल्लेबाजों ने इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टेस्ट क्रिकेट मैच के पहले दिन विषम परिस्थितियों में शानदार प्रदर्शन करते साबित कर दिया कि वे केवल सपाट पिचों या कमजोर आक्रमण के खिलाफ ही रन नहीं बनाते। सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (58) और केएल राहुल (46) ने भारत को ठोस शुरुआत दी।

इसके बाद साई सुदर्शन (61) और ऋषभ पंत (37 रन पर रिटायर्ड हर्ट) ने 72 रन की साझेदारी की जिससे भारतीय टीम पहले दिन का खेल समाप्त होने तक चार विकेट पर 264 रन बनाने में सफल रही। मांजरेकर ने जियो हॉटस्टार पर कहा आज का दिन उन लोगों के लिए करारा जवाब था जो यह मानते हैं कि यह युवा भारतीय बल्लेबाजी क्रम केवल सपाट पिचों पर या कमजोर आक्रमण के खिलाफ ही रन बनाता है। उन्होंने कहा इंग्लैंड में अमूमन इस तरह की परिस्थितियां मिलती है और उनका गेंदबाजी आक्रमण भी पहले से मजबूत नजर आ रहा था। बेन स्टोक्स ने फिर से अधिक ओवर किए जबकि लियाम डॉसन ने शोएब बशीर से बेहतर गेंदबाजी की। जोफ्रा आर्चर उसकी गेंदबाजी को और मजबूती प्रदान कर रहे थे। मांजरेकर ने कहाभारत का इन परिस्थितियों में पहले दिन चार विकेट पर 264 रन बनाना उसका एक और ठोस बल्लेबाज़ी प्रदर्शन है।

संजय मांजरेकर। एजेंसी

कुंबले की तरह याद किया जाएगा पंत को

मैनचेस्टर : ऋषभ पंत का पैर में फ्रैक्चर के साथ बल्लेबाजी के लिए उतरना 2002 में अनिल कुंबले का टूटे जबड़े के साथ गेंदबाजी करते हुए ब्रायन लारा को आउट करने की तरह याद रखा जाएगा जो भारतीय उप-कप्तान की टीम के प्रति प्रतिबद्धता और बहादुरी का प्रमाण है। मांजरेकर ने कहा, जब आप इस तरह की चीजें करते हैं जैसे अनिल कुंबले का जबड़े पर पट्टी बांधकर गेंदबाजी करना तो ये इतिहास के वो पल होते हैं जिन्हें आप 50 साल बाद भी याद रखेंगे। यह दर्शाता है कि वह भारत के लिए खेलने को कितने प्रतिबद्ध हैं। टेस्ट क्रिकेट में कुछ खास बात होती है, खासकर जब यह इंग्लैंड में खेला जा रहा हो। एक क्रिकेटर के तौर पर आपके ऊपर कितना ध्यान होता है।

उन्नति ने बड़ा उलटफेर करते हुए सिंधु को हराया

चांग्झू (चीन), एजेंसी

उन्नति हुड्डा। एजेंसी

उन्नति हुड्डा ने अपने करियर का सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए दो बार की ओलंपिक पदक विजेता और भारतीय बैडमिंटन की दिग्गज खिलाड़ी पीवी सिंधु को तीन गेम तक चले रोमांचक मुकाबले में हराकर गुरुवार को चाइना ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। अपनी प्रतिष्ठित हमवतन खिलाड़ी का केवल दूसरी बार सामना करते हुए 17 वर्षीय हुड्डा ने कठिन क्षणों में धैर्य बनाए रखा और 73 मिनट में 21-16, 19-21, 21-13 से जीत दर्ज की। वह पहली बार किसी सुपर 1000 प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल में पहुंची है।

रोहतक की इस किशोरी ने 2022 ओडिशा मास्टर्स और 2023 अबू धाबी मास्टर्स में सुपर 100 खिताब जीते थे। वह अगले दौर में जापान की तीसरी वरीयता प्राप्त और दो बार की विश्व चैंपियन अकाने यामागुची से भिड़ेगी। सिंधु सात साल में पहली बार किसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में किसी साथी भारतीय से हारी हैं। पिछली बार उन्हें 2018 राष्ट्रमंडल खेलों के फाइनल में साइना नेहवाल से हार का सामना करना पड़ा था। वह 2019 राष्ट्रीय चैंपियनशिप के फाइनल में भी साइना से ही हार गई थी। इससे पहले सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने इंडोनेशिया के लियो रोली कार्नांडो और बगास मौलाना को सीधे गेम में हराकर पुरुष युगल के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

वैष्णवी ने विश्व विश्वविद्यालय खेलों में पदक जीता

बर्लिन (जर्मनी) : वैष्णवी अडकर विश्व विश्वविद्यालय खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला टेनिस खिलाड़ी बन गई हैं। उन्होंने बृहस्पतिवार को यहां एकल स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। तीरंदाजों ने दमदार प्रदर्शन जारी रखते हुए कंपाउंड पुरुष और मिश्रित टीम स्पर्धा के स्वर्ण पदक दौर में प्रवेश किया। कई ट्रैक एवं फील्ड एथलीट भी फाइनल में पहुंच गए। वैष्णवी को सेमीफाइनल में स्लोवाकिया की एस्टर मेरी के खिलाफ 6-2, 4-6, 4-6 से हार के साथ कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। विश्व विश्वविद्यालय खेलों के मौजूदा सत्र में यह देश का अब तक का दूसरा पदक है।

टेनिस प्रतियोगिता में सेमीफाइनल में हारने वाले दोनों खिलाड़ियों को कांस्य पदक दिया जाता है। बीस वर्षीय वैष्णवी विश्व विश्वविद्यालय खेलों में पदक जीतने वाली केवल दूसरी भारतीय टेनिस खिलाड़ी बनीं।

प्रशंसा भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने टी-20 व वनडे दोनों सीरीज जीतकर किया है कमाल

इंग्लैंड में जीत से भारत का आत्मविश्वास बढ़ेगा : सचिन

नई दिल्ली, एजेंसी

दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का मानना है कि इंग्लैंड की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भारत की दो शृंखलाओं में जीत से इस साल होने वाले वनडे विश्व कप और अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप से पहले महिला टीम का आत्मविश्वास काफी बढ़ेगा। हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली टीम ने टी20 शृंखला 3-2 से जीत कर नया इतिहास रचा।

यह पहला अवसर था जबकि भारतीय महिला टीम ने खेल के सबसे छोटे प्रारूप में इंग्लैंड से शृंखला जीती। भारत ने इसके बाद वनडे शृंखला 2-1 से अपने नाम की। यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत 30 सितंबर से श्रीलंका के साथ एकदिवसीय विश्व कप की सह-मेजबानी करेगा। इसके बाद इंग्लैंड में 2026 में टी-20 विश्व कप का आयोजन होगा। तेंदुलकर ने रेडिट पर कहा इंग्लैंड में जीतना हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है और टी-20 तथा वनडे दोनों में ऐसा करना टीम की तैयारी और मानसिकता के बारे में बहुत कुछ बयां करता है।

उन्होंने कहा इस शानदार प्रदर्शन से टीम का आगे होने वाली प्रतियोगिताओं के लिए आत्मविश्वास बढ़ेगा। दो विश्व कप सामने होने के कारण यह टीम के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी था। शाबाश टीम इंडिया। भारत अब 14 सितंबर से शुरू हो रही तीन मैचों की वनडे शृंखला में विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी करेगा और इसके बाद अपनी धरती पर होने वाले विश्व कप में भाग लेगा।

इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज जीतने के बाद जश्न मनाती महिला टीम। एजेंसी

सभी खिलाड़ियों ने धैर्य से काम लिया

तेंदुलकर ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ सभी खिलाड़ियों ने धैर्य से काम लिया और अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। उपकप्तान स्मृति मंधाना ने पहले मैच में अपना पहला टी-20 शतक बनाया, जबकि कप्तान हरमनप्रीत ने तीसरे वनडे में शतक लगाकर भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई। इसके अलावा 21 वर्षीय क्रांति गौड़ ने तीसरे वनडे में छह विकेट लिए। यह उपलब्धि हासिल करने वाली सबसे कम उम्र की भारतीय तेज गेंदबाज और कुल मिलाकर पांचवीं गेंदबाज बन गई। तेंदुलकर ने कहा पहले टी20 मैच में स्मृति के शतक ने दौरे की शुरुआत में ही लय बना दी थी। आखिरी वनडे में हरमनप्रीत के शतक ने उस लय को और मजबूती प्रदान की। अन्य ने भी अपनी भूमिका बखूबी निभाई।